Fortnightly per copy Rs. 5/- only

18th July 2016

ओ३म्

आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Date of Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month

आतंकवाद को सखती से निपटा जाना चाहिए

फ्रांस में घटी बर्बरता पूर्ण घटना का विश्व के सारे देश मिलकर खण्डन करें

ट्रक के द्वारा सैकड़ों लोगों को कुचलना आतंकवाद का नया पैंतरा

सारे मुसलमान आतंकवादि हैं या नहीं यह चर्चा का विषय हो सकता है और यह सामान्य सी बात है कि इतिहास के किसी भी काल में लाखों-करोड़ों लोगों को हांक कर लेजाने वाले लोग कुछ ही रहे हैं चाहे वह राजाओं-बादशाओं का काल रहा हो या आधुनिक प्रजातन्त्र का । राजनीतिक नेताओं का यह सारा खेल पूरी जन संख्या का, पक्ष विपक्ष सभी को मिलाकर एक-दो प्रतिशत लोगों का होता है अतः सारे मुसलमान आतंकवादी न हो पर उस समुदाय के कतिपय लोग ही सारे समुदाय को हांक कर ले जाना चाहते है । इतिहास में ऐसे ही उदाहारण मिलते है अतः बचपन में जो सीख दी जाती है उसकी ही छाप मन और मस्तिष्क पर बनी रहती है । अनुकूल विचार और वातावरण मिलने पर वह फलता-फूलता है तथा आतंकवाद के रूप में परिणित होता है अतः वर्तमान में घट रही घटनाओं के लिए इस्लामिक देशों को जिम्मेवारी लेते हुए बहुत ही सख्ती के साथ निपटना चाहिए । वरना विश्व के अन्य देशों को एकजुट होकर आतंकवाद के खिलाफ लड़ने की पूरी तय्यारी करनी चाहिए अगर यही नहीं होता है तो दुनिया विश्व युद्ध के कगार पर पहुँचेगी । अन्य समुदायों से विनम्र निवेदन है कि वे संयम बरतें और ऐसा प्रयत्न करें कि विश्व की प्रमुख सरकारों में बैठे लोग आतंकवाद से लडने के लिए एक जुटता की ओर बढें ।

Arya Jeevan

तय हो वैश्विक आतंकवाद की परिभाषा

विडंबना
प्रभात कुमार रॉय

यूनाइटेड नेशंस जनरल एसेम्बली ने 30 जून और 01 जुलाई 2016 को अपनी एक विशेष बैठक में वैश्विक आतंकवाद के विकट प्रश्न पर विस्तृत समीक्षा अंजाम दी है, ताकि इस वैश्विक प्रश्न पर किसी प्रभावी, व्यापक और कारगर रणनीति का निर्माण किया जा सके। यूं तो दुनिया के पटल पर विगत अनेक दशक से वैश्विक आतंकवाद अपना नृशंस खूनी कहर बरपाता रहा है, किन्तु 11 सितंबर 2001 को जब अमेरिका के विश्व व्यापार केंद्र पर वैश्विक आतंकवाद द्वारा बर्बर आक्रमण अंजाम दिया गया, तब इस भयानक वारदात के बाद यूनाइटेड नेशंस (यूएन) जनरल एसेम्बली द्वारा एकजुट होकर वैश्विक आतंकवाद के विकट प्रश्न पर कार्यवाही अंजाम देने और इससे अत्यंत गंभीरतापूर्वक निपटने के लिए यूएन सिक्योरिटी काउंसिल से कहा गया गया। सिक्योरिटी काउंसिल द्वारा यूएन रिसोल्यूशन 1373 पारित किया गया और यूएन सिक्योरिटी काउंसिल द्वारा वैश्विक आतंकवाद से लोहा लेने के लिए अपने तहत एक आतंकवाद विरोधी कमेटी का गठन किया गया। वर्ष 2004 में यूएन सिक्योरिटी काउंसिल द्वारा यूएन रिसोल्यूशन 1540 पारित किया गया। यूएन रिसोल्यूशन 1540 के तहत यूएन के सभी सदस्य राष्ट्रों को सख्त ताकीद की गई कि वे आतंकवादी गतिविधियों में लिप्त किसी भी गिरोह को जनसंहार के अस्त्र-शस्त्रों को कदाचित उपलब्ध नहीं कराएंगे। कथित तौर पर वर्ष 2005 में आतंकवाद विरोधी कमेटी ने वैश्विक आतंकवाद से निपटने के लिए रणनीति का निर्माण प्रारंभ किया गया। वर्ष 2016 में भी यूएन रणनीति यूएन जनरल एसेम्बली द्वारा 2005 में ही यूएन महासचिव को वैश्विक आतंकवाद का कड़ा मुकाबला करने के एक सशक्त टास्क फोर्स का निर्माण करने के लिए अधिकार भी प्रदान किया गया। सबसे दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति तो यह कि यूएन अभी तक वैश्विक आतंकवाद को परिभाषित नहीं कर सकी है। वैश्विक आतंकवाद क्या है और इसकी परिभाषा क्या है? यूएन जनरल एसेम्बली के तहत दीर्घकाल से इसी जटिल सवाल पर बाकायदा बहस जारी रहा है। अनेक राष्ट्र हैं और जिनमें कि अरब राष्ट्र प्रमुखता के साथ एकजुट रहे हैं कि विदेशी आधिपत्य के विरुद्ध जारी आजादी के संग्राम में अंजाम दी जाने वाली हिंसक वारदातों को आतंकवाद की श्रेणी में कदापि शुमार नहीं किया जाना चाहिए। सर्वविदित है कि फिलीस्तीन के प्रश्न पर प्रायः सभी अरब राष्ट्र आक्रमक रहे हैं। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी यूएन जनरल एसेम्बली को संबोधित करते हुए इस तथ्य पर गहरा अफसोस जाहिर किया था कि यूएन अभी तक वैश्विक आतंकवाद को परिभाषित भी नहीं कर सका है। यूएन जब वैश्विक आतंकवाद की परिभाषा पर अभी तक एकमत नहीं हो सका तो फिर पूर्णतः एकजुट होकर उसके विरुद्ध रणनीतिक कार्यवाही कैसे अंजाम दे पाता। वस्तुतः वैश्विक आतंकवाद से निपटने के प्रश्न पर यूएन की समस्त चिंता और कशीदगी एक पाखंड बनकर रह गई है। न तो यूएन के नेतृत्व में किसी सशस्त्र टॉस्क फोर्स का निर्माण किया जा सका है, जैसा कि यूएन द्वारा 2005 में यूएन महासचिव को अधिकार प्रदान किया गया था और न ही वैश्विक आतंकवाद के विरुद्ध यूएन का कोई प्रभावशाली किरदार व्यवहारिक रूप में प्रकट हो पाया है। सिक्योरटी काउंसिल द्वारा वैश्विक आतंकवाद के विरुद्ध पारित किए गए यूएन रिसोल्यूशन्स को ही यूएन की सबसे बड़ी उपलब्धि समझा जा सकता है। वस्तुतः दुनिया के मुखतलिफ राष्ट्र अपने हितों के मुताबिक वैश्विक आतंकवाद को पारिभाषित करते रहे हैं और उसके विषय में रणनीति निर्धारण करते रहे हैं। पाक को वैश्विक आतंकवाद का सृजन करने वाली विराट फैक्टरी करार दिया जाता है। पाक की सरजमीं पर अल-कायदा और तालिबान सरीखी दहशतगर्द तंजीमों की बुनियाद रखी गई और इनकी परवरिश अंजाम दी गई। समूचा विश्व इस कटु तथ्य से बखूबी परिचित रहा है कि वैश्विक आतंकवाद को सबसे अधिक पेट्रो डॉलर मुहैया कराने वाले राष्ट्र सऊदी अरब को अमेरिका की किस कदर कूटनीतिक हिमायत हासिल रही है। पाकिस्तान वैश्विक आतंकवाद को अनोखे अंदाज में गुड और बैड आतंकवाद की श्रेणियों में तकसीम करके पारिभाषित करता रहा है। जिस श्रेणी का वैश्विक आतंकवाद पाकिस्तान के कथित दुश्मन भारत को अपना नृशंस निशाना बनाता रहा है वह तो पाक के लिए गुड आतंकवाद रहा है और जिस किस्म का आतंकवाद पाक को बर्बर निशाना बनाता रहा वो बैड आतंकवाद रहा है। पाक ही नहीं वरन विश्व के अनेक ताकतवर राष्ट्र पाक की तर्ज पर ही अपने हितों के अनुसार वैश्विक आतंकवाद को पारिभाषित करते रहे हैं। यदि ऐसा नहीं होता तो दुनिया के पटल पर आईएसआईस को कदापि जन्म नहीं दिया जाता। सीरिया के तानाशाह असद को खत्म करने के लिए उन्हीं वैश्विक शक्तियों ने आईएसआईस को ताकतवर बनाया और आधुनिकतम हथियारों से लैस किया था, जिन्होंने अल कायदा को अपने संकीर्ण हितों के लिए उत्पन्न किया था और उसको भस्मासुरी राक्षसी शक्तियां भी प्रदान की थी। जब भस्मासुर अल-कायदा अपने रचियता को ही नष्ट करने पर आमादा हो गया और अमेरिकी सरजमीं पर 9/11 घटित हो गया तो उसकी आंखें खुल तो गई, किन्तु दुर्भाग्यवश अल-कायदा वाली वही ऐतिहासिक गलती इराक में आईएसआईस के तौर पर फिर दोहरा दी गई। प्रख्यात इतिहासकार अरनॉल्ड टॉयनबी ने कहा कि जो इतिहास से गंभीर सबक हासिल नहीं किया करते हैं, इतिहास उनको नष्ट कर सकता है।

> वर्ष 2005 में आतंकवाद विरोधी कमेटी ने वैश्विक आतंकवाद से निपटने के लिए रणनीति का निर्माण प्रारंभ किया गया। दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है कि यूएन अभी तक इसे परिभाषित नहीं कर सकी है।

पाक का अंधसमर्थन करता हुआ चीन, जो स्वयं वैश्विक आतंकवाद का बर्बर निशाना रहा है, अपने हितों के अनुरूप ही जैश-ए-मौहम्मद के सरगना मौलाना मसूद अजहर को वैश्विक आतंकवादी घोषित करने वाले भारतीय प्रस्ताव को नकार देता है, क्योंकि चीन को उसकी तंजीम से कोई आतंकी खतरा नहीं है, अतः चीन की नजरों में मौलाना कश्मीर में जारी जंग-ए-आजादी का जनरल रहा है। वैश्विक आतंकवाद पर दोहरा दृष्टिकोण केवल पाक का ही नहीं रहा है, वरन उन शक्तिशाली राष्ट्रों का रहा है जिनका यूएन में वर्चस्व कायम है इसी यूएन वैश्विक आतंकवाद को परिभाषित करने में नाकाम रहा है।

Date: 18-07-2016

पर्यावरण - वेद की दृष्टि में

-आचार्य रामनाथ वेदालङ्कार, विद्यामार्तण्ड

वेदों का सन्देश है कि मानव शुद्ध वायु में श्वास ले, शुद्ध जल का पान करे, शुद्ध अन्न का भोजन करे, शुद्ध मिट्टी में खेले-कूदे, शुद्ध भूमि में खेती करे । ऐसा होनेपर ही उसे वेद-प्रतिपादित सौ वर्ष या सौ से भी अधिक वर्ष की आयु प्राप्त हो सकती है । परन्तु आज न केवल हमारे देश में, अपितु, विदेशों में भी प्रदूषण इतना बढ़ गया है कि मनुष्य को न शुद्ध वायु सुलभ है, न शुद्ध जल सुलभ है । कल-कारखानों से निकले अपद्रव्य, धुआँ, गैस, कूड़ा-कचरा, वन-विनाश आदि इस प्रदूषण के कारण हैं । प्रदूषण इस स्थिति तक पहुँच गया है कि कई स्थानों पर तेजाबी वर्षा तक हो रही है । उत्तरपूर्वी अमेरिका, उत्तरी यूरोप और कनाडा में तेजाबी वर्षा संहारक रूप ले चुकी है । वहाँ नदी-तालाबों के जीव-जन्तु तथा भूमि की वनस्पतियाँ इस वर्षा से विनष्ट हो रहे हैं, बड़े-बड़े भवन विकृत हो रहे हैं तथा पीने का पानी प्रदूषित हो रहा है । १८ जुलाई १९८३ के दिन भारत में भी बम्बई में तेजाबयुक्त वर्षा हो चुकी है । यदि प्रदूषण निरन्तर बढ़ता गया तो वह दिन दूर नहीं जब यह भूमि मानव तथा अन्य प्राणियों के निवास योग्य नहीं रह जाएगी ।

पर्यावरण-प्रदूषण की चिन्ताजनक स्थिति को देखकर ५ जून १९७२ को बारह राष्ट्रों की एक बैठक इस विषय पर विचार करने के लिए स्टाकहोम (स्वीडन) में आयोजित हुई थी, जिसके फलस्वरूप विभिन्न राष्ट्रों द्वारा पर्यावरण-सुरक्षा हेतु प्रभावशाली कदम उठाये गये । उक्त गोष्ठी में भारत की तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने भी 'पर्यावरण की बिगड़ती स्थिति एवं उसका विश्व के भविष्य पर प्रभाव' विषय पर भाषण दिया था । उसके पश्चात् भारत में पर्यावरण प्रदूषण का अध्ययन करने, उसे रोकने के उपाय सुझाने एवं उनके क्रियान्वयन करने हेतु अनेक सरकारी, अर्ध-सरकारी तथा व्यक्तिगत या जनता की ओर से सामूहिक प्रयास होते रहे हैं तथा आज भी अनेक संस्थाएँ इस दिशा में कार्यरत हैं। जहां सरकार ने पर्यावरण-अधिनियम की घोषणा की है तथा सरकार के पर्यावरण-विभाग द्वारा पर्यावरण-शोध हेतु अनेक पुरस्कार दिये जा रहे हैं, वहाँ जनता द्वारा चिपको-आन्दोलन-जैसे आन्दोलनों का भी सूत्रपात हुआ है । प्रस्तुत लघु लेख में हम यह दर्शाना चाहते हैं कि वेद का पर्यावरण के विषय में क्या विचार है ।

वायु

स्वच्छ वायुमण्डल का महत्त्व

स्वच्छ वायु का सेवन ही प्राणियों के लिए हितकर है यह बात वेद के निम्न मन्त्रों से प्रकट होती है-

बात आ वातु भेषजं शम्भु मयोभु नो हृदे।
प्र ण आयूंषि तारिषत् ।। -ऋ० १०.१८६.१

अर्थात् वायु हमें ऐसा औषध प्रदान करे, जो हमारे हृदय के लिए शान्तिकर एवं आरोग्यकर हो, वायु हमारे आयु के दिनों को बढ़ाए ।

यददो वात ते गृहे ऽमृतस्य निधिर्हितः ।
ततो नो देहि जीवसे ।। -ऋ० १०.१८६.३

अर्थात् हे वायु जो तेरे घर में अमृत की निधि रखी हुई है, उसमें से कुछ अंश हमें भी प्रदान कर, जिससे हम दीर्घजीवी हों ।

यह वायु के अन्दर विद्यमान अमृत की निधि ओषजन या प्राणवायु है, जो हमें प्राण देती है तथा शारीरिक मलों को विनष्ट करती है । उक्त मन्त्रों से यह भी सूचित होता है कि प्रदूषित वायु में श्वास लेने से मनुष्य अल्पजीवी तथा स्वच्छ वायु में श्वास लेने से दीर्घजीवी होता है । स्वच्छ वायु में कार्बन-द्विओषिद की मात्रा कम तथा ओषजन की मात्रा अधिक होती है । उसमें श्वास लेने से हमें कैसे लाभ पहुँचता है, इसका वर्णन वेद के निम्नलिखित मन्त्रों में किया गया है-

द्वाविमौ वातौ वात आ सिन्धोरा परावतः ।
दक्षं ते अन्य आ वातु परान्यो वातु यद् रपः।।
आ वात वाहि भेषजं वि वात वाहि यद् रपः।
त्वं हि विश्वभेषजो देवानां दूत ईयसे ।।

-ऋ० १०.१३७.२,३ अथर्व० ४.१३.२.३

"ये श्वास-निःश्वासरूप दो वायुएँ चलती हैं, एक बाहर से फेफड़ों के रक्त-समुद्र तक और दूसरी फेफड़ों से बाहर के वायु-मण्डल तक । इनमें से पहली, हे मनुष्य, तुझे बल प्राप्त कराये और दूसरी रक्त में जो दोष है, उसे अपने साथ बाहर ले जाए । हे शुद्ध वायु, तू अपने साथ औषध को ला । हे वायु, शरीर में जो मल है, उसे तू बाहर निकाल । तू सब रोगों की दवा है, तू देवों का दूत होकर विचरता है ।"

हमारा हृदय शरीर के अशुद्ध रक्त को शुद्ध होने के लिए फेफड़ों की सूक्ष्म रक्त-नलिकाओं में पहुँचा देता है । जब हम स्वच्छ वायु में श्वास लेते हैं, तब वह स्वच्छ वायु फेफड़ों में पहुंच कर सूक्ष्म रक्त-नलिकाओं में विद्यमान अशुद्ध रक्त से संपृक्त होकर अपने ओषजन के द्वारा अशुद्ध रक्त को शुद्ध करके बाहर निकलने वाले निःश्वास के साथ रक्त के मल को बाहर निकाल देती है, परन्तु यदि हम प्रदूषित वायु में श्वास लें तो यह प्रक्रिया नहीं हो पाती ।

वनस्पतियों द्वारा वायु-शोधन

कार्बन-द्विओषिद की मात्रा आवश्यकता से अधिक बढ़ने पर वायु प्रदूषित हो जाता है । वैज्ञानिक लोग बताते हैं कि प्राणी ओषजन ग्रहण करते हैं तथा कार्बन-द्विओषिद छोड़ते हैं, किन्तु वनस्पतियाँ कार्बन द्विओषिद ग्रहण करती हैं तथा ओषजन छोड़ती हैं । वनस्पतियों द्वारा ओषजन छोड़ने की यह प्रक्रिया प्रायः दिन में ही होती है, रात्रि में वे भी ओषजन ग्रहण करती तथा कार्बन-द्विओषिद छोड़ती हैं । पर कुछ वनस्पतियाँ ऐसी भी हैं जो रात्रि में भी ओषजन ही छोड़ती हैं । कार्बन-द्विओषिद को चूसने के कारण वनस्पतियाँ वायु-शोधन का कार्य करती हैं । इसलिए वायु-प्रदूषण से बचाव के लिए सबसे कारगर उपाय वनस्पति-आरोपण है । वेद कहता है कि वन में नवस्पतियाँ उगाओ - **वनस्पतिं वन आस्थापयध्वम्** ऋ० १०.१०१.११ । यदि वनस्पति को काटना भी पड़े तो ऐसे काटें कि उसमें सैकड़ों स्थानों पर फिर अंकुर फूट आएँ । वेद का कथन है कि हे वनस्पति, इस तेज कुल्हाड़े ने महान् उपयोग करके हम सहस्त्रांकुर होते हुए वृद्धि को प्राप्त करें -

अयं हि त्वा स्वधितिस्तेतिजानः प्रणिनाय महते सौभगाय । अतस्त्वं देव वनस्पते शतवल्शो विरोह, सहस्त्रवल्शा वि वयं रुहेम । -यजु० ५.४३

'वनस्पति हमारे लिए मधुमान् हो, सूर्य

हमारे लिए मधुमान् हो, भूमियाँ हमारे लिए मधुमती हों' यह कहता हुआ वेद सूचित करता है कि सूर्य और भूमि से वनस्पतियों में मधु उत्पन्न होता है, जिससे वे हमारे लिए लाभदायक होती हैं-

मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः ।
माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥ यजु० १३.२९

प्रारम्भ में वनस्पति शब्द वृक्ष-सामान्य का ही वाचक था । बाद में वृक्ष, ओषधि, वनस्पति, वानस्पत्य इन सब में अन्तर किया जाने लगा । वृक्ष सभी पेड़ों का वाची रहा, ओषधि उन्हें कहा गया जिनकी आयु फल पकने तक की ही होती है, फल पकने पर वे सूख जाती हैं । वनस्पति वे कहलाये जिनमें बिना फूल के फल आ जाता है, जैसे बड़, पीपल आदि । वानस्पत्य नाम उन्हें दिया गया, जिनमें फूल आकर फल लगता है ।[1] उत्तरकाल में कर्मकाण्ड में वनस्पति शब्द से यूप या यज्ञस्तम्भ अर्थ ग्रहण किया जाने लगा । वैदिक आप्री नामक देवताओं में 'वनस्पति' भी पठित है, जिसके विषय में यास्कीय निरुक्त में लिखा है कि इसका अर्थ कात्थक्य नामक आचार्य यूप (यज्ञ-स्तम्भ) करते हैं, किन्तु आचार्य शाकपूणि इससे अग्नि का ग्रहण करते हैं ।[2]

फूलों-फलों से लदी हुई ओषधियाँ नित्य भूमि पर लहलहाती रहें, ऐसा वर्णन भी वेद में मिलता है-**ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः** (ऋ० १०.९७.३) । वेद यह भी कहता है कि ओषधियों का मूल, मध्य, अग्र, पत्ते, फूल सभी कुछ मधुमय हों-**मधुमन्मूलं मधुमदग्रमासां मधुमन्मध्यं वीरुधां बभूव । मधुमत् पर्णं मधुमत् पुष्पमासाम्** अथर्व० ८.७.१२। 'पृथिवी पर जितनी भी सहस्त्रों पत्तों वाली ओषधियाँ हैं, वे सब हमें प्रदूषण-जनित मृत्यु से छुड़ायें' ऐसी प्रार्थना भी वेद में उपलब्ध होती है-

यावतीः कियतीश्चेमाः पृथिव्यामध्योषधीः ।
ता मा सहस्त्रपर्ण्यो मृत्योर्मुञ्चन्त्वंहसः ॥
-अथर्व० ८.७.१३

यहाँ 'सहस्त्रपर्णी' शब्द साभिप्राय है, क्योंकि पत्तों में ही प्रदूषण को हरने की शक्तिविशेष होती है । 'अंहस्' शब्द संस्कृत में बड़े व्यापक अर्थ में आता है, जिसमें किसी भी प्रकार की क्षति समाविष्ट है, चाहे वह भौतिक क्षति हो, चाहे नैतिक ।

वेद मनुष्य को प्रेरित करता है तू जलों की हिंसा मत कर, ओषधियों की हिंसा मत कर-**मापो मौषधीर्हिंसीः** यजु० ६.२२। जलों की हिंसा से अभिप्राय है, उन्हें प्रदूषित करना तथा ओषधियों की हिंसा का तात्पर्य है, उन्हें विनष्ट करना ।

अथर्ववेद के पृथिवी-सूक्त में कहा गया है कि हे भूमि, तेरे वृक्षों को मैं इस तरह काँटू कि शीघ्र ही वे पुनः अंकुरित हो जाएँ, सम्पूर्ण रूप से काटकर मैं तेरे मर्मस्थल पर या हृदय पर प्रहार न करे बैठूँ-

यत् ते भूमे विखनामि क्षिप्रं तदपि सेहतु ।
मा ते मर्म विमृग्वरि मा ते हृदयमर्पिपम् ॥
-अथर्व० १२.१.३५

इससे वेद सूचित करता है कि वृक्ष-वनस्पतियों को समूल नष्ट कर देना मानो भूमि के मर्म पर या हृदय पर प्रहार है । साथ ही 'विमृग्वरि' सम्बोधन द्वारा यह सूचना दी गयी है कि भूमि वृक्ष-वनस्पतियों द्वारा वायुमण्डल के शोधन का कार्य करती है ।

वेद में कहा गया है कि तुम पीपल के नीचे बैठो, पलाश (ढाक) के पेड़ों के समीप बस्ती बसाो-**अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता** (ऋ० १०.९७.५, यजु० १२.७९; ३५.४, तै० सं० ४.२.६.२) । इससे सूचित होता है कि पीपल दिन में कार्बन-द्विओषिद लेता है तथा ओषजन छोड़ता है, अतः दिन में उसके नीचे बैठना हितकर है, रात्रि को वह भी कार्बन-द्विओषिद छोड़ता है, इस कारण उसके नीचे या समीप लेटना, शयन करना या बस्ती बसाना उचित नहीं है । यद्यपि दिन में ओषजन सभी वृक्ष छोड़ते हैं, तथापि पीपल में यह गुण विशेष होने से उसका नाम मिलया गया है । किन्तु पलाश (ढाक) का पेड़ दिन-रात हितकर गन्ध ही छोड़ता है, अतः उसके निकट बस्ती बसाना उचित कहा गया है । वैज्ञानिकों को इस पर परीक्षण करना चाहिए, जिससे यह ज्ञात हो सके कि वेदमन्त्र की हमारी उक्त व्याख्या प्रामाणिक है या नहीं ।

अथर्ववेद के एक मन्त्र में ओषधियों के पाँच वर्ग बताये गये हैं-सोम, दर्भ (कुश), भंग, यव और सह तथा यह भी कहा गया है कि ये हमें प्रदूषण (अंहस्) से छुड़ाये ।

पञ्च राज्यानि वीरुधां सोमश्रेष्ठानि ब्रूमः ।
धर्भो भङ्गो यवः सहस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः ॥
-अथर्व० ११.६.१५

इसका भी परीक्षण किया जाना चाहिए कि दर्भ, भङ्ग, यव आदि में अन्य वनस्पतियों की अपेक्षा विशेष प्रदूपण-निवारण की शक्ति है या नहीं ।

वेद घरों के बाहर आने-जाने के रास्तों के दोनों ओर फूलों वाली दूब घास लगाने और मैदान में फव्वारा एवं कमलों से अलंकृत सरोवर बनाने का निर्देश करता है-

आयने ते परायणे दूर्वा रोहतु पुष्पिणीः।
उत्सो वा तत्र जायतां हृदो वा पुण्डरीकवान्॥
-अथर्व० ६.१०६.१

काण्डात् काण्डात् परोहन्ती परुषः परुषस्परि ।
एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च ॥
-यजु० १३.२०

पुष्पिणी दूब घास, फव्वारे एवं कमल-फूलों से न केवल शोभा बढ़ती है, अपितु ये प्रदूषण-निवारण में भी सहायक होते हैं । अन्यत्र भी वेद में घरों के समीप कमल-पुष्पों से अलंकृत छोटे-छोटे सरोवर बनाने का विधान मिलता है- **उप त्वा तिष्ठन्तु पुष्करिणीः समन्ताः** अथर्व० ४.३४.५-७ । फव्वारों का विधान इस हेतु किया गया प्रतीत होता है कि ऊपर उठती तथा चतुर्दिक् फैलती जलधाराओं पर जब सूर्य-किरणें पड़ती हैं, तब उनमें प्रदूषण को हरने की विशेष शक्ति आ जाती है ।

यजुर्वेद में राष्ट्र की ओर से वृक्षों, ओषधियों एवं अरण्यों के रक्षक नियुक्त करने तथा उन रक्षकों को उचित सम्मान देने का निर्देश मिलता है - **बनानां पतये नमः** यजु० १६.१८, **वृक्षाणां पतये नमः, ओषधीनां पतये नमः** यजु० १९.१९, **अरण्यानां पतये नमः** यजु० १६.२० ।

अथर्ववेद के भूमिसूक्त में भूमि को कहा गया है कि तेरे जंगल हमारे लिए सुखदायी हों-**अरण्यं ते पृथिवि स्योनमस्तु** (अथर्व० १२.१.११) । भूमि को ओषधियों की माता **'मातरम् ओषधीनाम्'** अथर्व० १२.१.१७ बताते हुए स्थापना की गयी है कि इसमें वृक्ष और वानस्पत्य स्थिर रूप से रहते हैं-**यस्यां वृक्षा वानस्पत्या धुवास्तिष्ठन्ति विश्वहा** अथर्व० १२.१.२७ ।

ऋग्वेद में एक वनवासिनी जंगल के विषय में कहती है कि यहाँ अञ्जन वृक्ष के फूलों की सुगन्ध व्याप्त रहती है, बिना किसानों के प्रचुर अन्न उपजता है, मृगों की यह माता है । ऐसे जंगल की मैं भूरि-भूरि प्रशंसा करती हूँ -

आञ्जनगन्धिं सुरभिं बह्वन्नामकृषीवलाम् ।
प्राहं मृगाणां मातरमण्यानिमशंसिषम् ॥

-ऋ० १०.१४६.६

यव, धान, गेहूँ, उड़द, मूँग, चना, ज्वार, बाजरा आदि की खेती भी प्रदूषण को दूर करने में सहायक होती है । आज बढ़ती हुई जनसंख्या को निवास देने के लिए खेती की भूमि को भी ग्रामों और नगरों में बदला जा रहा है । इससे भी प्रदूषण बढ़ा है । वेद खेती के लिए प्रेरणा करता हुआ कहता है-

युनक्त सीरा वि युगा तनोत कृते योनौ वपतेह बीजम् ।
विराजः श्नुष्टिः सभरा असन्नो नेदीय इत् सृण्यः पक्वमायवन् ।। -अथर्व० ३.१७.२

अर्थात् हे मनुष्यो, तुम हल जोड़ों, बैलों के कन्धों पर जुए रखो, भूमि जोतकर उसमें बीज बोओ । अन्न की बालियाँ खूब भरी हुई हों, दरातियों से पके अन्न को काटो ।

आज भूमि, जल एवं वायु के प्रदूषण के कारण तथा दूषित खादों के प्रयोग से अन्न भी प्रदूषित उत्पन्न हो रहा है । परन्तु वेद इसके लिए भी सतर्क है कि अन्न दूषित एवं रोगोत्पादक न होकर बलदायक हो-

अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः यजु०११.१३ ।

शुद्ध जलों का महत्त्व

शुद्ध जलों के अन्दर अमृत होता है, औषध का निवास रहता है-**अप्स्वन्तरमृतम् अप्सु भेषजम्** ऋ० १.१३.१९, **अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा** वही, मन्त्र २० । शुद्ध जलों में स्नान एवं उनका पान शरीर के मलों को बाहर निकालता है- **इदमापः प्रवहत यत्किञ्च दुरितं मयि** वही, मन्त्र २२ । शुद्ध जल के सेवन से मनुष्य रसवान् हो जाता है-**आपो अद्यान्वचारिषं रसेन समगस्महि** वही, मन्त्र २३ । अतएव मनुष्य की कामना है कि शुद्ध जल ही हमारे शरीर के लिए क्षरित हों-**शुद्धा न आपस्तन्वे क्षरन्तु** अथर्व० १२.१.३० । शुचि, निर्मल, कान्ति को सींचने वाले, मधुर जलों का ही हम उपयोग करें-**तं वो वयं शुचिमरिप्रमद्य घृतप्रुषं मधुमन्तं वनेम** ऋ० ७.४७.१ । शुद्ध जल आरोग्यदायक होते हैं, शरीर में ऊर्जा उत्पन्न करते हैं, वृद्धि प्रदान करते हैं, कण्ठस्वर को ठीक करते हैं तथा दृष्टि-शक्ति बढ़ाते हैं -

आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन।
महे रणाय चक्षसे ।। -ऋ० १०.९.१

जैसे सन्तान का हित चाहने वाली माताएँ सन्तान को अपना शिवतम रस दूध पिलाती है, वैसे ही शुद्ध जल सेवनकर्ता को अपना शिवतम रस प्रदान करते हैं -

यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः ।
उशतीरिव मातरः ।। वही, मन्त्र २

शुद्ध जलों का पान करके एवं उन्हें अपने चारों ओर बहाकर अर्थात् उनमें डुबकी लगाकर या कटि-स्नान करके हम अपना स्वास्थ्यरूप अभीष्ट प्राप्त कर सकते हैं-

शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये ।
शं योरभिस्त्रवन्तु नः ।। -वही, मन्त्र ४

शुद्ध जल माताओं के तुल्य हमारे शोधक होते हैं । वे अपने अन्दर विद्यमान विद्युत् से हमें पवित्र करते हैं । वे समस्त प्रदूषण को बहा ले जाते हैं । उनसे पवित्र होकर मनुष्य उद्यमी हो जाता है-

आपो असमान् मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु ।
विश्वं हि रिप्रं प्रवहन्ति देवी रुदिदाभ्यः शुचिरापूत एमि ।। -ऋ० १०.१७.१०

शुद्ध जल जीवनदायी हैं, उनके उपयोग से मनुष्य पूर्ण आयु जीवित रह सकता है- **जीवाः स्थ जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम्** अथर्व०१९.६९.१ । शुद्ध जल शिव होते हैं, उनके उपयोग से रोग दूर हो जाते हैं-**ता अपः शिवा अपोऽयक्ष्मंकरणीरपः** अथर्व० १९.२.५ । शुद्ध जलों में ऊर्जा, अमृत, तेज एवं पोषक रस का निवास होता है- **उर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्त्रुतम्** यजु० २.३४ ।

शुद्ध जल पान किये जाने पर पेट के अन्दर पहुँच कर पाचन-क्रिया को तीव्र करते हैं । वे दिव्यगुणयुक्त, अमृतमय, स्वादिष्ठ जल रोग न लाने वाले, रोगों को दूर करने वाले, शरीर के प्रदूषण को दूर करने वाले तथा जीवन-यज्ञ को बढ़ाने वाले होते हैं-

श्वात्राः पीता भवत यूयमापो अस्माकमन्तरुदरे सुशेवाः । ता अस्मभ्यमयक्ष्मा अनमीवा अनागसः स्वदन्तु देवीरमृता ऋतावृधः ।। -यजु० ४.१२

सेवन करने पर शुद्ध जल शरीर को भलीभाँति वहन करते हैं-**देवीरापः शुद्धा वोढ्ढ्वम्** यजु० ६.१३ । शुद्ध जल, मन वाणी, प्राण, चक्षु, श्रोत्र, आत्मा, प्रजा, पशु तथा जनगणों को तृप्ति प्रदान करते हैं -

मनो मे तर्पयत वाचं मे तर्पयत प्राणं मे तर्पयत चक्षुर्मे तर्पयत श्रोत्रं मे तर्पयतात्मानं मे तर्पयत प्रजां मे तर्पयत पशून् मे तर्पयत गणान् मे तर्पयत, गणा मे मा वितृषन् ।। -यजु० ६.३१

शुद्ध जल शरीर के अन्दर जो निन्दनीय रोग तथा मल है, उसे बाहर निकाल देते हैं- **इदमापः प्रवहतावद्यं च मलं च यत्** यजु० ६.१७ । वे ही जल मानव, अन्य प्राणिवर्ग वनस्पति-जगत् के रक्षक हो सकते हैं, जो मधुस्त्रावी, पवित्र एवं पवित्रतादायक हों-

मधुश्चुतः शुचयो याः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु ऋ० ७.४९.३ ।

जलों के प्रकार

वेदों में जल कई प्रकार के वर्णित किये गये हैं और उनके सम्बन्ध में यह कहा गया है कि वे सबके लिए प्रदूषणशामक एवं रोगशामक हों-

शं त आपो हैमवतीः शमु ते सन्तूत्स्याः ।
शं ते सनिष्यदा आपः शमु ते सन्तु वर्ष्याः।।
शं त आपो धन्वन्याः शं ते सन्त्वनूप्याः।
शं ते खनित्रिमा आपः शं याः कुम्भेभिराभृताः।। -अथर्व० १९.२.१-२

इन मन्त्रों में जलों के निम्नलिखित प्रकारों का उल्लेख हुआ है-

१. हिमालय के जल (हैमवतीः आपः)- ये हिमालय पर बर्फरूप में रहते हैं अथवा चट्टानों के बीच में बने कुण्डों में भरे रहते हैं, अथवा पहाड़ी झरनों के रूप में झरते रहते हैं । इनमें पर्वतों के खनिज द्रव्य तथा ओषधियों के रस मिश्रित रहते हैं ।

२. स्त्रोतों के जल (उत्स्याः आपः)-ये पहाड़ी या मैदानी भूमि को फोड़कर चश्मों के रूप में निकलते हैं । इनमें भूमि के अन्दर विद्यमान खनिज पदार्थ मिले रहते हैं । कई चश्मों में गन्धक होता है । गन्धक का एक चश्मा देहरादून के समीप सहस्त्रधारा में है ।

३. सदा बहते रहने वाले जल (सनिष्यदाः आपः)-ये सदा बहते रहने के कारण अधिक प्रदूषित नहीं हो पाते हैं ।

४. वर्षाजल (वर्ष्याः आपः)-वर्षा से मिलने वाले जल शुद्ध तथा ओषधि-वनस्पतियों एवं प्राणियों को जीवन देने वाले होते हैं । अथर्ववेद के प्राणसूक्त (११.४.५) में कहा है कि जब वर्षा के द्वारा प्राण पृथिवी पर बरसता है तब सब प्राणी प्रमुदित होने लगते हैं ।

५. मरुस्थलों के जल (धन्वन्याः आपः)-मरुस्थलों की रेती में अभ्रक, लोहा आदि पाये जाते हैं, उनके सम्पर्क से वहाँ के जलों में भी ये पदार्थ विद्यमान होते हैं। ये जल अपने-अपने शरीर की प्रकृति के अनुसार किसी के लिए लाभकारी और किसी के लिए हानिकारी हो सकते हैं ।

शेष पृष्ठ ८ पर

माँसाहार छोड़ें - शाकाहार अपनाएँ : आखिर क्यों ?

-डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियाण

(७) आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती जी माँसाहार के सम्बन्ध में फैली सभी गर्वोक्त मिथ्या धारणाओं को खण्डित कर देते हैं क्योंकि वे आजीवन शाकाहारी रहे और शक्ति प्रदर्शन द्वारा इसकी श्रेष्ठता सिद्ध करते रहे । जालन्धर में एकबार उन्होंने दो घोड़ों की बग्गी को एक हाथ से पकड़ कर रोक लिया । घोड़ों के पूरा बल लगाने पर भी बग्गी टस से मस नहीं हुई । एकबार एक रहट को हाथ से खींच कर हौज को भर दिया । जब इससे भी उनकी कसरत पूरी नहीं हुई तो कई कोस की दौड़ लगाई । एकबार अनेक कश्मीरी पहलवानों की उस्थिति में उन्होंने अपने व्याख्यान में घोषणा कर दी कि मेरी आयु ५० वर्ष से अधिक है, आप में से कौन शक्तिशाली है जो मेरे इस खड़े हे हाथ को झुका दे । किसी भी पहलवान की हिम्मत इस चुनौती को स्वीकार करने की नहीं हुई । एक बार किसी अन्य अवसर पर कुछ पहलवानों ने उनका शक्ति परीक्षण करना चाहा । उनके विचारों को भांप कर स्वामी जी ने अपनी गीली कौपीन निचोड़ कर उन्हें देते हुए कहा कि इसे निचोड़ कर एक बूँद जल निकाल कर दिखा दो । कोई भी पहलवान पूरा जोर लगा कर उस कौपीन से एक बूँद जल नहीं निकाल सका । तदनन्तर उनसे कौपीन लेकर स्वामी जी ने पुनः उसे निचोड़ कर जल निकाल कर दिखा गया ।

(८) भारत के प्रसिद्ध पहलवान प्रो. राममूर्ति ने जो विशुद्ध शाकाहारी थे योरुप के माँसाहारी पहलवानों को कई बार धूल चटाई । भारत के पहलवान जो माँस खाते हैं वे दूध, घी, बादाम का भी बराबर सेवन करते हैं । दिग्विजयी भारतीय पहलवान गामा ऐसा ही था । किन्तु रुस्तमे जहाँ गामा पहलवान दिल्ली छावनी के निकट बसे नारायण गाँव के पहलवान भगवानदास को नहीं हरा सका जो पूर्णतया शाकाहारी था । उनकी कुश्ती बराबरी पर छूटी थी । गामा महाराज पटियाला के पहलवान थे तो भगवानदास महाराजा कोल्हापुर के । भगवानदास शाकाहारी ही नहीं, सदाचारी, सरल प्रकृति का छह फुटा अत्यन्त सुन्दर, स्वस्थ, सुदृढ़, सुडौल, बलिष्ठ पहलवान था जो आजीवन ब्रह्मचारी रहा । उसके बारे में प्रसिद्ध है कि उसने चूना पीसने वाली पत्थर की चक्की में बैलों की जगह खुद जुट कर अपनी पक्की हवेली के लिए चूना पीसा था । भारत में उसकी जोड़ के दो-चार पहलवान ही थे । हैदराबाद के नवाब मीर उस्मान अली का एक प्रसिद्ध पहलवान था जिसका नाम अली था जो प्रतिदिन दो बकरों का शोरबा लेता था । नवाब ने एक बार अली और भगवानदास के बीच कुश्ती तय कर दी और तैयारी के लिए दो महीने का समय दे दिया । नियत समय पर कुश्ती प्रारम्भ हुई । तब कुश्ती प्वाईंट पर नहीं चित्त करने पर जीती जाती थी । अर्थात् पीठ जमीन पर और छाती आसमान की ओर स्थिर करके कुश्ती जीती जाती थी, दोनों के बीच लगभग ढाई घंटे कुश्ती हुई, अली थकने व हांफने लगा और अंत में बेहोश होकर गिर पड़ा । शाकाहार की जीत हुई।

(९) भगवान दास की बहन के बारे में भी एक दलिचस्प किस्सा आज भी गाँव देहात में प्रचलित है । उसकी बहन को उसकी ससुराल वाले काफी तंग रखते थे, गाली-गलौज तक दे देते थे, पति महोदय उस पर हाथ भी उठा चुके थे लेकिन अपने संयम, सहनशीलता, लज्जा व शर्म के कारण वह कुछ बोलती नहीं थी । जब भगवानदास तक यह बात पहुँची तो बहन का हालचाल पूछने उसकी ससुराल चला गया । दोपहर का भोजन करने के पश्चात् भगवानदास ने खाली थाली मकान के भीतरी स्तम्भ (शहतीर) को उठाकर उसके नीचे दबा दी और सभी घर वालों को चुनौती दे दी कि इस थाली को कोई अकेला या सभी मिल कर शहतीर के नीचे से निकाल कर दिखा दो । जब वे ऐसा नहीं कर सके तो उसने अपनी बहन को बुलाया और उससे शहतीर के नीचे दबी थाली निकालने को कहा । भाई का संकेत मिलते ही बहन ने देखते-देखते शहतीर उठाकर थाली को पैर से ठोकर मार कर निकाल दिया । तब भगवानदास ने बहन की ससुराल वालों से कहा जिसे तुम कायर, कमजोर समझकर घमकाते-मारते हो वह अपनी आई पर आ जाये तो तुम सब पर भारी पड़ेगी । जिस शर्म, हया से वह चुप रहती है उसे समझने की कोशिश करो ।

(१०) शोरम के पंचायती रिकॉर्ड में भी ऐसी अनेक वीरांगनाओं का उल्लेख मिलता है जो निरामिष भोजी अर्थात् शाकाहारी थीं और बाकायदा रणभूमि में उतर कर अपना जौहर दिखाती थीं । वीरांगना भागीरथी देवी के नेतृत्व में अठाइस हजार वीरांगनाओं की एक पंचायती सेना का गठन हुआ था । इसमें २२ हजार विवाहित और ६ हजार अविवाहित वीरांगनाएँ थीं । इस सेना की दस टुकड़ियों की कमान मोहिनी, बडकोर, विशनदेई, सहजो, कृपी, निहालदे, सुन्दर कुमारी, रंजना, चन्दनकौर और नाहरकौर ने संभाली थी । विश्वविजेता सिकन्दर भी एक भारतीय वीरांगना के भाले से घायल होकर अन्ततः मौत का शिकार हुआ था । भागती हुई गाय, भैंस के रस्से पर पाँव रखकर उन्हें रोकने के कारनामे हरियाणा की अनेक महिलाएँ दिखाती रही हैं । ये सभी शाकाहारी रही हैं ।

(११) अंग्रेजों ने शाकाहारी व माँसाहारी पहलवानों को लेकर एक परीक्षण बबीना छावनी में कराया था । उन्होंने ६० पहलवान शाकाहारी और ६० पहलवान माँसाहारी छाँटे । वजन के अनुसार उनकी

जोड़ी मिलाई और तैयारी के लिए एक-दो महीने का समय दिया । निश्चित तिथि पर जब पहलवानों का दंगल हुा तो उन साठ जोड़ों में ५९ कुश्तियाँ शाकाहारी पहलवान जीत गये तथा ६० वीं कुश्ती में वह जोड़ बराबर रही ।

(१२) मा. चन्दगीराम और मेहरदीन के बीच १९६८ व १९६९ में हुई दो प्रसिद्ध कुश्तियाँ भला किसे याद न रहेंगी । मा. चन्दगीराम विशुद्ध शाकाहारी और मेहरदीन माँसाहारी था । मेहरदीन वजन में भी १६० पौंड अधिक था । मा. चन्दगीराम उस भीमकाय पहलवान के आगे बालक से लगते थे अतः किसी को भी उनसे किसी चमत्कार की आशा नहीं थे यद्यपि वह १९६२ व १९६८ में दो बाद हिन्द केसरी विजेता बन चुके थे । जब दंगल शुरू हुआ तो दोनों में ३५ मिनट तक घर संघर्ष हुआ । लेकिन मेहरदीन थक गया और अखाड़े में ही बेहोश होकर गिर पड़ा, स्वयं उठ भी नहीं सका, पहलवान रूपचन्द ने सहारा देकर उसे उठाया । यह पहली कुश्ती का विवरण है जो १९६८ में हुई थी । दूसरी कुश्ती १२ मई, १९६९ को दिल्ली में ही हुई जिसके रैफरी थे विश्वविख्यात पहलवान दारा सिंह । जब दोनों पहलवान अखाड़े में उतरे तो दर्शकों को आशंका थी कि सिंह । जब दोनों पहलवान अखाड़े में उतरे तो दर्शकों को आशंका थी कि पहलवान मेहरदीन पिछले वर्ष की हार का हिसाब चुकता करने के लिए पूरी तैयारी के साथ आया है अतः इस बार चन्दगीराम को पछाड़ कर रहेगा । लेकिन ७ मिनट ४५ सैकण्ड में ही मेहरदीन ने छूट माँग ली. कुश्ती लड़ने से इंकार कर अखाड़े से बाहर आ खड़ा हुआ । वह शरीर, मन, आत्मा सबसे पराजित हो चुका था । माँसाहार पर शाकाहार की यह दूसरी बड़ी जीत थी । मा. चन्दगीराम का मानना था कि शुरु के दस-पन्द्रह मिनट में माँसाहारी पहलवान से अपने को बचा लिया जाये तो कुश्ती जीतने की सम्भावना बढ़ जाती है क्योंकि शुरु में ही वह अपना पूरा दम-खम निकाल कर कुश्ती जीतने का प्रयास करता है । इसके बाद उसका दम जवाब देने लगता है, साँस फूलने लगती है । मा. चन्दगीराम की जीत का एक अन्य कारण था उनकी मजबूत पकड़ और रगड़ जो उनके मजबूत दम के कारण थी । यह मजबूत दम शाकाहार की ही परिणाम था । मेहरदीन यदि माँसाहारी न होता तो इतनी जल्दी कदाचित ही मैदान छोड़ने पर विवश होता ।

(१३)ऐसी ही एक कुश्ती झज्जर में मुस्लिम पहलवान कट्टा कसाई और निस्तौली निवासी ब्र. बदनसिंह के बीच हुई थी । बदन सिंह भी चन्दगीराम की तरह हल्का-फुल्का था और कट्टा-कसाई के पिता ने उसे देखकर कहा था कि इस बालक को मरवाने के लिए क्यों ले आये ? मेरे बेटे के जोड़ का पहलवान शुभराम भदानी वाला है, उसे लेकर आते । शुभराम चूँकि कुश्ती को तैयार नहीं था इसलिए उसके पिता जी ही ब्र. बदनसिंह को लेकर आये थे । कसाई कट्टा शुरु के १०-१५ मिनट खूब उछला-कूदा और बदन सिंह अपना बचाव करता रहा । फिर जैसे ही कट्टा कसाई का दम फूलने लगा ब्र. बदनसिंह ने उस पर अपना शिकंजा कस उसे चारों खाने चित्त दे मारा । कसाई पहलवान के पिता ने खुद ब्र. बदनसिंह को पगड़ी दी, छाती से लगाया और शाबाशी दी । ऐसी सैकड़ों घटनाएँ हैं जो सिद्ध करती हैं कि माँसाहारी की तुलना में शाकाहारी अधिक शक्तिशाली और दमदार होते हैं । जो ताकत दूध, घी, फल, सूखे मेवों और मोटे अनाज में है वह ताकत माँस, मछली, अण्डे में नहीं है । पहलवान सुशील कुमार ने कॉमन वैल्थ और ओलम्पिक गेम्स में अपनी शक्ति का लोहा मनवा कर इसी सत्य को फिर सिद्ध किया है ।

(१४) शाकाहारियों की तुलना में माँसाहारियों को अधिक बुद्धिमान, कुशल, चतुर मानने की अवधारणा में भी कोई दम नहीं है । १९वीं शताब्दी के भारतीय पुनर्जागरण का श्रेय जिन महापुरुषों को दिया जाता है उनमें शीर्षस्थ स्थान स्वामी दयानन्द सरस्वती को प्राप्त है जिन्होंने अपनी तार्किक बुद्धि से सभी सम्प्रदायों के दिग्गजों की बोलती काशी, पुणे आदि में हुए शास्त्रार्थों में बन्द कर दी थी । क्या अध्यात्म, क्या दर्शन, क्या धर्म, क्या संस्कार, क्या शिक्षा, क्या अर्थशास्त्र, प्रशासन और राजनीति सभी विषयों पर उनके मुखर चिन्तन से उन्नीसवीं शताब्दी में एक नई वैचारिक क्रान्ति का उदय हुआ जिसने भारतीय समाज को न केवल आलोड़ित किया बल्कि उसे एक प्रशस्त पथ पर भी ला खड़ा किया । कौन नहीं जानता कि स्वामी दयानन्द सरस्वती पूर्णतः निरामिषभोजी थे, शाकाहारी थे, योगी और ब्रह्मचारी थे । बीसवीं शताब्दी जिस महाधन के कारण अपने को गौरवान्वित महसूस करती है उसका नाम था मोहनदास कर्मचन्द गाँधी, जिसे स्वामी श्रद्धानन्द ने महात्मा की उपाधि से नवाजा था । इसी युग पुरुष के नेतृत्व में स्वाधीनता आन्दोलन लड़ा गया और भारत स्वतन्त्र हुआ यद्यपि जिस प्रकार की स्वतन्त्रता उनकी अनुपस्थिति में मिली उससे वे हताश, दुःखी और उद्वेलित थे और इसके विरुद्ध बगावत का ध्वज बुलन्द करने की तैयारी को पूरी तरह सन्नद्ध थे कि इसी बीच उनकी जघन्य हत्या कर दी गई । महात्मा गाँधी भी आजीवन शाकाहारी रहे । भारत का प्राचीन इतिहास जिन भारतीय महापुरुषों को, विचारकों को, त्तवज्ञानियों को, दार्शनिकों को, योगियों को, ऋषि-महर्षियों को, संतों-महंतों को, साधु-सन्यासियों को श्रद्धा, सम्मान, निष्ठा और गौरव से स्मरण करता है वे सभी के सभी शाकाहारी थे और उनके व्यक्तित्व और कृतित्व का लोहा आज तक माना जाता है, उन्हें अपना आदर्श मानता है । विधिवेत्ता मनु, विदुर, चाणक्य को कोई कैसे भुला सकता है ? सुश्रुत, चरक, धन्वंतरी सरीखे चिकित्सा शासस्त्रियों को भुलाना क्या आसान है ?

(१५) भारत ही नहीं संसार के उच्च कोटि के विचारक, कलाकार, कवि, लेखक, वैज्ञानिक और उच्च मानसिक धरातल के राजाओं ने भी शाकाहारी जीवन को अपना कर आदर्श उपस्थित किया है । इनमें राम, कृष्ण, शंकराचार्य,

बुद्ध, महावीर, नानक, अशोक, मुगल बादशाह हुमायूँ व अकबर, सर आईजक न्यूटन, पर्सी विश्शी शैली, लियो डॉलस्टाय, एलबर्ट स्वाइट्जर, जार्ज बर्नार्ड शा, लीओनारडो डी विन्सी, पाइथागोरस, प्लेटो, प्लोटीनस, एमपेडोक्लस, अपोलो नियस, प्लूटार्क, पोरफीरि, रोमन कवि सैनेका, अर्ल्बट आईन्सटाइन, लिनाडों डार्विसी, डॉक्टर एनी बेसेन्ट, रेवरण्ड डॉ. वाल्टर वाल्श, मिल्टन, पोप शैले, सुकरात, सेंट मेथ्यू, सेंट पाल दुखोबोर और सूफी साध्वी राबिया जैसे सैकड़ों नायक हैं। शाकाहार ने ही उन्हें सहिष्णुता, अहिंसा, परोपकार जैसे मानवीय सद्गुणों से विभूषित किया। ओलम्पिक में विश्व रिकॉर्ड बनाने वाले स्टेनप्राइस, दूर पैदल चलने में विशिष्ट स्थान पाने वाले, स्वीटगौन, लम्बी दौड़ में बीस विश्व रिकॉर्ड बनाने वाले नूरमी, इंग्लिश चैनल नहर को तेजी से पार करने के रिकॉर्ड होल्डर निलपिकिंग, चार सौ मीटर व पन्द्रह सौ मीटर दौड़ में विश्व रिकॉर्ड रखने वाले मुरेरोज, अन्तर्राष्ट्रीय बॉडी-बिल्डिंग चैम्पियन एण्ड्रूज शिलिंग तथा पिरको बर्नोट, कराटे क्षेत्र में आठ राष्ट्रीय कराटे जीतने वाले एबेल, टेनिस के कमलेश मेहता, विश्वविख्यात क्रिकेटर विजय मर्चेन्ट और वीनू मांकड़ ये सभी शाकाहारी रहे हैं। पामेला एंडरसन, बेनजीर भुट्टो, अमिताभ बच्चन और मेनका गाँधी के कार्यक्षेत्र भले ही पृथक रहे हों लेकिन एक मंच पर इन सभी को एक साथ स्मरण किया जाता है और यह मंच है शाकाहार का प्रचार मंच। कारण, ये चारों विभूतियों न केवल खुद शाकाहारी रही हैं बल्कि अपने-अपने ढंग से दुनिया भर में शाकाहार का पुरजोर प्रचार, जब भी उन्हें अवसर मिला, करती रही हैं। सिने एवं टी. वी. अभिनेत्री अर्चना पूर्ण सिंह भी शाकाहारी हैं जिसके मुखमण्डल पर सदैव मुस्कराहट विराजमान रहती है। जर्मनी के तानाशाह एडोल्फ हिटलर का भोजन चखने वाली एक नौकरानी ने अब जाकर रहस्योद्घाटन किया है कि मरने से ढाई वर्ष पहले ही उसने माँसाहार का पूर्णतया त्याग कर दिया था।

पृष्ठ ५ का शेष..

६. आर्द्र प्रदेशों के जल (अनुप्याः आपः)-जहाँ जल की बहुतायत होती है, वे प्रदेश अनूप कहलाते हैं तथा उन प्रदेशों में होने वाले जल अनूप्य। यहां के जल कृमि-दूषित भी हे सकते हैं।

७. भूमि खोद कर प्राप्त किये जल (खनित्रिमाः आपः)-कुएँ, हाथ के नलों आदि के जल इस कोटि में आते हैं। जिस स्थान की भूमि में जो तत्त्व अधिक होते हैं, उनका प्रभाव वहाँ के जलों में भी आ जाता है, इसीलिए किसी कुएँ का पानी मीठा, किसी का खारा आदि होता है।

८. घड़ों में रखे जल (कुम्भेभिः आभृताः आपः)-घड़े विभिन्न प्रकार की मिट्टी के तथा सोना, चांदी तांबा आदि धातुओं के भी हो सकते हैं। इनमें पानी रखने से उस मिट्टी का प्रभाव तथा उन धातुओं का प्रभाव पानी में आ जाता है। किस रोग में कैसी मिट्टी के घड़े में या किस धातु के घड़े में रखा पानी उपयोगी होता है, यह जानकर उन-उन घड़ों के पानी का चिकित्सा में प्रयोग किया जाता है। घड़े जल-शोधन के काम में भी लो जाते हैं। ऊपर-नीचे तीन घड़े रखे जाते हैं। ऊपर के तथा बीच के घड़ों की तली में पतला-सा छिद्र कर दिया जाता है। सबसे ऊपर के घड़े में अशुद्ध पानी भरा जाता है, जिसे शुद्ध करना अपेक्षित होता है। बीच के घड़े में कोयला, चूना, रेत आदि भर दिया जाता है। ऊपर के घड़े का पानी टपक-टपक कर निचले घड़े में आता रहता है तथा कोयले, चूने आदि के सम्पर्क से शुद्ध होकर सबसे नीचे के घड़े में जमा होता चलता है।

जल-शोधन

जलों को प्रदूषित न होने देने तथा प्रदूषित जलों को शुद्ध करने के कुछ उपायों का संकेत भी वेदों में मिलता है। एक मन्त्र में कहा गया है कि वे दिव्य जल हमारे लिए सुखदायक हों; जिनमें वरुण, सोम, विश्वेदेवाः तथा वैश्वानर अग्नि प्रविष्ट हैं-
यासु राजा वरुणो यासु सोमो विश्वेदेवा यासूर्जं मदन्ति।
वैश्वानरो यास्वग्निः प्रविष्टस्ता आपो देवीरिह मामवन्तु॥ -ऋ० ७.४९.४

यहाँ वरुण शुद्ध वायु या कोई जलशोधक गैस है, सोम चन्द्रमा या सोमलता है, विश्वेदेवाः सूर्यकिरणें हैं तथा वैश्वानर अग्नि सामान्य आग या विद्युत् है। इनके द्वारा अशुद्ध जल को शुद्ध से सूर्यताप को जल में पहुँचाना जल-शोधन का एक विशिष्ट उपाय वेदों में कहा गया है, साथ ही कुशा घास को भी जलशोधक कहा गया है।
सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। -यजु० १.१२,३१

तालाब आदि में स्थिर रहने वाले जल प्रदूषित हो जाते हैं, अतः वेद में बहते हुए जलों को अपेक्षाकृत अच्छा माना गया है। बहती हुई नदियाँ अपने जल को मधु से संसृष्ट कर लेती हैं-
अम्बयो यन्त्यध्वभिर्जामयो अध्वरीयताम्।
पृञ्चतीर्मधुना पयः। -ऋ० १.२३.१६

बिना रुके बहने वाले जल पवित्रतादायक होते हैं- **समुद्रज्येष्ठाः सलिलस्य मध्यात् पुनाना यन्त्यनिविशमानाः** -ऋ० १.२३.१६

बिना रुके बहने वाले जल पवित्रतादायक होते हैं-**समुद्रज्येष्ठाः सलिलस्य मध्यात् पुनाना यन्त्यनिविशमानाः** -ऋ० ७.४९.१. । दिन-रात बहने वाले जलों का वेद में उत्सुकता के साथ आह्वान किया गया है-
सस्त्रुषीस्तदपसो दिवा नक्तं च सस्त्रुषीः।
वरेण्यक्रतुरहमपो देवीरूप ह्वये॥
-अथर्व० ६.२३.१

हिमालय से बहकर आने वाले जलों को हृदयदाह दूर करने वाला बताया गया है-
हिमवतः प्रस्त्रवन्ति सिन्धौ समह संगमः।
आपो ह मह्यं तद् देवीर्ददन् हृद्द्योतभेषजम्॥ -अथर्व० ६.२४.१

नदियों के जल यदि अशुद्ध पदार्थों से प्रदूषित हो जाएँ, तो विशाल स्तर पर उन्हें शुद्ध करने के अभियान का संकेत भी वेद में मिलता है। **यद्वो २शुद्धाः पराजघ्नुरिदं वस्तच्छुन्धामि** । यजु० १३.१३ । अर्थात् अशुद्ध वस्तुओं ने यदि तुम्हें अपवित्र कर दिया है, तो तुम्हें मैं शुद्ध कर लेता हूँ। ऋग्वेद में लिखा है कि यदि नदियों में विष उत्पन्न हो गया है तो सब विद्वान् जन मिलकर उसे दूर कर लें- **यन्नदीषु...परिजायते विषम्। जायते विषम्। विश्वेदेवा निरितस्तत् सुवन्तु** ऋ० ७.४०.३ । इस प्रकार सब नदियाँ प्रदूषणरहित हो जाएँ-**शिवा देवीरशिपदा भवन्तु, सर्वा नद्यो अशिमिदा भवन्तु** वही, मन्त्र ४।

आर्य समाज की अपने संन्यासी, विद्वानों व नेताओं से अपेक्षायें

'हमारे संन्यासी, नेता व विद्वान स्वामी दयानन्द से प्रेरणा ग्रहण करें'

–मनमोहन कुमार आर्य

आर्य समाज वैदिक आश्रम व्यवस्था को मानता है जिसमें चार आश्रम ब्रह्मचर्य, गष्हस्थ, वानप्रस्थ व संन्यास नाम से प्रसिद्ध हैं। हम यहां संन्यास आश्रम की चर्चा कर रहे हैं। संन्यास का मुख्य अर्थ है कि स्वयं को गष्हस्थ के उत्तरदायित्वों से मुक्त करके स्वतन्त्र होकर ईश्वरोपासना, आत्मोन्नति व सद्धर्म का पालन करते हुए देश व समाज के लिए समर्पित हो जाना। ब्रह्मचर्य आश्रम में हम शरीर का निर्माण करते हैं, उसकी वर्षद्धि कर उसे गष्हस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास आश्रम की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए तैयार करते हैं जिसमें विद्यार्जन करना प्रमुख है। यहां यह भी प्रश्न उपस्थित होता है कि विद्या क्या है, किस उद्देश्य की पूर्ति के लिए विद्यार्जन किया जाता है तथा विद्या कैसी होनी चाहिये? यदि ब्रह्मचर्य आश्रम की उपेक्षा की गई या हो गई तो हमारे आगे के तीनों आश्रम बिगड़ जायेगें। अतः ब्रह्मचर्य पर ध्यान दिये जाने की आवष्यकता है। इसके लिए माता–पिता को अपनी सन्तानों को ऐसे विद्यालय या गुरूकुल में भेजना होता है जहां उसकी बुद्धि का पूर्ण विकास किया जाये। विद्या की परिभाशा करते हुए हम यह पाते हैं कि विद्या वह है जो मनुश्य को जीवन का उद्देष्य जनाये व उसे प्राप्त कराये। उद्देश्य क्या है, ईश्वर, जीवात्मा व प्रकषति को उसके वास्तविक स्वरूप में जानना। जो भी व्यक्ति जीवात्मा व ईश्वर के स्वरूप के साथ प्रकषति के स्वरूप को भी यथार्थ रूप में जानेगा तो वह पूर्ण विद्वान पुरूश होगा और यदि नहीं जानेगा तो हम उसे पूर्ण ज्ञानी व बुद्धिमान व्यक्ति नहीं कह सकते। आप कह सकते हैं कि जीवन जीने के लिए व्यक्ति का हिन्दी व अंग्रेजी भाशाओं को जानना, टाईपिंग व कम्प्यूटर को जानना व इन्हें चलाना, बी.ए., एम.ए., बी.एस.सी, एम. एस.सी, एम.बी.ए. आदि पढ़ा हुआ तथा डाक्टर, इंजीनियरिगं आदि उपाधियों से विभूशित होना चाहिये तभी वह सफल व्यक्ति माना जा सकता है। ऐसा करने पर उसके पास प्रचुर धन व अन्य साधन जिससे जीवन सुखी व सम्पन्न होता है, होगें। यदि ऐसा नहीं है तो जीवन तो फिर अभाव ग्रस्त होकर रोज–रोज की चिन्ताओं व कश्टों का भण्डार हो जायेगा।

यहां हमारा प्रश्न है कि वह जीवन भी क्या जीवन है जिसमें व्यक्ति को यही न पता हो कि वस्तुतः वह है कौन? उसका जन्म किस उद्देश्य से हुआ है? यह संसार कब, किसके द्वारा कि उद्देश्य से बना है? संसार को बनाने वाली उस सत्ता का स्वरूप कैसा है? प्रकषति, जो कि अनुभव से जड़ दिखाई देती है, की मूल अवस्था क्या है? और उससे यह सषश्टि बनकर कैसे अस्तित्व में आई है? हम यह स्वीकार करते हैं कि व्यक्ति प्रभूत धन कमायें, उसके पास जीवन के सभी आधुनिक साधन भी होने चाहिये परन्तु उसको यह भी याद रहना चाहिये कि साधन उसके जीवन के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हैं न कि वह साधनों के लिए है। आज कल जिस प्रकार से धन कमाया जा रहा है उससे मनुश्य के जीवन का प्रत्येक क्षण धनोपार्जन को ही समर्पित हो कर रह गया है। वह जीवन को सुखी बनाने के ही साधनों के लिए जीवन को व्यतीत करता दिखाई देता है। साधनों को ही उसने अपना साध्य बना रखा है। जबकि विचार व चिन्तन से यह विदित होता है कि हमारा साध्य अपना व ईश्वर का तथा प्रकषति के मूल व कार्यस्वरूप को यथार्थ रूप में जानना, अपने व्यवहार को अन्य प्राणधारियों के कल्याण के लिए कार्य करने सहित ईश्वर का साक्षात्कार करना एवं जीवन मुक्त अवस्था को होकर मोक्ष प्राप्त करना है। क्या हम ऐसा कर रहे हैं? हमें लगता है कि अपवादों को छोड़कर शायद ही ऐसा कोई करता हो। अतः ईश्वर, जीवात्मा व प्रकषति का ज्ञान व ईश्वर–साक्षात्कार के लिए प्रयास करना मनुश्य जीवन के प्रमुख कर्तव्य हैं। इसके साथ मनुष्य अन्य सब विषय पढ़े, बड़ी–बड़ी उपाधियां प्राप्त करे, नौकरी या व्यवसाय करके प्रभूत धन अर्जित करे, अपनी आवश्यकतायें कम से कम रखे और आवश्यकता से अधिक धन का संग्रह न कर उसे लोकोपकार के कार्यों में व्यय आदि कर्तव्यों को करे। हमें ऐसा करना ही बुद्धिमत्ता प्रतीत होती है। हमें पता नहीं कि कोई हमारी इस बात से सहमत होगा या नहीं। इस प्रकार से ब्रह्मचर्य में सभी विद्याओं को प्राप्त कर धनोपार्जन में लगें और वैदिक कर्मों व कर्तव्यों को पूरा करते हुए जीवन व्यतीत करें तो किसी को कोई आपत्ति नहीं होगी और उसका जीवन उद्देश्य की पूर्ति में सफल हो सकता है। गष्हस्थ जीवन में व्यक्ति को गष्हस्थ के कर्तव्यों का व वानप्रस्थ आश्रम में इस आश्रम के कर्तव्यों का निर्वाह करना है। इसके बाद 75 वर्श की अवस्था व उससे पूर्व अपने कर्तव्यों का निर्वाह करके वैराग्य होने पर संन्यास आश्रम में प्रवेश करे जिससे इस आश्रम में निहित उद्देश्य पूरे किये जा सकें और देश व समाज की उन्नति हो।

आज की परिस्थितियों में संन्यासी का मुख्यतम् कार्य, पं. लेखराम, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, स्वामी श्रद्धानन्द और स्वामी दर्शनानन्द जी की तरह, ऐसे लोगों में वेद वा वैदिक शिक्षाओं का प्रचार करना है जो वैदिक धर्म से परिचित नहीं हैं। इसके लिए उसे प्रवचन व उपदेश का सहारा लेना है। गांवों व झुग्गी–झोपड़ियों में जाना होगा। लोगों से मिलकर उनके साथ बैठ कर बातचीत करनी होगी। उनकी समस्यायें सुननी होगीं। उनका समाध ाान बताना होगा। वेद, आर्य समाज व महर्शि दयानन्द के बारे में उन्हें बताना होगा। सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक उन्हें देनी होगी। उसका उन्हें नियमित स्वाध याय करने का वचन लेना होगा। उससे उन पर क्या प्रभाव होगा यह भी उनको बताना होगा। वह विधर्मियों के कुचक्र में न फंसे, यह भी उन्हें समझाना होगा। अपना पता, फोन नं. आदि उन्हें देना होगा कि यदि उनसे कोई अन्याय आदि करता है तो वह उस फोन नं. पर सूचित करें। आर्य समाज उनकी सहायता करेगा, यह विश्वास उन्हें दिलाना होगा। आर्यसमाज, अन्य मत–मतान्तरों व मजहबों में मुख्य अन्तर क्या है, यह भी बताना होगा। वैदिक धर्म की सर्वोपरि श्रेश्ठता का वर्णन भी करना व सुनाना होगा। ईश्वर व आत्मा के स्वरूप व इनके गुणों के बारे में भी उन्हें बताना होगा। ईश्वर, जीवात्मा व प्रकषति का जैसा वर्णन वेदों, वैदिक साहित्य व सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों में है, वैसा अन्य मतों, मजहबों के ग्रन्थों व पुस्तकों में नहीं है। अन्य मतों में पड़े हुए व्यक्ति अपने – मानव जीवन के सच्चे उद्‌देश्य व उसकी प्राप्ति के उपायों से अनभिज्ञ हैं। उन्हें जीवन का लक्ष्य सत्कर्म व मोक्ष की प्राप्ति यदि हो सकती है तो केवल व केवल वैदिक ध र्म की शरण में आकर उसके नियम, उद्‌देश्य, सिद्धान्तों व मान्यताओं का पालन करके ही हो सकती है। इस पर तर्क व बुद्धिसंगत विचार प्रस्तुत करने होगें। इसके साथ कालेजों, स्कूलों, गुरूकुलों व सरकारी कार्यालयों में जाकर वहां वेद व वैदिक विचारध ारा का महत्व प्रतिपादित कर उन्हें सत्यार्थप्रकाश व वैदिक साहित्य पढ़ने की प्रेरणा देनी चाहिये। यदि कोई संन्यासी ऐसा न कर अपने आश्रम में रहकर यज्ञ आदि कर व करवा तथा दान एकत्र करने में ही श्रम करता है, कार्यालय में बैठ कर या आर्यसमाज मन्दिर में रविवार व वार्शिकोत्सव आदि में प्रवचन करने को ही वेद प्रचार मानता है तो हम उनसे सहमत नहीं हैं। आर्यसमाज मन्दिर में प्रवचन देना अच्छी बात है, इसका कोई विरोध नहीं है, परन्तु यह तो ऐसे कमरे में प्रकाश करने के समान है, जहां पहले से ही उजाला व प्रकाश है। प्रकाश अन्धेरे स्थान में करने की आवश्यकता है। देश विदेश में घूमने, राजनीतिक बयानबाजी करने, बड़ी–बडी घोशणायें करने परन्तु पूर्व घोशणाओं की उपेक्षा करने व दान इकट्‌ठा करने की प्रवषत्ति संन्यासियों में नहीं होनी चाहिये। पत्र–पत्रिकाओं में अपनी फोटो व लेख छपाने का मोह भी संन्यासियों को छोड़ना चाहिये। देश विदेश की यात्रा करने वाले विद्वानों व संन्यासियों से हम कहना चाहते हैं कि वह स्वयं का आत्मालोचन करें और देखें कि कहीं वह आर्य समाज व आर्य जनता के प्रति अन्याय तो नहीं कर रहे हैं? आर्य समाज की प्रतिश्ठा व गरिमा को आघात तो नहीं हो रहा है? हमारा यह भी मानना है कि यदि काई विद्वान व संन्यासी किसी से कोई दान लेता है, तो उसे उस दानदाता की भावना के अनुसार जिस कार्य के लिये दान लिया या दिया गया है, उसे पूरा करने का उत्तरदायित्व निभाना चाहिये। उन्हें लोकैशणा व महत्वांकाक्षाओं से बचना चाहिये। संन्यासी तो वैरागी होता है। यदि वह अपने नाम से या परिवार आदि के नाम पर संस्थायें, आश्रम व न्यास बनाता है तो हम इसे संन्यास की मर्यादा के विपरीत समझते हैं। यह महर्शि दयानन्द द्वारा अपने जीवन, कार्यों, व्यवहार, उपदेश व विचारों से दिये गये उदाहरणों के विपरीत होने से अप्रशस्त कार्य है। उसे हर स्थिति में यह याद रखना चाहिये कि उसे अज्ञान, अन्धकार, अन्धविश्वास, पाखण्ड, गुरूडम, असत्य, अन्याय, अशिक्षा, अविद्या, शोशण व स्वार्थ की प्रवृति को मिटाना है। प्रत्येक विद्वान व संन्यासी को अपने व्यवहार से यह दिखाना है कि वह लोकैशणा व महत्वाकांक्षाओं से सर्वथा रहित है। यदि ऐसा नहीं है तो फिर भले ही वह संन्यासी कितना बड़ा, विख्यात, प्रभावशाली व्याख्यानदाता क्यों न हो, हमें लगता है कि वह संन्यास धर्म का पालन नहीं कर रहा है। वह सामान्य लोगों के समान ही है।

किसी भी संन्यासी, नेता व विद्वान को ऐसी कोई घोशणा नहीं करनी चाहिये जिसे वह पूरा न कर सकता हो। समाचार पत्रों में छा जाने की लोकैशणा की प्रवषत्ति से बचना चाहिये। यदि कोई किसी कार्यक्रम या आन्दोलन की घोशणा करे तो उससे पूछा जाना चाहिये कि क्या अतीत में की गई उसकी सभी घोशणायें क्रियान्वित हुईं और पूरी हो चुकी हैं? आजकल विदेशी व अन्य शक्तियां भी आर्यसमाज को कमजोर करना चाहती हैं और प्रलोभन देकर हमारे ही बीच के लोगों से अपना मनोरथ सिद्ध करवाती हैं। अतः हमें यह देखना है कि हममें से कोई किसी देशी या विदेशी, धार्मिक, सामाजिक व राजनैतिक संगठन के एजेण्ट के रूप में तो काम नहीं कर रहा है? इससे आर्य समाज का संगठन कमजोर होता है और हम मुख्य मुद्‌दों से हट कर अनावश्यक कार्यों यथा मुकदमें–बाजी आदि, में अपना धन व शक्ति को व्यय करते हैं। यही हमारे विरोधी संगठनों,

सम्प्रदायों व कुछ राजनीतिक दलों का उद्देश्य हो सकता है। अतः सावधानी रखने की आवश्यकता है जिससे आर्यसमाज अपने उद्देश्य को स्मरण रख कर उसे पूरा कर सके। हम यह भी निवेदन करना चाहते हैं कि बहुत से संन्यासी एक आश्रम से दूसरे आश्रम में आते जाते रहते हैं परन्तु कभी उनके विचारों व प्रवचनों का सुनने का अवसर नहीं मिलता। कुछ में प्रवचन करने की योग्यता का भी अभाव देखा जाता है। हमें लगता है कि प्रत्येक आर्यसमाज के संन्यासी को प्रवचन करने का अभ्यास करना चाहिये। अभ्यास व प्रयत्न से क्या नहीं किया जा सकता? प्रवचन करना इतना कठिन व जटिल नहीं है। हां, स्वाध्याय, चिन्तन–मनन व अभ्यास के साथ आत्मिक शक्ति या बल की भी आवश्यकता है। इससे यह कमी दूर हो सकती है। हम आशा करते हैं कि सभी विद्वान, वानप्रस्थी व संन्यासी हमारी बात का सकारात्मक पक्ष ग्रहण करने का प्रयत्न करेगें। यह सभी बातें हम आर्यसमाज के हित को ध्यान में रखकर लिख रहे हैं। किसी भी विद्वान से हमारा कोई व्यक्तिगत राग–द्वेश नहीं है, अतः हम निवेदन करते हैं कि कोई इन शब्दों का बुरा न माने।

आईये, अब देखते हैं कि स्वामी दयानन्दजी ने संन्यास लेने के बाद क्या–क्या काम किये। उनका जीवन व दिनचर्या कैसी थी। सभी आर्य सदस्य व विद्वान जानते हैं कि महर्शि दयानन्द का प्रथम सर्वांगपूर्ण जीवन चरित, पूर्व एकाधिक संक्षिप्त जीवन चरितो को छोड़कर, पण्डित लेखराम जी के प्रयत्नों व पुरूशार्थ का परिणाम है। अन्य ऋषिभक्तों ने भी श्रद्धा व परिश्रमपूर्वक स्वामी दयानन्द जी के जीवन चरित लिखे हैं। पं. देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय, स्वामी सत्यानन्द, हरविलास शारदा, मा. लक्ष्मण आर्य, रामविलास शारदा, डा. भवानीलाल भारतीय आदि प्रमुख जीवनीकार हैं। पत्र–व्यवहार से भी किसी व्यक्ति के कार्यों व विचारों का ज्ञान होता है। महर्षि दयानन्द के पत्र–व्यवहार पर पं. भगवददत्त जी तथा पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी ने प्रशंसनीय कार्य किया है। इन जीवन चरितों से स्वामीजी के जीवन व कार्यों पर प्रकाश पड़ता है और हम जान पाते हैं कि उनका रहन–सहन व प्रचार–प्रणाली क्या थी। महर्शि दयानन्द जी ने पूर्ण वैराग्य होने के कारण अपनी युवावस्था में ही स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से संन्यास आश्रम की दीक्षा ली थी और स्वामी दयानन्द नाम ग्रहण किया था। इसके बाद वह सत्य की खोज, अध्ययन, योग, चिन्तन–मनन, देशाटन, संन्यासी व विद्वानों से शंका समाधान, पुस्तकालयों की खोज और वहां के प्राचीन ग्रन्थों का अध्ययन व उन पर विचार–चिन्तन आदि का कार्य करते रहे। प्रथम आजादी की लड़ाई सन् 1857 के ढ़ाई वर्श बाद वह मथुरा नगरी में गुरू विरजानन्द सरस्वती की कुटिया में आर्श व्याकरण के अध्ययन के लिए पहुंचें। लगभग 3 वर्शों में उन्होंने अपना अध्ययन समाप्त कर लिया और गुरू की आज्ञा व भावना के अनुसार वह वेदों के प्रचार व प्रसार में सक्रिय हुए। स्वामीजी नगरों के बीच निवास नहीं करते थे। उनका निवास नगर से कुछ दूर किसी बाग, नदियों के तट व बस्तियों से पर्याप्त दूर एकान्त स्थान में हुआ करता था। वह बहुत अधिक दिनों, महीनों व वर्शों तक एक स्थान पर नहीं रहते थे। जो व्यक्ति या आर्य पुरूश उन्हें आमंत्रित करते थे, वही उनके निवास की उनकी आवश्यकता व इच्छानुसार व्यवस्था करते थे। स्वामीजी अपने डेरे पर ही प्रवचन, शंका–समाधान व वार्तालाप करते थे। यदि नगर में उनके व्याख्यानों की व्यवस्था की जाती थी तो वह वहां जाते थे और सवारी वा वाहन से सायं व रात्रि के समय अपने डेरे पर लौट आते थे। पहले तो वह एक लंगोट बांधा कर ही रहते थे परन्तु कोलकत्ता में ब्रह्म समाज के एक नेता श्री केशवचन्द्र सेन द्वारा उनको वस्त्र पहनने व भाशण में संस्कृत के स्थान पर आर्य भाशा हिन्दी का प्रयोग करने का परामर्श दिये जाने पर उन्होंने उनके दोनों सुझावों को स्वीकार कर लिया था। अब वह वस्त्र अर्थात् वैदिक आर्य परिधान धोती पहनने लगे थे और सिर में पगड़ी भी बांधते थे। भाशण में हिन्दी का प्रयोग होने लगा और जब सत्यार्थप्रकाश लिखने का समय आया तो उसके लिए उन्होंने हिन्दी को स्वीकार किया। यह एक क्रान्तिकारी निर्णय था। अपने व्यक्तिगत कार्यों के लिए धन संग्रह व उसका संचय व बैंक खाता आदि खोलने जैसे विशयों के बारे में तो उन्होंने कभी सोचा ही नहीं था। ब्लैकमनी व कालाधन क्या होता है, उसका उन्हें कोई ज्ञान नहीं था, इसलिए उसको छुपाने का तो प्रश्न ही नहीं था। पब्लिसिटी का तो उन्हें ज्ञान ही नहीं था। लोकैषणा से यहां तक दूर थे कि किसी को कैमरे में अपना चित्र भी उतारने देना पसन्द नहीं करते थे। परन्तु अब समय बदल चुका है। अब अर्थ शुचिता के सिद्धान्त में समय के साथ परिवर्तन हो गया है। यह बात सभी मतों के कुछ अनुयायियों व प्रचारको पर समान रूप से लागू होती है परन्तु कहीं–कहीं दाल में कुछ काला होने की सम्भावना से इनकार भी नहीं किया जा सकता। मीडिया व आम लोगों में धर्म प्रचारकों के ठाट–बाट को देखकर इसकी चर्चा आम व्यक्तियों द्वारा सामान्यतः की जाती है।

महान संन्यासी स्वामी दयानन्द सरस्वती एक स्थान पर कुछ दिन रहकर प्रचार करते थे और उसके बाद अन्य निकटवर्ती व दूरस्थ स्थान पर प्रस्थान कर जाते थे। आर्यसमाज की स्थापना के बाद यदि कहीं आर्यसमाज की स्थापना का अवसर होता था तो वह भी ऋषि दयानन्द

पृष्ठ १२ का शेष...

जी के कर कमलों द्वारा हो जाया करती थी। आर्श संस्कष्त व्याकरण एवं आर्श ग्रन्थों के पठन–पाठम पर उनका बहुत जोर रहा। उन्होंने कई पाठशालायें खोली परन्तु किन्हीं कारणों से वह सफलतापूर्वक चल न सकी जिस कारण उनको बन्द करना पड़ा। सन् 1875 में आर्य समाज की स्थापना के समय से उन्होंने ग्रन्थ लेखन भी आरम्भ कर दिया था। यद्यपि इससे पूर्व भी उन्होंने आदि सन्ध्या व भागवत् खण्डन पर लघु पुस्तकें लिखी थी परन्तु सत्यार्थ प्रकाश के लेखन के बाद हम देखते हैं कि लेखन कार्य में वह अपने देह के अवसान पर्यन्त संलग्न रहे और इतना होने पर भी वेद भाश्य आदि का कार्य पूर्णतः सम्पादित न हो सका। उनका ऋग्वेद का भाश्य अधूरा रह गया और अथर्ववेद तथा सामवेद का भाश्य वह कर ही नहीं सके। यदि वह सामवेद का आध्यात्मिक व भक्ति रस से पूर्ण भाश्य भी कर जाते तो यह अद्वितीय होता। इस कमी को अन्य आर्य विद्वानों ने काफी कुछ पूरा कर दिया है। डा. रामनाथ वेदालंकार और इनके गुरू पं. विश्वनाथ विद्यालंकार वेदोपाध्याय जी के सामवेद–भाश्य हमारे पास हैं और अन्य अनेक विद्वानों के भी सामवेद–भाश्य हैं जो हमें सामवेद की महत्ता का दिग्दर्षन कराते हैं। इसी प्रकार से अथर्ववेद भाश्य व ऋग्वेद के अवषिश्ट भाग का भाश्य भी हमें सुलभ है। हम जीवन भर स्वामी दयानन्द जी में लोभ, स्वार्थ, अर्थ संग्रह, अपना कोई आश्रम बनाने, देश विदेश में अनावश्यक बार बार घूमने, आने–जाने आदि व निरर्थक कार्यों में समय का दुरूपयोग करने जैसी कोई गतिविधि नहीं देखते। अपनी पब्लिसिटी व पत्र–पत्रिकाओं में छाये रहने की प्रवषत्ति से वह कोसों दूर थे। वह अपने एक–एक क्षण का उपयोग मानवता की भलाई के कामों में करते थे। हमारे सभी विद्वान संन्यासियों को स्वामी दयानन्द के जीवन से प्रेरणा लेकर अपने जीवनों को पूर्णतः व अधिकांशतः उनके जैसा ही बनाने का प्रयत्न करना चाहिये और अपने जीवन की कमियों को दूर करना चाहिये। वही संन्यासी आर्य संन्यासी कहला सकते हैं जिनका जीवन स्वामी दयानन्द के अनुरूप आदर्शों से भरा हो अन्यथा यही कहा जा सकता है उनमें संन्यास की उच्च मर्यादायें व गरिमा का अभाव है। यह सभी बातें आर्यसमाज के विद्वानों व प्रचारकों पर भी पूर्ण रूप से लागू होती हैं।

हम आर्य जगत के विद्वानों से प्रार्थना करते हैं कि वह आर्य समाज के हित में इस विशय में अपने विचारों व लेखनी से आर्य बन्धुओं का समय–समय पर मार्गदर्शन करते रहें। आर्यसमाज के हित और वर्तमान स्थिति को देखकर हमारे मन में इस लेख को लिखने का विचार आया। आशा है कि आर्यसमाज के मननशील अनुयायी इस पर संजीदगी से विचार करेंगे। इति।

–मनमोहन कुमार आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र.-तेलंगना, सुल्तान बाजार,

बिक्री विभाग

१. चारों वेदों का हिन्दी भाष्य
२. सत्यार्थ प्रकाश हिन्दी
३. सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी
४. ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका
५. वैशेषिक, सांख्य, न्याय, वेदान्त दर्शन हिन्दी भाष्य स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती
६. युग निर्माता सत्यार्थ प्रकाश सन्दर्भ दर्पण
७. Vedic concept of Culture and Civilization
८. असल महात्मुडु स्वामी श्रद्धानन्द-तेलुगु
९. कालजयी सन्त महर्षि दयानन्द सरस्वती
१०. धर्मवीर पं. लेखरामजी का जीवन चरित्र
११. मैने निजाम पर बम क्यों डाला ?
१२. बागी दयानन्द
१३. महर्षि दयानन्द की देन
१४. देवर्षि दयानन्द चरित
१५. बौद्धमत और वैदिक धर्म
१६. संक्षिप्त सत्यार्थ प्रकाश
१७. सत्यार्थ प्रकाश विमर्श
१८. आर्य मान्यताएँ
१९. वैदिक इतिहास विमर्श
२०. आस्तिकवाद
२१. चतुर्वेद शतकम्
२२. प्रार्थना-प्रवचन
२३. अतीत के यश की धरोहर
२४. सत्यार्थ सन्देश
२५. वेदान्त मीमांसा-सन्देश
२६. न्याय-वैशेषिक-सन्देश
२७. ऋग्वेद सन्देश
२८. बंगाल शास्त्रार्थ
२९. अपने आपको कैसे जानें और पढे
३०. संकल्प-सिद्धि
३१. प्रेरक-प्रसंग
३२. वीरांगना महारानी कैकेयी
३३. वेदों में इतिहास नहीं
३४. देव यज्ञ
३५. योग मार्ग
३६. सत्य सनातन वैदिक धर्म
३७. अभिवादन नमस्ते ही क्यों ?
३८. ज्योतिर्मय
३९. राष्ट्र रक्षा के वैदिक साधन
४०. ब्रह्मा कुमारी संस्था ढोल की पोल
४१. शराब बन्दी क्यों आवश्यक है ?
४२. आर्य समाज परिचय
४३. वैदिक सन्ध्या अग्निहोत्र विधि
४४. हैदराबाद का मुक्ति संग्राम
४५. आदर्श एवं बहुआयामी व्यक्तित्व के धनि लक्ष्मणराव गोजे
४६. पञ्च महायज्ञ विधि-तेलुगु

(नोट : तांबे के हवन कुण्ड और हवन पात्र बी उपलब्ध हैं)

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् रत्न धातमम्।। १,१,१।।

पूर्ण रूप से हित करने वाले, यज्ञ के प्रकाश यज्ञ के प्रवर्तक, ऋतु के अनुसार यज्ञ करने वाले दिव्य विबुधो एवं ज्ञानियों को अपने पास बुलाने वाले रत्नों के धारण कराने वाले तेजस्वी अग्रणी (नेता) के गुणों का वर्णन करता हूँ।

वेद प्रचार सप्ताह

तिथि श्रावण शुक्ल प्रतिपदा से श्रावण कृष्ण अमावास्या तक

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि गत वर्ष कि भांति इस वर्ष भी वेद प्रचार सप्ताह तिथि श्रावण शुक्ल प्रतिपदा संवत् २०७३, **तदनुसार ३ अगस्त २०१६ बुधवार से ३१ अगस्त २०१६ बुधवार** तक बड़े समारोहपूर्वक सभी आर्य समाजों में मनाने का निश्चय किया गया है। इसका उद्देश्य मानवमात्र की परम पवित्र सत्यसनातन धर्म पुस्तक ऋग, यजु, साम एवं अथर्ववेद का आशामय संदे जनता तक पहुँचाना है जिससे जनता में वैदिक धर्म, आर्य-संस्कृति और आर्य सभ्यता की प्रगतिशील व्यवहारिकता के प्रति सक्रिय आकर्षण एवं रुचि उत्पन्न होकर वेदाध्ययन का प्रवचन, वैदिक जीवन का संचार तथा पवित्र वैदिक वातावरण का निर्माण हो सके। आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि समस्त आर्यसमाजें कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए पूर्ण प्रयास करेंगे।

कार्यक्रम

सप्ताह का आरम्भ श्रावण मास की प्रतिपदा से आरम्भ होता है। सप्ताह भर का कार्यक्रम निम्न प्रकार मनाया जाना चाहिए।

१. श्रावणी-पर्व दिनांक १८ अगस्त २०१६ बुधवार को मनाया जाए। प्रत्येक आर्य परिवार में उस दिन सूर्योदय केसमय परिवारिक यज्ञ हो।

२. पारिवारिक यज्ञ से निवृत्त होकर सब आर्य नर-नारी अपनी संतानो सहित ८-३० बजे आर्य समाज मन्दिर में उपस्थित हो। तत्पश्चात् आर्य पर्व पध्दति के पृ. ११ से ११६ पर्यंत (तृतीय संस्करण संवत् २०४१) लिखित तिथि से सम्पूर्ण पध्दति सम्पन्न कराई जाय। यज्ञ के पश्चात् वैदिक स्वाध्याय के महत्व पर किसी विद्वान का प्रवचन हो।

३. यदि वेद प्रचार का प्रबन्ध न हो सके तो समस्त आर्य नर-नारी यजुर्वेद ४० वे अध्याय का मिलकर अर्थ सहित पाठ करें।

४. उस दिन सब नर-नारी नूतन यज्ञोपवीत धारण करे जिन आर्य बालक-बालिकाओं का उपनयन नहीं हुआ हो तो इस पवित्र-पर्व पर उनका उपनयन संस्कार अवश्य सम्पन्न कराया जाय।

५. प्रत्येक मनुष्य को विधिपूर्वक वेदाध्ययन करना चाहिए। इस दृष्टिकोण से प्रत्येक आर्य का कर्तव्य है कि वह अपने पड़ोस के अशिक्षित नर-नारियों को यज्ञोपवीत धारण करने की न केवल प्रेरणा दें अपितु आर्य समाज मन्दिर में अधिक -से-अधिक संख्या में उन्हे आमन्त्रित कर यज्ञोपवीत द्वारा उन्हे दीक्षित भी करें।

सप्ताह के शेष दिनों में

प्रातः समाज मन्दिर में विशेष यज्ञ और वेद पाठ का आयोजन किया जाए।

मध्याह्नः वेद प्रचार निधि में अधिक-से-अधिक धन इकठ्ठा कर शीघ्र सभा कार्यलय को भेज दें।

रात्रि : समाज मन्दिर मे अन्य सार्वजनिक स्थानो में वेद कथाँए हो तथा आर्य समाज के नये सदस्य बनाए जाएँ। शुध्दि, दलितोध्दार, गौ-रक्षा एवं सामाजिक एवं राष्ट्रीय समस्या के सम्बन्ध में चर्चा कर कार्य किया जाए।

ऋषि भक्तों से विशेष निवेदन

प्राचीन आर्य परम्परानुसार यह वेद के श्रवण-श्रावण का मास है यदि पूरे मास नही तो सप्ताह भर ही क्यों न हो, प्रत्येक आर्य गृहस्थ को प्रतिदिन प्रातः सायं घर मे यज्ञ और वेदों में से चुने हुए कुछ मन्त्रों का अर्थ सहित पाठ करना चाहिए। प्रतिदिन अग्नि रूप भगवान को साक्षी रखकर वेद धर्मानुसार आचरण करने की प्रतिज्ञा करें। साथ ही वैदिक सिध्दान्तों के प्रचार का व्रत लें जिससे अड़ोस-पड़ोस के लोगो में वैदिक वातावरण का निर्माण हो।

यह व्रत और दीक्षा का दिन है। इस दीक्षा में सबको विशेष रूप से कटिबध्द होकर इसको उन्नत करने के उचित साधनों का संग्रह करना चाहिए और अपनी सभा को वेद प्रचार के लिए धन की चिन्ता से सदैव मुक्त रखना चाहिए। इसी में सबका कल्याण है। आर्य पुरुषों उठो, जागो और वेद ज्योति को सारे संसार में फैला दो। आर्य जनो संभलो, भामशाह की तरह अपने कर्तव्य को पहचानो और स्वयं तथा अन्यों से धन संग्रह करके शीघ्र सभा के कोष को भर दो। आर्य बन्धुओं मानव जीवन के अपने ऊपर चढ़े ऋण-बन्धनों को तोड़ने का यह उत्तम अवसर है। जाति की रक्षा का आप पर ऋण है और इस पवित्र दिन सब ऋणों से मुक्त होने का सक्रिय संकल्प कीजिए। आप पर सभा का भी ऋण है और इसे आपको ही उतारना है।

सभा कार्यलय में हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू तथा तेलुगु में आर्य-साहित्य उपलब्ध है। प्रत्येक आर्य को साहित्य खरीदना चाहिए तथा प्रत्येक आर्य समाज के पुस्तकालय में आर्य-साहित्य होना चाहिए। सभा की ओर से तेलुगु हिन्दी संस्कार विधि पंच महायज्ञ विधि छपाई गई है। हर एक आर्य बन्धु इस पुस्तक को अवश्य अपने पास रखे ताकि सभी संस्कार स्वयं करा सकें।

सभा की ओर से आर्य जीवन मासिक का प्रकाशन हो रहा है। आप स्वयं ग्राहक बनकर, औरों को भी ग्राहकबनाये। सभा द्वारा प्रचारार्थ भेजे गये विद्ववानों को मार्ग व्यय आदि से सम्मानित करके ही आप विदा करें।

आशा है सदैव की भांति इस सभा के प्रति आपका स्नेह एवं सहयोग सदा बना रहेगा।

भवदीय

हरिकिशन वेदालंकार, मंत्री सभा

विट्ठलराव आर्य, एम.एससी. एल.एल.बी., प्रधान सभा

आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र-तेलंगाना,

महर्षि दयानन्द मार्ग, सुलतान बाजार, हैदराबाद - ५०० ०९५

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह बलिदान दिवस
दि. १८ अगस्त २०१६ गुरुवार के दिन मनाइए

हैदराबाद सत्याग्रह में अपने प्राणें की आहुति देने वाले आर्य वीरों की पुण्य स्मृति में प्रतिवर्ष सभा के आदेशों की पूर्ति तथा कर्तव्य पालन के उद्धेश्य से इस वर्ष श्रावण शुक्ल पूर्णिमा तदूनुसार गुरुवार दिनांक १८ अगस्त २०१६ को प्रत्येक आर्य समाज मन्दिर में सत्याग्रह बलिदान दिवस मनाया जाएगा इसी दिन श्रावणी का पुण्य पर्व है। कार्यक्रम श्रावणी उपाकर्म के साथ मिलकर निम्न प्रकार मनाया जायगा। प्रातः ८.३० बजे आर्य समाज मन्दिर में नगर निवासियों को बड़ी संख्य में आमन्त्रित करके यज्ञादि किये जाएँ। उपाकर्म-कार्यक्रम के पश्चात व्याख्यान आदि का विशेष प्रवन्ध किया जाए तथा उपस्थित सब भद्र-पुरुष एवं देविया सम्मिलित रूप से निम्न प्रकार मन्त्रों का पाठ करें।

१.ओ३म् ऋ तावान् ऋ तजाता ऋ कोवृधो घोरासो अनृतद्विष। तेषां वसुम्ने सुच्छर्दिष्टिमे नमः स्याम वे च सुरयः।। ऋग्वेद ७,६६,१३

२. ओ३म् अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्। इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि।। यजुर्वेद २, ५

३. ओ३म् इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। अपध्नन्तो अराह्वणः।। ऋग्वेद ९,६३,५

४. ओ३म् उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्या अस्मभ्य सन्तु पृथिवी प्रसूताः। दीर्घ न आयु प्रतिबुध्यमाना वयं तुभ्यं बलह्यतः स्याम ।। ऋग्वेद १,६३,५

१. आर्य समाजों के पुरोहित अथवा अन्य कोई वेदज्ञ विद्वान् उपर्युक्त मत्रों का तात्पर्य इन शब्दों में पढ़कर प्रार्थना करायें। जो विद्वान सदा सत्य के मार्ग पर चलते हुए सत्य की निरन्तर वृध्दि और असत्य के विरोध में तत्पर रहते हैं उनके सुखदायक आश्रय से हम सब सदा सुखी रहें और हम भी उनकी तरह मन, वचन और कर्म से पूर्ण सत्यनिष्ठ बनें।

२. हे ज्ञानस्वरूप सब उत्तम संकल्पों और कर्मों के स्वामी परमेश्वर हम भी आज से एक उत्तम व्रत ग्रहण करते हैं जिसको पूर्ण करने की शक्ति आप हमें प्रदान कीजिए जिससे कि उस व्रत को ग्रहण करने से हमारी सब ओर से उन्नति हो। वह व्रत यह है कि असत्य का सर्वथा परित्याग करके हम सत्य को ही आचरण में लावें। आप हमें शक्ति दें ताकि हम अपने जीवन को पूर्ण सत्यमय बना सकें।

३. हे मनुष्यों तुम सब आत्मिक शक्ति तथा उत्तम ऐश्वर्य को बढ़ाते हुए कर्मनिष्ठ बनकर उन्नति में बाधक आलस्य प्रमादादि दुर्गुणों का परित्याग करते हुए सारे संसार को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ सदाचारी धर्मात्म बनो और बनाओ।

४. हे प्रिय मातृभूमि हम सब तेरे पुत्र और पुत्रियाँ तेरी सेवा में उपस्थित होते हैं। हम सर्वथा निरोगी, स्वस्थ तथा ज्ञान सम्पन्न होते हुए दीर्घ आयु को प्राप्त हों और तेरी तथा धर्म की रक्षा के लिए आवश्यकता पड़ने पर हम अपने प्राणों की बलि देने को भी तत्पर रहें।

धर्मवीरों के प्रति श्रद्धांजलि

श्रध्दांजलि अर्पण करते हम, करके उन वीरों का मान।
धार्मिक स्वतन्त्रता पाने को, किया जिन्होंने निज बलिदान।।
परिवारों के सुख को त्यागा, युवक अनेकों वीरों ने।
कष्ट अनेकों सहन किये पर, धर्म न छोड़ा वीरों ने।।
ऐसे सभी धर्मवीरों के, आगे शीष झुकाते हैं।
उनके गुण-कर्मों को हम, निज जीवन में अपनाते हैं।।
अमर रहेगा नाम जगत में, इन वीरों का निश्चय से।
उनका रहेगा नाम जगत में, इन वीरों का निश्चय से।
उनका स्मरण बनाएगा फिर, वीर जाति को निश्चय से।।
करें कृपा प्रभु आर्य जाति में, कोटि-कोटि हों ऐसे वीर।
देश धर्म हित खुशी-खुशी, जो प्राणों को अपने दे वीर।।
जगतपिता को साक्षी रख कर, यही प्रतिज्ञा करते हैं।
इन वीरों के चरण चिह्न पर, चलने का व्रत धरते हैं।।
सर्व शक्तिमय दे बल ऐसा, धीर वीर सब आर्य बने।
पर उपकार परायण निशिदिन, शुभ गुणधारी आर्य बनें।।

धर्मवीर नामावली

श्यामलालजी, महादेवजी रामाजी श्री परमानन्द।
माधवराव, विष्णु भगवन्ता, श्री स्वामी कल्याणानन्द।।
स्वामी सत्यानन्द महाशय, मलखना श्री वेदप्रकाश।
धर्म प्रकाश, रामनाथजी, पाण्डुरंग, श्री शान्ति प्रकाश।।
पुरुषोत्तमजी ज्ञानी, लक्ष्मणराव, सुनहरा वेंकटराव।
भक्त अरोड़ा, नाथुरामजो, नन्हूसिंह, श्री गोविन्दराव।
मदनसिंहजी, रतिरामजी, शिवचन्द्र, सदाशिव, ताराचन्द्र।
श्रीयुत छोटेलाल, अशर्फीलाल तथा श्री फकीरचन्द।।
माणिकराव, भीमरावजी, महादेवजी, अर्जुनसिंह।
सत्यनारायण, वैजनाथ, ब्रह्मचारी दयानन्द नरसिंह।।
राधाकृष्ण सरीखे निर्भय अमर हुए इन वीरों का।
स्मरण करें विजयोत्सव के दिन सब ही धीरों वीरों का।।

भवदीय

विठ्ठलराव आर्य एम.एससी., एलएल.बी.,
प्रधान सभा

हरिकिशन वेदालंकार
मंत्री सभा

आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र.-तेलंगाना
महर्षि दयानन्द मार्ग, सुलतान बाजार, हैदराबाद - ५०० ०९५

భగవద్గీతోపన్యాసములు

రెండవ ఉపన్యాసము

పండిత గోపదేవ గారి ఉపన్యాసములను లేఖబద్ధం చేసిన
రచయిత : పండిత చెలవాది సోమయ్య

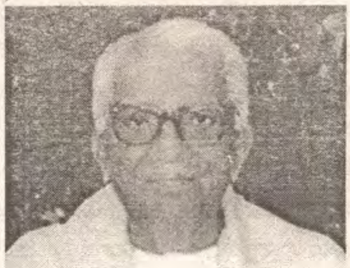

గతరాత్రి భగవద్గీతను గురించి కొన్ని విషయాలు చెప్పుకున్నాం. మొదటి శ్లోకం కొంతవరకు అయింది.

మహాభారత యుద్ధం ప్రపంచయుద్ధం :-

భారతయుద్ధం జరగడానికి పూర్వం, యుద్ధం వల్ల అనేక అనర్థాలున్నాయని, కనుక యుద్ధం జరుగకుండా చూడాలని ఆనాటి పెద్దలు ఎంతో ప్రయత్నం చేశారు. కాని సాధ్యపడలేదు. ద్వాపరాంతంలో, అంటే 5000 సం॥లకు పూర్వం మహాభారత యుద్ధం జరిగింది. ఇది ప్రపంచ యుద్ధంగా చెప్పుకోవచ్చు. అన్ని దేశాలరాజులు ఈ యుద్ధంలో పాల్గొన్నారు. ఈ 20వ శతాబ్దంలో రెండు ప్రపంచయుద్ధాలు జరిగాయి. మొదటి ప్రపంచయుద్ధం 1914-18 సం॥ల మధ్యలో జరిగింది. అది ఇంగ్లీషు వాళ్ళకు జర్మనీ వాళ్ళకు జరిగింది. రెండవది ఆ తరువాత రష్యాకు జర్మనీకి జరిగింది. ఈ రెండు ప్రపంచయుద్ధాల తరువాత చిననచిన్న యుద్ధాలు జరిగాయనుకోండి. అవి కంత ప్రాముఖ్యమైనవి కావు. ఈ రెండు ప్రపంచయుద్ధాలు కూడ భారతదేశానికి వెలుపల జరిగాయి. కాని ద్వాపరాంతంలో జరిగిన ప్రపంచయుద్ధం మన భారతదేశంలోనే జరిగింది. ద్వాపరాంతానికే సంఘస్థితిగతులు మారిపోయాయి. జనులలో వైదిక వ్యవస్థ క్షీణించడం మొదలు పెట్టింది.

1. మొదటి ప్రపంచయుద్ధంలో జర్మనీ,

భారతదేశ్ ధర్మభూమి, కర్మభూమి :-

భారతదేశం వేదాలకు నిలయం ఇది ధర్మభూమి, కర్మభూమి అని పిలువబడింది. ఎందుచేత ? వేదధర్మాలను ఈ దేశవాసులు బాగుగా తెలిసికొని వాటిని ఆచరిస్తూ వచ్చారు. అందుచేత యిది వేదవిహిత కర్మభూమి అనబడింది. వేదధర్మాలనగా వేద విహిత కర్మలే. వాటిని బాగుగా తెలుసుకొని ఆచరిస్తూ వచ్చారు. అందుచేత యిది కర్మభూమి అనబడింది. వేదధర్మాలు బాగుగా ఎఱిగి ఆచరిస్తూ ఉండడం చేత ప్రపంచంలోని అన్ని దేశాల కంటె ఆనాడు భారతదేశం ఉచ్చ స్థితిలో ఉంది. ఇప్పుడు అమెరికా, రష్యాలు పురోభివృద్ధి పొందిన దేశాలనుకోండి. కాని అవి మొన్న మొన్నటివి. ఒకప్పుడు మన దేశం ఉన్నత స్థితిలో ఉన్నది. కాని యిప్పుడు కేవలం పూర్వపు టౌన్నత్యాన్ని చెప్పుకొని సంతోషించవలసిన స్థితి ఏర్పడింది. ఎందుచేత ? వేదధర్మాలు ఈనాడు దేశంలో ఆచరణలో లేవు ! విస్సన్న చెప్పింది వేదమా ? అనే సామెత ఉంది మనకు. అంటే, విస్సన్న చెబితే అది వేదమా ఏమిటి అని. వేదం అంటే మనం అంత ప్రమాణంగా ఎంచుతామన్నమాట ! అటువంటి వేదాలకు ఈనాడు దేశంలో ప్రచారం తగ్గింది. ధార్మిక బుద్ధి తగ్గి పోయింది. ఇతర దేశస్థులు మనలను పాలించగలిగారు.

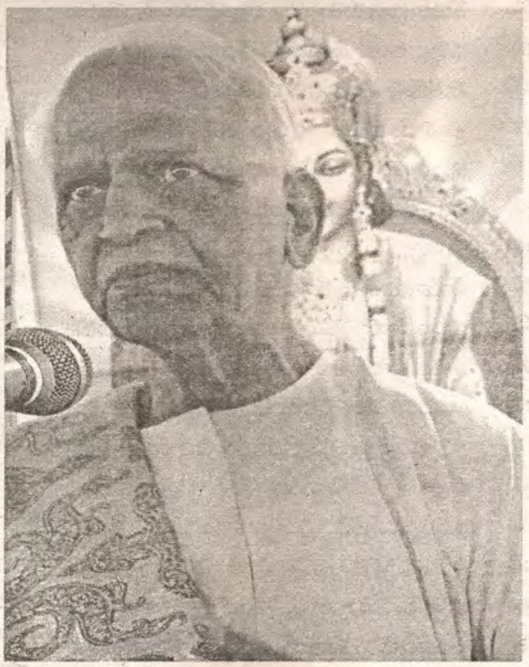

పేదరికం మనవారిని క్రైస్తవులుగా మార్చుతున్నది :-

పరదేశస్థుల పాలనలో వాళ్ళ వేష భూషలు మనం ధరించాం. మన సంస్కృతి క్షీణించింది. ఎవరో కొందరు త్యాగ పురుషులు ప్రయత్నం చెయ్యడం వల్ల ఈనాడు మనం స్వతంత్రులమైనామను కోండి. భారతదేశం వెనకబడి పోతున్నది, ఇతర దేశాలతో బాటు మనం కూడ పురోగమించాలి. అని మన నాయకులు అంటున్నారు. ఆర్థికంగా, సామాజికంగా ఈ దేశాన్ని ఉన్నతిలోనికి తేవాలని నాయకులు ప్రయత్నం చేస్తున్నారు. ఇతర విషయాల్లో వీరు ప్రయత్నం చేస్తున్నా ధార్మికంగా మాత్రం ప్రయత్నం చెయ్యడం లేదు. కాని బీదస్థితిలో ఉన్నది. మన వారి ఆర్థిక హీనతను దరిద్రతను ఆసరాగా తీసుకొని క్రైస్తవులు నిత్యంన్రీకులను ధనాదులు ఇచ్చి మత పరివర్తనం చేస్తున్నారు. ధనాదుల నాశించి బీదవారు అనేకులు మతం మార్చుకుంటున్నారు. ఈదేశంలోనున్న క్రైస్తవీలు అసలు ఎవరు ? వారూ భారతీయులే, మన వారే. ఎవరో కొద్దిమంది విదేశస్థులు తప్ప మిగిలిన క్రైస్తవులందరూ ఈ దేశస్థులే. ఇలా మతం మారగా మిగిలిన వారందరూ తమ్ముతాము హిందువులమని గొప్పగా చెప్పుకుంటున్నారు. హిందు మతోద్ధారకులని చెప్పబడే పీఠాధిపతులు ఈ మతమార్పిడి నరికట్టడానికి తగిన ప్రచారం చేయడం లేదు. వారు సమాన్యజనులలో వైదిక ధర్మాలను

ప్రబోధించడం లేదు. మరి మన ధర్మం ఎలా రక్షించబడుతుంది ?

మానవుడు విశిష్టప్రాణి, ఆలోచనాపరుడు, ప్రగతిశీలుడు :-

మానపూర్వులు ఎలా జీవించారో వారి స్థితిగతులేమిటో, వారెలా ఉన్నతిని బడశారో మన తెలుసుకోవలసి ఉంది. మానవుడు బ్రతకడానికి ఆహారం, వస్త్రం, వసతి యివన్నీ కావాలి. వీనిని తప్పనిసరిగా సంపాదించ వలసిందే, సరే యివన్నీ సంపాదించాము. బ్రతుకుతున్నామనుకోండి, ఏవైనట్టు ? పశువులు, పక్షులు కూడ ఆహారం సంపాదించు కుంటున్నాయి, బ్రతుకుతున్నాయి. మనమూ బ్రతుకుతున్నాము. మరి వాటికి మనకు భేదమేమిటి ? మానవుడు ఆలోచన గలవాడని రాత్రి చెప్పాను. చూడండి, రాత్రివూట ఆరుబయటలో పడు కుంటాము. ఆకాశంలో కోట్లాది నక్షత్రాలు కనబడతాయి. అందులో కొన్ని పెద్దవి కొన్ని చిన్నవి. కొన్ని నిశ్చలంగా ప్రకాశిస్తుంటాయి. కొన్ని మిణుకు మిణుకు మంటుంటాయి. ఈ తేడాలెందుకు వచ్చాయి ? ఈ నక్షత్రాలు ఎలా ఉత్పన్నమైనాయి. అని ఆలోచనాపరుడైన మనుష్యుడు తలంచుతాడు మనుష్యుడు కళ్ళుమూసికొని కాలం గడపడు. మంచి ఏమిటో, చెడు ఏమిటో అతడు తెలుసు కోగలడు. చెడుగు చేయగలడు, మంచి చేయగలడు. మంచి చేయడం తెలిసి కూడ చెడుగు చేయగలడు. అతడు ఏమైనా చేయ గలడు. అందుచేత జంతువులకంటె అతడు విశిష్టుడు. ఒకప్పుడు గంటకు మూడూ మైళ్ళ చొప్పున నడిచి ప్రయాణం చేశాడు మానవుడు. ఈనాడు గంటకు వేలకొలది మైళ్ళు వెళుతున్నాడు రాకెట్లలో, నీటిలో మునిగి రోజుల తరబడి ఉండగలుగుతున్నాడు. కాని ఎన్నో యుగాల నుండి, నీటిలో నివసించుచున్న జలజరములలో మార్పు కనబడడం లేదు. అవి యిప్పటికీ అలాగే ఉంటున్నాయి. ఇపుడు నేను మెల్లగా మాట్లాడుతున్నా. కాని దూరంలో ఉండే మీకు నా మాటలు వినబడుతున్నాయి. ఈమైకు వలన. ఇలా మానవుడు, తన ప్రజ్ఞాసంపత్తితో ఎన్నో యంత్రాలను కనిపెట్టి పురోగమించు తున్నాడు. '**ఆహార నిద్రాభయమైథునాని సామాన్యమేతత్ పశుభిర్నరాణాం**'- 'ఆహారం తీసుకొనడం, నిద్ర, భయము, బిడ్డలను కనడం వీటిలో జంతువులు మనుష్యులు సమానమే'. '**ధర్మోహి తేషాం అధికోవిశేషః**' - కాని వివేచన చేసి మంచి చెడుగులు తెలుసుకోగలడు మానవుడు. ఇది మానవులలోగల విశేషము.

చతుర్విధ పురుషార్థాలను మానవుడు సాధించాలి :-

మానవ జీవనం సాఫీగా నడవడానికి మన పూర్వపు ఋషులు విశిష్ట జీవన పద్ధతిని కనుగొన్నారు. మనుష్యుడు జీవితంలో ధర్మం, అర్థం, కామం, మోక్షం అని నాలుగు (4) పురుషార్థాలు సాధించాలన్నారు వారు. వీనికే చతుర్విధ పురుషార్థములని అంటారు. పురం అంటే శరీరం. ఇందులో ఉండే జీవుణ్ణి పురుషుడందారు. అట్టి జీవుడు పురుషులలోనూ, స్త్రీలలోను ఉన్నాడు. కనుక యిచ్చట పురుషశబ్దం స్త్రీ పురుషులందరికీ వర్తిస్తుంది. కేవలం మగవారికే యీ శబ్దం వాడబడలేదు. కేవలం బ్రతికి చావడంలో విశేషం లేదు. మానవుడు, ఉత్తమంగా జీవించాలి. ఉత్తమంగా జీవించడానికి చతుర్విధ, పురుషార్థాలను సాధించాలి. పురుషార్థములు నాల్గింటిలో ధర్మం మొదటిది. తరువాతవి అర్థం, కామం, మోక్షం, ఇప్పుడున్న మన జీవన విధానం చూస్తే, మనం కేవలం అర్థకామముల కొరకే బ్రతుకుతున్నట్లు కనబడుతుంది. మనకు ధర్మం అంటే ఏమిటో తెలియదు. ధర్మం అంటే మతమని ఎంచి అది పనికి రాదనే వాళ్ళు కూడ ఈనాడున్నారు. ధర్మం అనే పదం కంటె 'విజ్ఞానం' అనే పదం యివా&'ల ఎక్కువమందిని ఆకర్షించుతుంది. విజ్ఞానమంటే సైన్సు, సైన్సు అంటే ఏమిటో తెలియని సామాన్యులకు కూడ అది ప్రీతికరమయినిది. ప్రపంచంలో సైన్సు తప్పకావలసినిదేదీ లేదనే వారు కూడా యివ్వాళ ఉన్నారు.

అందరికీ సుఖం కావాలి. అదెక్కడ ఉంది ?:-

అమెరికా, రష్యా తదితర దేశాలు సైన్సులో బాగా వృద్ధిపొందాయి. మన దేశంలో కూడ యిప్పుడిప్పుడే సైన్సు పెరుగుతూ ఉంది. అయినప్పటికి సైన్సు ఎంత పెరిగినా క్రోధం, లోభం, మోహం, మదం, మాత్సర్యం యిలాంటివి మనలో తగ్గలేదు. ప్రపంచంలో సుఖశాంతులు కరువైనాయి. మన దేశం సంగతి అలా ఉంచండి. విజ్ఞానం పెరిగిన దేశాలలో కూడ మానవులు సుఖశాంతులు పొందుతున్నా రనడానికి వీల్లేదు. చివరకు రష్యాలో కూడ అందరికీ సుఖశాంతులున్నాయనడానికి వీల్లేదు. మానవులందరు సుఖాన్ని కోరతారు. దుఃఖం కోరరు. సుఖం కోరడంలో పార్టీ విభేదాలు లేవు. కాంగ్రెసు వారు, కమ్యూనిష్టులు, సోషలిష్టులు అందరూ దీనిని కోరతారు. ప్రపంచంలో దుః ఖాన్ని రూపుమాపాలని, విశ్వశాంతి కావాలని అన్ని దేశాలూ చెబుతున్నాయి. కాని మానవులను సమూలంగా నాశనం చేయగల మారణాస్త్రాలను వారు తయారుచేస్తూనే ఉన్నారు. ఎందువల్ల ? ఒకరిని చూస్తే యింకొకరికి భయం. ఆత్మరక్షణకై యీ ఆయుధాలను తయారుచేస్తున్నామంటున్నారు.

మన ప్రాచీన మహర్షులు మనుష్యునికి సుఖశాంతులు ఎలా కలుగుతాయో కని పెట్టారు. సుఖం ప్రపంచ పదార్థాలలో లేదన్నారు. ధనం ఉంటే సుఖం కలుగు తుందేమో అనుకుంటే చాలమంది భాగ్య వంతుల్ని నేనెరుగుదును. కానివారు సుఖపడటం లేదు. సుఖమనేది జీవునిలోపల ఉంది. అది వెలుపలి వస్తువులలో లేదు. సుఖం తనలో ఉన్నదని గుర్తించిన వారు అది పొందుతున్నారు. కొద్ది సుఖం జీవునిలో ఉన్నది. పూర్ణ సుఖం దేవునిలో ఉంది. ఆ వస్తువును - దేవుని పొందినవాడు మనకు పూర్ణమైన సుఖశాంతులు కలుగుతాయి.

నిత్యో ఽ నిత్యానాం చేతనశ్చేతనానా
మేకో బహూనాం యో విదధాతి కామాన్
తమాత్మస్థం యే ఽ ను పశ్యంతి ధీరా
స్తేషాం శాంతిః శాశ్వతీ నేతరేషామ్ ॥

-కఠ. 5-13

ప్రపంచములోని పదార్థములన్నియు అనిత్యములు, నాశవంతములు. వానిలో నిత్యపరమాత్మ వ్యాపించి యుండును. చేతనములైన జీవులలో కూడా అతడు నిత్యచైతన్యము గల వాడైయుండి జీవులకు కర్మఫలముల నిచ్చుచుండును. అతడొక్కడే. అట్టి పరమేశ్వరుని ధ్యాన శీలురు తెలిసికొని శాశ్వత శాంతిని పొందుతారు. ఇతరులకా శాంతి లభింపనేరదు అందుకు ధర్మాది చతుర్విధ పురుషార్థములు సంపాదించాలన్నారు. కావున మొదట ధర్మం అంటే ఏమిటో తెలుసుకోవాలి.

ధర్మం వేరు, మతం వేరు :-

ధర్మానికి మారుగా యివ్వాళ మతం వ్యాపకంలోకి వచ్చింది. మతం వేరు, ధర్మం వేరు, మతం, ధర్మం ఒకటి కాదు. "**ధర్మక్షేత్రే కురుక్షేత్రే.....**" అనే శ్లోకంతో గీత

ఆరంభమయింది. క్షేత్రం అంటే భూమి. **"ధర్మక్షేత్రే"** అంటే భూమిలో అని అర్థం. అయితే భూమిలో ధర్మభూమి అధర్మభూమి అని రెండు రకాల భూములు ఉంటాయా ? ఉండవు. ధర్మపదానికి అర్థం ఏమిటి ? ధర్మపదానికి అర్థం చాల విస్తృతంగా ఉంది. రెలిజియన్ (Religion) అనే ఇంగ్లీషు పదం ఉంది. దానికి మతమని అర్థం చెబితే సరిపోతుంది. కాని ధర్మపదానికి కూడా అదే పేరు (Religion) వాడుతున్నాం యీనాడు. అది సరికాదు.

ఈ దేశంలో క్రైస్తవమతం, మహమ్మదీయ మతం, పారసీమతం, బౌద్ధమతం యిలా చాలమతాలున్నాయి. దీనిలో హిందుమతం కూడ ఉన్నది. ('హిందుమతం కూడ' అనే మాటలు ప్రత్యేకంగా సాగదీసి పలికారు శ్రీ గురుదేవులు) ధర్మం, మతం వీటికుండే అసలు అర్థాలు ఈనాడు మనకు తెలియకుండా పోయినవి. సంస్కృత భాష ప్రచారంలో ఉన్నప్పుడు మాటలకు బాగా అర్థం తెలిసేది. సంస్కృత పదాలను సరిగా అర్థం చేసికో లేకపోతే ప్రాచీన విజ్ఞానం మనకు బోధపడదు. మతం అంటే అభిప్రాయం అని అర్థం అది వ్యక్తికి సంబంధినిచినది. ఏమయ్యా నీ మతం ఏమిటి అంటాం. అంటే, నీ అభిప్రాయమేమిటి అని అర్థం. కాబట్టి వ్యక్తి యొక్క అభిప్రాయాన్ని తెలుపుతుంది మతం. క్రైస్తవమతం నుండి క్రీస్తుపేరును తీసేయండి, 'మహమ్మదీయ మతం' నుండి మహమ్మదు పేరును తీసివేయండి. అలాగే శంకర, రామానుజ, బౌద్ధమతాల నుండి, శంకరుడు, రామానుజుడు, బుద్ధుడు అను పేర్లు తీసివేయండి, ఏమి మిగులుతుంది ? కేవలం 'మతం' అనేది మిగులుతుంది. మతం అంటే అభిప్రాయం కదా ? అప్పుడు అభిప్రాయమంటే, ఏం తెలుస్తుంది ? ఏమో తెలియదు. అందువల్లనే ప్రతిమతానికి ఒక వ్యక్తి పేరును జోడించి, క్రైస్తవ మతం, మహమ్మదీయ మతం అని యిలా అంటున్నాము క్రైస్తవమతం క్రీస్తుతో ఆరంభమయింది. బౌద్ధమతం బుద్ధునితో ఆరంభమయింది. మహమ్మదీయమతం మహమ్మదుతో ఆరంభమయింది. ఇలా శంకర, రామానుజ మతాలు ప్రతి మతం ఆయా వ్యక్తులతో ఆరంభమయింది.

ఎవరు క్రైస్తవులు :-

క్రీస్తు అభిప్రాయమును అనుసరించే వాళ్ళు క్రైస్తవులవుతారు. అదీగాక ఈ మతాలలో మతం కంటె మత సిద్ధాంతాల కంటె మతకర్తకే. ప్రాధాన్యం ఉంటుంది. అది ఎలాగంటే క్రైస్తవుడైన ప్రతి ఒక్కడు ఏసుక్రీస్తు దేవుని పుత్రుడని విశ్వసించాలి. ఆయన పరిశుద్ధాత్మ వలన మేరి కన్య గర్భమున పుట్టాడని నమ్మాలి. ఇలా అంగీకరించిన వాడే క్రైస్తవుడవుతాడు. క్రీస్తు చెప్పింది అనుసరించకపోయినా, ఆయన దేవుని కుమారుడని విశ్వసించిన వాడు క్రైస్తవు డవుతాడు. ఒక మారు ఏసుక్రీస్తును శిష్యులడి గారు, ఎవడు, క్రైస్తవుడు ? అని

"And these signs shall follow that believe; In my name shall
They cast out devils, they shall speak with new tongues :
They shall take up serpents and if they drink any deadly thing
it shall not hur them, they shall lay hands on the sick and they shall recover
-Mark 16-17,18

"నమ్మిన వారి వలన ఈ సూచన క్రియలు కనబడును ఏవనగా నానామమున దయ్యములను వెళ్ళగొట్టు మీరు. క్రొత్త భాషలు మాట్లాడుదురు పాములను ఎత్తి పట్టుకొందురు, మరణకరమైనదేది త్రాగినను అది వారికి హాని చేయదు, రోగుల మీద చేతులుంచినపుడు వారు స్వస్థత నొందుదురని వారితో చెప్పెను. --మార్క్16-17,18 "ఎవరికి నామీద విశ్వాసం ఉంటుందో వాడు క్రైస్తవుడు" అన్నాడాయన. మీ మీద విశ్వాసం ఉన్నది అని తెలుసుకోవడం ఎలా ? అంటే, ఆయన నా మీద విశ్వాసం ఉన్నవాడు పాము కరిస్తే చావడు, దయ్యాలను పోగొడతాడు, విషం త్రాగించితే చావడు, తనకు రాని భాష మాట్లాడుతాడు" అంటాడు. మరి ఈనాటి క్రైస్తవులందరూ యిలాంటి వారేనా ? పాముకరిస్తే ఒక వేళ చలిదేశంలో బ్రతుక వచ్చునేమో కాని, మన ఉష్ణదేశంలో పాముకరిస్తే క్రైస్తవుడు తప్పకుండ చస్తాడు. క్రైస్తవుడే కాదు క్రీస్తుకూడ చనిపోతాడు, విషం త్రాగించితే చావడట క్రైస్తవుడు ! ఏదీ తనకు రాని భాష మాట్లాడమనండి ఏ క్రైస్తవుణ్ణయినా చూద్దాం. ఇలా అబద్ధాలు చెప్పిన క్రీస్తును దేవుని కుమారుడని నమ్మిన వాడే క్రైస్తవుడవుడవుతాడు. క్రీస్తు చెప్పిన సిద్ధాంతాలు పాటించవలసిన అవసరం లేదు. దీన్ని బట్టి మతకర్తకు ప్రాధాన్యం ఉందని తెలుస్తుంది.

ఎవరు మహమ్మదీయులు ? :-

అలాగే మహమ్మదీయులు. వారి గ్రంథం ఖురాన్ షరీఫ్. అది వారి పవిత్ర గ్రంథం వారికొక మంత్రం ఉంది. "లా ఇలాహీ ఇల్లిల్లాహ్ మొహమ్మదుర్ రసూలే అల్లాహ్" - అంటే దేవుడు ఒక్కడే మొహమ్మదు ఆయన నుండి సందేశం తెచ్చిన దూత అని దీని అర్థం. మహమ్మదీయుడైన వాడు కొన్ని నియమాలను పాటించాలి. గడ్డం పెంచాలి, రోజుకు 5 మార్లు నమాజు చేయాలి. నలుగురికి తక్కువ లేకుండ పెండ్లి చేసికోవచ్చు. ఇలా కొన్ని నియమాలు పాటించాలి. ఇవన్నీ ఆచరించినప్పటికి అతడు - పైన చెప్పిన ఖురాన్ వాక్యంలో "లా ఇలాహీ ఇల్లిల్లాహ్" అనే భాగాన్ని అంగీకరించి 'మొహమ్మదుర్ రసూలే అల్లాః- మహమ్మదు దేవుని దూత అనే భాగాన్ని అంగీకరించక పోతే అతడు, మహమ్మదీయుడు కాడు కాజాలడు. ఇచట కూడ వ్యక్తికి ప్రాధాన్యత ఉన్నదని మనకు తెలుస్తుంది.

బౌద్ధదెవరు ? :-

అట్లే బౌద్ధమతం "బుద్ధం శరణం గచ్ఛామి', ధర్మం శరణం గచ్ఛామి', సంఘం శరణం గచ్ఛామి" అని బౌద్ధులు అంటారు. సరే నేను ధర్మమును శరణు జొచ్చు తాను అది వ్యక్తికి ఉన్నతిని కలిగించుతుంది గనుక. సంఘమును కూడ శరణు జొచ్చుతాను. ఎందుకంటే వ్యక్తిని విడిచి సంఘం ఉండదు. సంఘమును విడిచి వ్యక్తి జీవించలేడు. ఇట్లీ రెండు సూత్రాలను అంగీకరించి నంత మాత్రముతో నేను బౌద్ధుడుగా అంగీకరించబడను. 'బుద్ధం శరణం గచ్ఛామి' - బుద్ధని శరణు జొచ్చుతున్నాను అని కూడ అంగీకరించాలి. అప్పుడే నన్ను బౌద్ధుడుగా అంగీకరిస్తారు బౌద్ధులు. ఇచట కూడ వ్యక్తికే ప్రాధాన్యత ఉంది.

గీత :- త్రిమతాచార్యుల భాష్యం : ఆచార్యుల ప్రాధాన్యత :-

అలాగే శంకరమతానుయాయులు, రామానుజ మతానుయాయులు కూడా తమ తమ సిద్ధాంతాల కంటె మత ప్రవర్తకులైన వ్యక్తులకే ప్రాధాన్యత యిచ్చారు. 'గీత మా మతం చెబుతుంది' అంటారు. శంకరానుయాయులు ఎందుచేత ? శంకరుల వారు గీత అద్వైతం చెబుతుందన్నారు కాబట్టి.

అలాగే రామానుజ సంప్రదాయకులు గీత మా మతవే చెబుతుంది కారణమేమన రామానుజుల వారు అలాగే చెప్పారు అంటారు. ఇలాగే శ్రీధ్వ సంప్రదాయకులు కూడ గీత ద్వైతం చెబుతుంది కారణం మధ్వాచార్యులు చెప్పినారు కాబట్టి అంటుంటారు. ఇచట భగవద్గీత ద్వైతాద్వైత విశిష్టాద్వైతాను యాయులకు ప్రామాణికమైనా, వారు గీత చెప్పినది అంగీకరించుటకు బదులు, మతాచార్యులు చెప్పిన సిద్ధాంతములే ముఖ్యంగా అంగీకరిస్తారు. కాబట్టి గీత కంటె ఆచార్యులు చెప్పినదే వారికి ముఖ్యం.

ఆచార్యలకు ఆయా సంప్రదాయకులు ఎంతటి ప్రాధాన్యం యిన్తున్నారో తెలియజెప్పడానికి యింకొక విషయం చెబుతాను. ఒక రచయిత ఉన్నాడు. ఆయన వాల్మీకి రామాయణాన్ని అనువాదం చేస్తుంటే అందులో ఒక చోట 'తథాగతుడనే శబ్దం కనబడింది. తథాగతుడంటే అర్థమేమిటో ఆయనకు బోధపడలేదు. నిఘంటువు (Dictionary) తీసి చూస్తే బుద్ధడనే అర్థం ఉంది. గౌతమ బుద్ధునికి తథాగతుడనే పేరు కూడ ఉంది. అప్పుడాయనకు సందేహం కలిగింది. వాల్మీకి రాముడు త్రేతా యుగం నాటి వాడు బుద్ధుడు కలియుగంలోని సంభవమవుతుంది? అని సంశయించాడా రచయిత. ఈయన ఇంగ్లీషు చదివాడు చారిత్రక దృష్టికలవాడు. అతడు ఒక వైష్ణవాచార్యులు వద్దకు వెళ్ళి తన సంశయాన్ని వెలిబుచ్చాడు. అతడు కూడ 'తథాగతణ శబ్దానికి అర్థం బుద్ధుడేనన్నాడు. అయినను మన విశిష్టా ద్వైతులలో ర్పముఖుడు గోవిందాచార్యుల వారున్నారు, ఆయన వ్రాసిన రామాయణ వ్యాఖ్యానంలో ఏమున్నదో చూద్దాం అని పరిశీలించితే అందులోనూ అదే అర్థం ఉంది. గోవిందాచార్యులే ప్రమాణం అని వైష్యవాచార్యులు అన్నారు. ఈ విధంగా ప్రతిమతములోను వ్యక్తికి ప్రాధాన్యత ఉన్నట్లు మనం చూస్తాం.

సిద్ధాంతాల కంటె ఇలా వ్యక్తులకు ప్రాధాన్యత యిచ్చిన నాటి నుండి ప్రపంచంలో మతకలహాలు వస్తున్నాయి. హిందువులు, మహమ్మదీయులు కలహించుకుంటున్నారు. హిందువులు, క్రైస్తవులు మత కలహాలకు లోనవుతున్నారు మా మతం గొప్పదంటే మా మతం గొప్పదని కొట్లాడుకుంటున్నారు. ఇది చూచి చదువుకున్న వారు కొందరు, అసలు మతాలేపోవాలి అంటున్నారు. మతపరంగా కొట్లాటలు, హత్యలు జరుగుతున్నాయి గనుక మతములుండరాదని వాళ్ళ అభిప్రాయం కాని రాజకీయకారణాల చేత అనేక కలహాలు వస్తున్నా వాటిని వారు పట్టించుకోవడం లేదు. ఒక విధంగా చూస్తే అసలు మత కలహాలు రెచ్చగొట్టేది (Politicians - రాజకీయ నాయకులే) మతాల వలన కలహం వస్తే ఒకే క్రైస్తవ మతాన్ని అనుసరించుతున్న ఇంగ్లండు, జర్మనీలకు యుద్ధం ఎందుకు మచ్చింది ? మతాల కారణంగా కూడ కలహాలు వస్తున్నాయి కాదనను, మరి అని ఎందువల్ల వస్తున్నాయి? ఆయా మతాలలోని వ్యక్తులకు ప్రాధాన్యత యిచ్చినందు వల్ల బుద్ధుడు, క్రీస్తు మహమ్మదు వీరంతా భిన్న భిన్న దేశాలలో పుట్టారు. ఆయాకాలాలకు అనుగుణంగా వారు తమ మతాన్ని బోధించారు. వారు ఇప్పుడు లేరు. వారి అనుయాయులు ప్రవక్తల అభిప్రాయాలను మార్చజాలరు. అందువలన తగాదాలు వచ్చుట కనకౌశమున్నది. ఇలా మతశబ్దం వ్యక్తి అభిప్రాయాన్ని తెలిపేది అయినప్పటికి ఈనాడు అది ధర్మానికి పర్యాయపదంగా వాడబడుతూ ఉన్నది. అది సరికాదు మతం వేరు, ధర్మం వేరు. ధర్మం అంటే ఏమిటో యిప్పుడు తెలుసుకుందాం.

ధర్మమంటే :-

ధర్మం అంటే ఏమిటి ? అని గ్రామంలోని ఒక వృద్ధుణ్ణి బ్రాహ్మణ్ణి అడిగితే ఆయన, నేను పట్టణం వెళ్ళినప్పుడు ఎప్పుడూ పైపు నీళ్ళు త్రాగలేదు. ఇంతకాలం నుండి కూడ ఈ ధర్మాన్ని పాటించుతూ వచ్చానంటాడు. ఒక ముసలమ్మను ధర్మమంటే ఏమిటి అని అడిగితే ఆమె నాయనా ! నేను ఎప్పుడూ మడికట్టుకొని వంట వేశాను యిదే ధర్మం అంటుంది. ఇంకొకరిని ధర్మమంటే ఏమిటి ? అని అడిగితే 'నేను అస్పృశ్యతను పాటించుతున్నానండి, మాల వాళ్ళను మండె వాళ్ళను తాకడం లేదు, ఇదే ధర్మం అంటాడు. ఆకలిగొన్నవాడికి అన్నం పెడతాం ఇదే ధర్మం, గుడ్డలు లేని వాళ్ళకు గుడ్డలు ఇస్తాం ఇది ధర్మం. ఇల్లు లేనివాడికి యిల్లు ఇస్తాం ఇది ధర్మం మహమ్మదీయుడు ఒక పండుగ రోజున గోవును చంపడం ధర్మంగా ఎంచుతాడు, అది హిందువు అధర్మంగా తలుస్తాడు. ఒకరికి ధర్మం అయింది. ఇంకొకరికి అధర్మం. చిన్న పిల్లలకు పెళ్ళిళ్ళు చేయడం ఒకప్పుడు ధర్మంగా ఎంచాం. ఈనాడు 25 ఏండ్లు వచ్చినా పెండ్లిండ్లు చేయడం లేదు. ఇవ్వాళ చిన్న పిల్లలకు పెండ్లిండ్లు చేయడం అధర్మంగా భావించు తున్నాం. ఇలా ధర్మపదాన్ని, నానా విధాలుగా వాడుతున్నాం. దీనిబట్టి ధర్మం అంటే ఏమిటో వ్యవహారంలో ఇదమిద్ధంగా నిర్ణయించలేని స్థితిలో ఉన్నాం.

ధర్మ నిర్వచనం :-

అసలు ధర్మం అంటే ఏమిటి ? మన పూర్వులు ధర్మాన్ని యిలా వివరించారు. **'ధారణాద్ధర్మ ఇత్యాహుః ధర్మోధార యతేప్రజాః'-** ఏది ధరిస్తుందో అది ధర్మం. ప్రజలను ఒకటిగా కలిపి ఉంచేదేదో అది ధర్మం." ఇంకా ఇలా అన్నారు.

ధర్మ ఏవహతో హంతి ధర్మో రక్షతి రక్షితః
తస్మోద్ధర్మో న హన్తవ్యోమానో ధర్మోహతే s వధీత్ ॥ --మను 8-15

ధర్మాన్ని ఎవరు చంపుతారో వారినది చంపుతుంది. ధర్మాన్ని ఎవరు రక్షిస్తారో వారినది రక్షిస్తుంది. కనుక ధర్మాన్ని చంపరాదు.

☞ శ్రీ గురుదేవులు ధర్మమును గూర్చి వివరించుతూ ఒకమారు యిలా అన్నారు. - "ధర్మము అందరిని కలిపి ఉంచుతుంది కనుక అది ధర్మము అనబడుతుంది. చూడండి, పిండి ఉన్నది అది పొడిగా ఉన్నప్పుడు చేతితో పట్టుకొని పైకి తీస్తే మీ చేతికి అంతారాదు. కాని ఆ పిండిలో నీరుపోసి పిసికి ముద్ద చేసి పట్టుకుంటే పిండి మొత్తము చేతి వెంట పైకి లేస్తుంది. అంటే నీరు పిండిలోని ప్రతి అణువును కలిపి ఒకటిగా చేసిందన్నమాట. ధర్మము కూడ అలాంటిదే. ప్రజలనందరిని ఒకత్రాటిపై నడిపేది, ఏక మనస్కులై ఉండేట్లు చేసేదేదో అది ధర్మం అనబడుతుంది.

☞ **అద్భిర్ గాత్రాణి శుధ్యన్తి మనః సత్యేన శుధ్యతి।**
విద్యా తపోభ్యాం భూతాత్మా బుద్ధిర్ జ్ఞానేన శుధ్యతి॥ --మను 5-109

తా॥ నీటిచే శరీర బాహ్యా వయదములు, సత్యాచరణముచే మనస్సు, అన్ని విధముల కష్టముల కోర్చి ధర్మమునే యనుష్ఠించుట చేత జీవాత్మ, జ్ఞానము చేత అనగా పృథివి మొదలుకొని పరమేశ్వర పర్యంతము గల పదార్థముల వివేకముచే దృఢనిశ్చయము, బుద్ధియు పవిత్రములగుచున్నవి.

ధర్మం చంపబడినదై మనలనది చంపకుండు గాక ! మనుస్మృతికారుడు ధర్మం పది లక్షణాలు కలిగింది అంటాడు. ఆ పది లక్షణాలేమిటో చూద్దాం.

ధర్మం దశలక్షణాలు కలిగింది :-

ధృతిక్షమా దమో ఽ స్తేయం శౌచ మింద్రియ విగ్రహః ।
దీర్విద్యా సత్య మక్రోధో దశకం ధర్మ లక్షణమ్॥

-మను 6-62

ధృతి : ధైర్యముగా ఉండడం ధైర్యవంతులే ఏదైనా సాధిస్తారు. పిరికివారేమీ సాధించలేరు.

క్షమా : ఓర్పు కలిగి ఉండడం. ఓర్చుకోవడ మంటే తాను బలహీనుడై ఉండి ఎవరైనా తనను తిడితే, కొడితే పడి ఉండడం కాదు. అది పిరికితనమవుతుంది. తనకెవరైనా అపకారం చేసినపుడు మరల వాళ్ళకు ప్రత్యపకారం చేయడానికి తగిన సమర్థత ఉండి కూడ వారికి ప్రత్యపకారం చేయకుండా ఉండడం క్షత్రీ అవుతుంది. దయానందునికి విషం బెట్టించి చంపినారు. ఆ విషం బెట్టింది ఎవరో కాదు. ఆయనకు వంటచేసి పెట్టే బ్రాహ్మణుడే. ఆయన ఇది తెలిసికున్నాడు. వంటవాణ్ణి పిలిచి అడిగాడు, నీవు చేసిన పని ఏమిటి ? అని. అతడు తన తప్పు ఒప్పుకున్నాడు. దయానందుడు స్వయంగా అతనిని దండించగలిగిన సమర్థుడే. తన శిష్యులకు ఎవరికి చెప్పినా అతణ్ణి దండించుతారు. కాని ఆయన అతణ్ణి దండించలేదు. పైపెచ్చు అతనికి రూ.500లు ఇచ్చి నీవు నేపాలు దేశం పారిపో. ఇక్కడ ఉంటే నిన్ను చంపుతారు, నీవు నాకు అపకారం చెయ్యడం అలా ఉంచి లోకానికి అపకారం చేశావు. నేను తలపెట్టిన కార్యములన్నీ ఆగిపోతున్నాయని అంటాడు. చూడండి ఆయనలో ఎంత క్షమ ఉందో ! క్షత్రీ అంటే అది !

దమము : అంతరింద్రియమైన మనస్సును నిగ్రహించి దానిని ధర్మమందు వర్తింప చెయ్యడం అంటే అధర్మ పుటా లోచనలు మనస్సులో కూడ రాకుండ చెయ్యడం దమమవుతుంది.

అస్తేయము : స్తేయము అంటె దొంగతనం చెయ్యడం. అస్తేయమంటె దొంగతనం చెయ్యకుండ ఉండడం.

శౌచము : శుచిగా ఉండడం. జలం చేత (స్నానాదుల చేత) శరీరం శుచిగా ఉంచుకోవడం సత్యమునాచరించి మనస్సును శుచిగా ఉంచుకోవడం, శౌచమనబడుతుంది."

ఇంద్రియ నిగ్రహము : ఇంద్రియములతో పనిచేయకుండ ఉండడం ఇంద్రియ నిగ్రహం కాదు. ఇంద్రియములను చెడగొట్టుకోవడం, ఇంద్రియముల శక్తిని ఉడిగించడం ఇంద్రియ నిగ్రహం కాదు. ఇంద్రియములను శక్తివంత ములుగా ఉంచుకుంటూ వాటితో చెడుగులు చేయకుండా మంచిని ఆచరించడం ఇంద్రియ నిగ్రహ మవుతుంది. ఇంద్రియములు స్వయంగా మంచిని గాని చెడ్డవి గాని కావు. ఉదాహరణకు, కన్ను ఒక ఇంద్రియము. దీనితో వంకర చూపులు చూడవచ్చు, మంచి చూపులు చూడవచ్చు. చెవులున్నాయి. వీటితో చెడ్డ మాటలు వినవచ్చు, మంచి మాటలు వినవచ్చు. అందుచేత ఇంద్రియములతో చెడుగులు చెయ్యకుండా మంచిని చెయ్యడం ఇంద్రియ నిగ్రహం అవుతుంది.

భద్రం కర్ణేభిః శృణుయామ దేవాః
భద్రం పశ్యేమాక్షభిర్యజత్రాః
స్థిరైరంగైస్తుష్టు వాగ్ం సస్తనూభి
ర్వ్యశేమహి దేవహితం యదాయుః ॥

--యజు. 25-21

విద్వాంసులార చెవులతో శుభమును విందుము గాక, నేత్రములతో ఉత్తమ దృశ్యాలనే చూతుము గాక, సుస్థిరములైన శరీరాంగములతో స్తుతులనొనర్చుచు విద్వాంసులకు దేవునికి హితకరములగు కర్మలనొనర్చుచు జీవింతుము గాక !

ధీః : అంటే బుద్ధి, జ్ఞానం కలిగి ఉండడం. విద్యాబుద్ధులు పెంచుకొని జ్ఞానం కలిగి ఉండడం.

విద్య : 'విద్' అంటే జ్ఞానం 'యా' అంటె యిచ్చేది. ఏది జ్ఞానమిస్తుందో అది విద్య. అలాంటి విద్యను సంపాదించాలి.

సత్యం : యథార్థం చెప్పడం చూచినది చూచి నట్లు, విన్నది విన్నట్లు తెలిసినది తెలిసినట్లు చెప్పడం సత్యని అవుతుంది. సత్యం వినడం సత్యం ఆచరించడం.

అక్రోధం : కోపం లేకుండా ఉండడం. కోపం రెండు రకాలు పరులకు అపకారం కలిగించేది ఒకటి ఉపకారం కలిగించేది ఇంకొకటి. పిల్లలు తప్పుచేస్తే వారిని కోపిస్తాం. ఆ కోపం ఉద్దేశ్యం వారికి అపకారం కలిగించడం కాదు. ఇది ఒక రకం కోపం దీనిని మన్యువు అంటారు. ఒక శత్రువుపై చూపించే కోపం అలా ఉండదు. అతనికి కీడు కలిగించాలని చూస్తాం. ఇది యింకొక రకం. కనుక యితరులకు అపకారం కలిగించే కోపం లేకుండా శాంత్యాది గుణాలు కలిగి ఉండడం అక్రోధం అవుతుంది.

ఇవి పది ధర్మలక్షణంగా చెప్పబడ్డాయి. ఇవి ఏ మనుష్యుడైనా ఏమతానికి సంబంధించిన వాడైనా ఆచరించదగ్గవి. వీటిని మనలో పెంచుకొని ఉన్నతులం కావాలి. అలా అందరూ ప్రయత్నం చేస్తే మానవ సంఘంలో సుఖ శాంతులుంటాయి. **'వేదోదితం స్వకం కర్మ నిత్యం కుర్యాదతం ద్రితః'** - వేదం చెప్పేదేదో అది ధర్మం. అట్టి ధర్మాన్ని అలసుడై నిత్యము ఆచరినిచాలి.

ధర్మానికి మరొక నిర్వచనం :-

ఇప్పటికి ధర్మలక్షణాలను కొన్నింటిని తెలుసుకున్నాం. కాని వీటిని బట్టి కూడ ఒకప్పుడు ఏది ధర్మమో, ఏది అధర్మమో ఇదమిద్దమని తెలుసుకోజాలక పోవచ్చు. కావున ధర్మం ఇదమిద్ధమని తెలుసుకోడానికి మనం సరి అయిన లక్షణం తెలుసుకోవలసి ఉంది. చూడండి బంగారం అవునో కాదో పరీక్ష చేయడానికి స్వర్ణకారుని వద్ద ఒరపిడి రాయి అని ఉంటుంది. మీరు అతని దగ్గరకు ఒక పచ్చని కణికను తీసికొని వెళ్ళితే దాన్ని ఒరపిడి రాతిపై సాది, దాని రంగును బట్టి అది బంగారమో కాదో చెప్పేస్తాడు. ఆ విధంగానే ఏది ధర్మమో, ఏది అధర్మమో మనం గుర్తించడానికి ఏదైనా ఉపాయం ఉందా అంటే ఉంది. ప్రాచీనులలో ఒక మహర్షి ఉండేవాడు. ఆయన పంట పొలములలో పడిన విత్తులు ఏరుకొని తిని జీవించేవాడు. కణములు ఏరుకొని తినేవాడు గనుక ఆయన కణాదన్నారు. ఆయనే కణాదమహర్షి, ప్రపంచంలో మొదటగా Atoms Theory (అణుసిద్ధాంతం) కనిపెట్టిన వాడాయన. ఈ ప్రపంచం అంతా కూడ పరమాణువుల చేత నిర్మించబడిందన్నా డాయన. ఆయన్ను శిష్యులడిగారు. 'స్వామీ, ఏది ధర్మమో, ఏది అధర్మమో తెలుసుకోవడానికి మరొక ఉపాయం చెప్పండి', అని. ఆయన ఒక చక్కని ఉపాయం చెప్పాడు. మీరు దీనిని బాగా గుర్తుపెట్టుకోండి.

"యతో అభ్యుదయ నిశ్రేయస సిద్ధిః సధర్మం"

-వైశేషిక దర్శనం. 1-1-2

దేని వలన అభ్యుదయము, నిశ్రేయసము

సిద్ధిస్తుంతో అది ధర్మం అవుతుంది. కాని ఈనాడు 'అభ్యుదయం' మంటే ఏమిటో, 'నిశ్రేయస' మంటే ఏమిటో మనకు తెలియకుండా పోయి నయ్ ప్రాచీనకాలంలో విద్యార్థులకీ మాటలు చెప్పితే వాటి అర్థం చక్కగా గ్రహించే వారు. అభ్యుదయమంటే - ఇహ, పరజన్మలలో మానవుడు నైతికంగా, సాంఘికంగా, ఆర్థికంగా, అన్ని విధాల అభివృద్ధి పొందడం. నిశ్రేయసమంటే - మోక్షం అని అర్థం. అనగా శాశ్వత సుఖశాంతులు పొందడం. కనుక ఏది ఇహపర జన్మలలో మన అభివృద్ధికి తోడ్పడుతూ చివరకు శాశ్వత సుఖాన్ని కలిగిస్తుందో అది ధర్మం అనబడుతుంది.

ఈ లక్షణంతో మనం చేసే పనులు ధర్మమో అధర్మమో తెలిసికొనడం సులభం అవుతుంది. మనకు, సంఘానికి, దేశానికి, ప్రాణి మాత్రమునకు అభివృద్ధిని కలిగించేదేదో అది ధర్మం. అలాకాక హాని కలిగిస్తే అది అధర్మం అవుతుంది. ఈనాడు ప్రపంచంలో విజ్ఞానం బాగా వృద్ధిపొందుతున్నది. ఆ విజ్ఞానం ద్వారా అనేక క్రొత్త వస్తువులు, యంత్రాలు కనిపెట్టబడుతున్నాయి. అవి మానవులకు ఇతర ప్రాణులకు అభివృద్ధి సాధనములైతే వానిని కనిపెట్టడం ధర్మం అవుతుంది. అలాకాక హాని కలిగించేవైతే అది ధర్మం అవుతుంది.

బాల్యవివాహాలు అధర్మం :-

చూడండి, మనం ఇది పరలో ధర్మమను కొని పసిపిల్లలకు పెండ్లిండ్లు చేశాం. అది ధర్మమా ? అధర్మమా ? అలా చేయడం ధర్మమయితే మేలు కలిగించాలి. కాని కలుగ లేదు. పైగా ఎంతో కీడు జాతికి కలిగింది. మన పూర్వులు చిన్న చిన్న పిల్లలను వయస్కులైన పురుషుల కిచ్చి పెండ్లిండ్లు చేసేవారు. ఈ చిన్నపిల్లలు పెద్దవారయే సరికి వయస్కులైన భర్తలు చనిపోయేవారు. అప్పుడు ఆ పిల్లలు వితంతువులయ్యేవారు. నేటి కూడ బాలవితంతువులు చాలమంది దేశంలో కనబడతారు. వయస్సులో ఉన్న ఆడపిల్లలు ఎప్పుడైనా తప్పటడుగు వేస్తే సంగం వారిని వెలివేసేది. వారు గత్యంతరం లేక బ్రతుకు తెరువుకు ఏ వ్యభిచారిణులుగానో తయారయ్యే వారు. లేకపోతే ఏ మహమ్మదీయుడో, క్రైస్తవుడో వారిని దగ్గరకు తీస్తే వాళ్లపాలయేవారు. అందువల్ల జాతికి అనర్థం కలిగింది.

నాకొక సంఘటన తెలుసు. చిన్నతనంలోనే ఒకమ్మాయికి పెండ్లి చేశారు. తల్లిదండ్రులు, తరువాత ఆమె భర్త చనిపోయాడు. వయసు వచ్చిన మీదట ఆ అమ్మాయి తప్పుచేసింది. ఇది తల్లిదండ్రులకు అవమానకరంగా ఉంది. భరించలేక పోయారు. తీర్థయాత్రలకని చెప్పివారు ఆ అమ్మాయిని కాశీకి తీసుకొని వెళ్ళారు. ఆ అమ్మాయిని కాశీలో వదిలిపెట్టి ఇంటికి వచ్చారు. మీ కుమార్తె ఏది అని ప్రక్కవారు అడిగితే, కలరా వచ్చి కాశీలో చనిపోయినిదని చెప్పారు. (సభలో ఆశ్చర్యంతో కూడిన ధ్వనులు వినయ్యెను) చూడండి. ఈ అనర్థములన్నీ ఎందుకు కలిగాయి ? ధర్మం నెపంతో బాల్యవివాహాలు చేశాం. ఈ అనర్థాలన్నీ వచ్చాయి. కనుక బాల్యవివాహాలు చెయ్యడం అధర్మమని తేలింది కదా ?

అసలు స్త్రీ పురుషులకు పెండ్లి చెయ్యడంలో మన ఉద్దేశ్యం ఏమిటి ? '**ప్రజాయైః గృహమేధినాం**' - సంతానం కొరకు పెండ్లి చేస్తాం. ఆ పెండ్లి ఎప్పుడు చెయ్యాలి ? స్త్రీ పురుషులకు యుక్త వయస్సు వచ్చి సంతానం కనే యోగ్యత కలిగినపుడు చెయ్యాలి. అలాకాక ముక్కుపచ్చలారని పసిబిడ్డలకు పెండ్లి చేస్తే వివాహ ప్రయోజనం సిద్ధిస్తుందా ? సిద్ధించదు. పెండ్లి ఎప్పుడు చెయ్యాలి అంటే మనువు చెబుతాడు. **"త్రీణి వర్షాణి ఉదీక్షేత కుమారీ ఋతుమతీ సతీ - మను 9-90"** కన్య రజస్వలయిన అనంతరం 3 సంవత్సరములకు తరువాత సరియైన వరునికిచ్చి పెండ్లి చెయ్యాలన్నాడు. అప్పటికి ఒక వేళ కన్యకు సరియైన వరుడు లభించకపోతే అలాగే ఉండిపోనియ్యండి కాని గుణహీనుడి కిచ్చి వివాహం చెయ్యరాదన్నాడుమనువు.

కామ మామరణా త్తిష్ఠే ద్గృహే కన్యర్తును త్యపి।
నచైవైనాం ప్రయచ్ఛేత్తు గుణహీనాయ కర్హిచిత్॥
--మను. 9-82

స్త్రీ పురుషులు మరణ పర్యంతము బ్రహ్మచారులుగా ఉండినను ఉండవచ్చును గాని, అసదృశులకు - పరస్పర విరుద్ధ గుణ కర్మ స్వభావములు గలవారికి వివాహము ఎన్నటికిని కాకూడదు. పైన చెప్పిన సమయ మునకు పూర్వముగాని, అసదృశులకు గాని వివాహమగుట యోగ్యము కాదు. వేదం ఏమి చెప్పిందో చూడండి.

బ్రహ్మచర్యేణ కన్యాయువానం విందతే పతిం॥

అథర్వ. 3-24-11-18

కన్య బ్రహ్మచర్య వ్రతాన్ని పాలించి యుక్త వయస్సు వచ్చిన తరువాత యువకుని వివాహ మాడుతుంది అంటుంది. ఇలా చెయ్యడం ధర్మమవుతుంది. కాని ఈ ధర్మాలను మరచి మనం ఒకప్పుడు పసిపిల్లలకు పెండ్లిండ్లు చేశాం. వాటి వల్ల వచ్చే అనర్థాలను అనుభవించాం. కనుక బాల్యవివాహాలు చెయ్యడం అధర్మం అవుతుంది.

సహగమన దురాచారం అధర్మం :-

ఒకప్పుడు గహగమనం (చనిపోయిన భర్త శవంతో పాటు బ్రతికి ఉన్న భార్యను చితిలో పడవైచి దహనం చెయ్యడం) ధర్మమని భావించి ఆచరించేవారు. బెంగాలు దేశంలో యిది ఎక్కువగా ఉండేది. ఒక్కో వ్యక్తి 10 మంది స్త్రీలను పెండ్లి చేసేకునేవాడు. అటు వంటప్పుడు భర్త చనిపోతే వారి గతేంకాను. ఈ సహగమన దురాచారం వల్ల భర్త చనిపోయినపుడు బ్రతికి ఉన్న ఆ భార్యలను కూడ బలవంతంగా భర్త శవంతో పాటు తగులబెట్టే వారు. ఆ స్త్రీల ఆక్రందనలు హృదయ విదారకంగా ఉండేవి. ఈ దుష్ట సంప్రదాయానికి ఎందరో స్త్రీలు నిండు ప్రాణాలతో బలి అయ్యేవారు. తరువాత శ్రీరాజారాం మోహనరాయ్ వచ్చి ఆ దురాచారాన్ని మాన్పించాడనుకోండి. కనుక ఈ అనర్థం ఎందువల్ల కలిగింది ? సహగమం కూడ ధర్మమనుకొని ఆచరించినందువల్ల.

అంటరాని తనం అధర్మం :-

ఈ దేశంలో హిందువులు అంటరానితనం ధర్మంగా పాటించుతూ వచ్చారు. ఇప్పటికీ పాటించుతున్నారు. అంటరానితనం ధర్మమా ? అధర్మమా ? మన సాటి వారిని కొందరిని మాలమాదిగలని అంటరాని వారని నిరసించాము. వారిని దూరంగా ఉంచాం. తత్ఫలితంగా వారు చాలమంది మన మతం వదిలిపెట్టి క్రైస్తవులయినారు. క్షుద్రజంతువు లయిన పిల్లుల్ని, కుక్కల్ని మన ఇంటిలో యథేచ్ఛగా తిరుగనిస్తాం. వాటిని ఒడిలో కూర్చుండ బెట్టుకొని ముద్దాడుతాం. కాని సాటి మానవులను అంటరానివారని ఎంచి వారిని తాకనుగూడ తాకం. వారిని ఇండ్లలోనికి రానివ్వం. ఇప్పటికీ యిది పాటించుతున్నాం. ఎందువల్ల ఈ అస్పృశ్యతను పాటించాం ? సంఘంలో ధర్మాధికారులనబడేవారు మనలను ఇది ధర్మమని చెప్పిమోసగించారు. వారు

మనకు సరియైన ధర్మాన్ని బోధించలేదు. సరిఅయిన ధర్మం మనకు బోధించి ఉంటే యిలా ఆచరించం. పోనీ శాస్త్రాలలో ఎక్కడయినా మనుష్యుని తాకడం అధర్మం అని ఉన్నదా ? చూపించమనండి. ఈ విషయం చాలమంది ఖాలజీ చేసి అడిగారు. కాని ఎవ్వరూ ఈ అస్పృశ్యతా విధానం శాస్త్రాలలో ఉన్నట్లు చూపించ లేకపోయారు. పోనీ మాలమాదిగలు తదితరులు మాంసం తింటున్నారని చెప్పి మీరు వాళ్ళను తాకడం లేదంటారా ? మాంసం బ్రాహ్మణులు తినడం లేదా ? మరి వారినెందుకు తాకుతున్నారు. నేను చెప్పగూడదు కాని మనకొక గొప్పనాయకు డున్నాడు. ఆయన మన దేశపు ఉన్నత పదవిలో వీండేవాడు. ఆయన బ్రహ్మణుడు. కాని ఆయనకు ప్రతిరోజు ఒకకోడిని వండి సిద్ధం చేయవలసి వచ్చేది (సభలో చిరునవ్వులు) పోనీ మురికిగా ఉండటం చేత మాలమాదిగలను తాకడం లేదంటారా ? బ్రాహ్మణులలో ఇతరులలో మురికిగా ఉండేవారు లేరా ? మరి వారినెందుకు తాకుతున్నారు మీరు ? ఈ విధంగా మనం ధర్మం నెపంతో అధర్మాలను ఆచరించడం వల్ల సాటి హిందువులెందరో ఈనాడు క్రైస్తవులయినారు. దీనివల్ల సంఘానికి హాని కలిగింది. కలుగుతుంది. కలుగుతుంది సంఘానికే కాదు దేశానికి కూడ.

స్త్రీలు, శూద్రులు వేదాలు చదువరాదనడం, ఓంకారం జపించరాదనడం అధర్మం :-

ఇవాళ ఆచార్యులు కొందరు, శూద్రులు, స్త్రీలు వేదాలు చదువరాదు 'ఓం' అనే భగవన్నామాన్ని కూడ స్మరించరాదు, అది అధర్మం అని అంటున్నారు. అలాగే విశ్వహిందు పరిషత్తు వారు కూడ చెబుతున్నారు. ఇలాంటి వారేనా, హిందుమతాన్ని ఉద్ధరించేది ? స్త్రీలు, శూద్రులు, వేదాలు చదువరాదని, భగవన్నామమైన 'ఓం' కారాన్ని స్మరించరాదని ఏ వేదంలో ఉందో చూపమనండి. అది అధర్మమని ఏశాస్త్రంలో చెప్పబడిందో చూపమనండి (కొంచెం స్వరం పెంచి) ఆస్తికులమైన మనమే ప్రణవంతో (ఓం కారంతో) భగవంతుణ్ణి స్మరించడం, భగవత్ప్రసాదితములైన వేదములను స్త్రీ, శూద్రులు చదవడం అధర్మమని చెబితే యింక ధర్మం ఏమిటి ? ఎందువల్ల ఈ అనర్థాలు వచ్చాయి సంఘంలో ? ధర్మమంటే ఏమిటో, అధర్మమంటో ఏమిటో సరిగా తెలియనందు వల్లనే కదా ?

యజ్ఞాదులలో, దేవీదేవతలకు పశువులను బలియివ్వడం అధర్మం :-

ధర్మమనుకొని నోరులేని మూగ పశువులను దేవిదేవతలకు బలియిస్తున్నారు పూర్వం. ఇప్పటికి అక్కడక్కడ అవి జరుగుతున్నాయను కోండి. పశువులనే కాదు, కన్న బిడ్డలను కూడ తల్లిదండ్రులు స్వయంగా దేవిదేవతలకు బలియిచ్చిన సంఘటనలు ఇటీవల వెలుగులోకి వచ్చాయి. కొందరు క్రూరులు తమ బిడ్డలను చంపలేక ఇతరుల పిల్లలను తెచ్చి దేవతలకు బలియిస్తున్నారు. ఎంతఘోరమో చూడండి ! ఈ మధ్య ఈ విషయాలు పార్లమెంటులో కూడ చర్చకు వచ్చి పెద్ద అలజడి జరిగింది. ఇలాంటి ఘోరకృత్యాలు ధర్మం పేరుతో చేస్తున్నారు ! యజ్ఞం పేరుతో జంతుబలి యివ్వడం ధర్మమనుకొని బ్రాహ్మణులు అలా చేశారు, చేస్తున్నారు. నోరులేని పశువులు లక్షలాది వధింపబడినాయి. ఇప్పటికీ ఆంధ్రదేశంలో సోమయాజులు కొందరు అప్పుడప్పుడు యిలాంటి యజ్ఞాలు చేస్తూ జంతువులను చంపడం జరుగుతున్నది. కొందరు బుద్ధిమంతులు యజ్ఞంలో పశువులను చంపడం ధర్మం ఎలా అవుతుంది. అని యాజ్ఞికులను ప్రశ్నించారు. అందుకు సమాధానంగా యాజ్ఞికులన్నారు. యజ్ఞంలో చంపబడిన జంతువును మేం స్వర్గానికి పంపుతున్నాం అందుచేత అది ధర్మమే అన్నారు. ఉహూం అలాగా ! అలా అయితే జంతువుకు మారుగా మీతండ్రినే యజ్ఞంలో చంపి ఆయననే నేరుగా స్వర్గానికి పంపటం మంచిది కదా?☙ అని ఎదురు ప్రశ్న వేశారు వారు (సభలో నవ్వులు) దనికేమీ జవాబులేదు. ఎందువల్ల ఇలాంటి అనర్థాలు జరుగుతున్నాయి ? ధర్మమంటే ఏమిటో అధర్మమంటే ఏమిటో తెలియక పోవడం చేత కదా ? కనుక ధర్మాధర్మములను గూర్చి బాగుగా విచారించి తెలుసుకొని అధర్మకార్యాలను వదిలి ధర్మకార్యాలు చేయాలి. ఇప్పుడు ధర్మమంటే ఏమిటో అధర్మమంటే ఏమిటో అధర్మమంటే ఏమిటో మీకు బాగా అర్థమయి ఉంటుంది ఇక తరువాత విషయానికి వద్దాం.

కురుక్షేత్రం ధర్మక్షేత్రం :-

ధర్మక్షేత్రే కురుక్షేత్రే సమవేతా యుయుత్సవః ।
మామకాః పాండవాశ్చైవ కిమకుర్వత సంజయ॥ -గీత 1-1

'ధర్మక్షేత్రే కురుక్షేత్రే' అనే ఈ శ్లోకంతో గీత ఆరంభమయింది. దీని అర్థమేమిటి ? ఓ సంజయ ! ధర్మక్షేత్రమయిన కురుక్షేత్రము నందు యుద్ధం చేయాలనే కోరికతో చేరిన నా కుమారులైన దుర్యోధనాదులు, పాండురాజు కుమారులైన ధర్మరాజాదులు ఏం చేశారు ? అని ధృతరాష్ట్రుడు సంజయుణ్ణి అడుగుతాడు. యుద్ధానికి వెళ్ళిన వాళ్ళు యుద్ధం చెయ్యక మరేం చేస్తారు ? ధృతరాష్ట్రుడు గ్రుడ్డివాడు. అతడు వేసిన ప్రశ్న కూడ గ్రుడ్డిగానే కనబడుతుంది. పైకి చూస్తే. కాని అతడు వేసిన ప్రశ్నలో ఒక విధమైన అర్థముంది.

ఢిల్లీ దగ్గర నుండి అంబాల వరకు వీండే క్షేత్రం కురుక్షేత్రం అనబడింది. అక్కడ యజ్ఞయాగాదులు చేసి అనేక ధర్మకార్యాలు నిర్వర్తించబడ్డాయి. అందువల్ల అది ధర్మక్షేత్రమనబడింది. అటువంటి ధర్మక్షేత్రమైన కురుక్షేత్రానికి వెళ్ళినందువల్ల అచటి వాతావరణ ప్రభావముచే దుర్యోధనాదుల బుద్ధిమారి యుద్ధం చేయడం మానుకున్నారేమో అని ధృతరాష్ట్రుడు సంశయించినట్లు కనబడుతుంది. అందుకే అతడు ఈ ప్రశ్న వేశాడు. (తక్కువ స్వరంతో) చూడండి ఒక్కొక్క ప్రదేశంలో మనస్సు ఒక్కో విధంగా ఉంటుంది. వంట ఇంటిలోనికి వెళితే పదార్థములు తినాలనిపిస్తుంది. పడక గదికి వెళ్ళితే కాసేపు అలా పడుకుందాం అనిపిస్తుంది. ఏపేకాట (Playing Cards) ఆడే దగ్గరకో వెళ్ళితే మనం కూడ కాసేపు ఆడితే బాగుండునని పిస్తుంది. ఈ విధంగా ఒక్కొక్క చోట ఒక్కొక్క వాతావరణం ఏర్పడుతుంది. దానిని ఇంగ్లీషులో Atmosphere (పరిసర ప్రభావం) అంటాం. అలాగే తన కుమారుడు దుర్యోధనుడు, ఎంత చెడ్డవాడైనప్పటికి, అచ్చటి క్షేత్ర మహిమ వల్ల ఏమైనా మనసు మార్చుకొని యుద్ధం చేయడం మానుకున్నాడేమో అనే సంశయంతో, యుద్ధక్షేత్రానికి వెళ్ళిన తనవారు,

---

☙ పశుశేచనిహతః స్వర్గం జ్యోతి ష్టోమే గమిష్యతి ।
స్వపితా యజమానేన తత్ర కస్మాన్న హింస్యతే॥
-సర్వదర్శన సంగ్రహేచార్వాక దర్శనం

తా॥ యజ్ఞంలో పశువులను జంపి హోమం చేయడం వల్ల అవి స్వర్గానికి వెళితే ఆయజమాని తన తండ్రి మొదలగు వారిని చంపి హోమం చేసి వారిని ఏల స్వర్గానికి పంపరు ?

పాండుపుత్రులు ఏమి చేశారని సంజయుణ్ణి ప్రశ్నించుతాడు ధృతరాష్ట్రుడు. ఇదే ధృతరాష్ట్రుని అభిప్రాయంగా మనం గుర్తించవచ్చు.

ఆలోచించి చూస్తే ఈ యుద్ధం జరగడం ధృతరాష్ట్రునికి కూడ యిష్టమేనేమోనని పిస్తుంది. ఎందుచేతనంటే - దుర్యోధనుడు యువరాజు తండ్రికి లోబడిన వాడు. ధృతరాష్ట్రుడు తలచుకుంటే దుర్యోధనుని వారించి యుద్ధం జరుగకుండ చూడగలిగే వాడే. కాని పుత్రప్రేమ కొద్ది అతడది చేయలేదు. భీష్మద్రోణాది మహామహులు తమ పక్షాన ఉన్నారు. విజయం తమకే సిద్ధిస్తుందని కూడ అతడు ఎంచి ఉండవచ్చు. అందుచేత ఈ యుద్ధం జరగడం ధృతరాష్ట్రునికి ఇష్టమేనేమో అనిపిస్తుంది.

సంజయ ఉవాచ :-

దృష్ట్వాతు పాణ్డవానీకం వ్యూఢం దుర్యోధనస్తదా।
ఆచార్యముపసంగమ్య రాజావచన మబ్రవీత్ ॥
పశ్యైతాం పాణ్డు పుత్రాణామాచార్య మహతీని చమూమ్।
వ్యూఢాం ద్రుపదపుత్రేణ తవ సిష్యేణ ధీమతా॥
అత్ర శూరా మహేష్వాసా భీమార్జున సమాయుధి।
యుయుధానో విరాటశ్చ ద్రుపదశ్చ మహారథః॥
ధృష్టకేతు శ్చేకితానః కాశిరాజశ్చ వీర్యవాన్।
పురుజిత్కున్తిభోజశ్చ శైబ్యశ్చ నరపుంగవః॥
యుధామన్యశ్చ విక్రాన్త ఉత్తమౌజాశ్చ వీర్యవాన్।
సుభద్రో ద్రౌపదేయాశ్చ సర్వ ఏవ మహారథాః॥
అస్మాకం తు విశిష్టా యే తాన్నిబోధ ద్విజోత్తమ
నాయకా మమసైన్యస్య సంజ్ఞార్థం తాన్ బ్రవీమి తే।
భవాన్ భీష్మశ్చ కర్ణశ్చ కృపశ్చ సమితిఞ్జయః।
అశ్వద్ధామా వికర్ణశ్చ సౌమదత్తి స్తథైవ చ॥
అన్యే చ బహవశ్శూరా మదర్థే త్యక్తజీవితాః।
నానాశస్త్రప్రహరణా స్సర్వే యుద్ధ విశారదాః॥
అపర్యాప్తం తదస్మాకం బలం భీష్మాభిరక్షితమ్।
పర్యాప్తం త్విదమేతేషాం బలం భీమాభిరక్షితమ్॥

-గీత 1-2-10

(తరువాత శ్రీ గురుదేవులు 'దృష్ట్వాతు పాండవానీకం-- అనే శ్లోకం మొదలు అపర్యాప్తం తదస్మాకం బలం భీష్మాభిరక్షితమ్ ---' అనే శ్లోకం వరకు సమాన్యార్థం చెప్పి అశ్లోకముల తాత్పర్యం యిలా వివరించారు.)

ధృతరాష్ట్రుడడిగిన ప్రశ్నకు సమాధానంగా సంజయుడిలా చెబుతున్నాడు. రాజైన దుర్యోధనుడు యుద్ధం చేయడానికి అనువుగా నిలువబెట్టిన పాండవుల సేనను చూచి తమకు విలువిద్య నేర్పిన ద్రోణాచార్యుని వద్దకేగి ఈ క్రింది విధంగా ఆయనతో అన్నాడట.

ఓ ఆచార్య ! ఈ పాండవుల సేన ఎంత గొప్పదో చూడండి. ఈ సేనను ద్రుపదుని కుమారుడు, నీకు శిష్యుడు బుద్ధిమంతుడైన దృష్టద్యుమ్నుడు వ్యూహ బద్ధంగా విజయానికి తగిన పన్నుగడతో నిలువ బెట్టియున్నాడు.

ఈ సేనయందు యుద్ధంలో పాల్గొనవచ్చిన వారిలో భీమార్జునులకు సమలైన గొప్పధనుర్ధారులు ఎందురో ఉన్నారు. వారిలో యుయుధానుడు - సాత్యకి, విరాటుడు ద్రుపదుడు, దృష్టకేతుడు, చేకితానుడు, కాశీరాజు అనేవారు వీర్యవంతులు, పురుజిత్తు, కుంతిభోజుడు, శైబ్యుడు పరాక్రమశాలియైన యుధామన్యుడు, శక్తిశాలియైన ఉత్తమౌజుడు, సుభద్రాపుత్రుడభిమన్యుడు, ద్రౌపదీ పుత్రులు (ఉపపా?ండవులు) ప్రతి విందుడు, శ్రుతసోముడు, శ్రుతకీర్తి, శతానీకుడు, శ్రుతసేనుడు వీరందరూ మహారథులే.

వీరు గాక ధర్మరాజు మొదలైన పాండవులు, పాండ్యరాజు, ఘటోత్కచుడు, మొదలైన వారనేకులు యిక్కడ లెక్క పెట్టబడలేదు. వారు కూడ మహారథులే. వారు ప్రసిద్ధులవడం చేత వారినిక్కడ పేరు పెట్టి లెక్కవేయలేదు.

పైన లెక్కింపబడిన వారు అందరూ మహారథులే కాక అతిరథులు కూడ అని భావింప తగినవారు. కాని వీరిలో అర్ధరథుడని కాని, రథుడని కాని ఎంచదగిన వారొక్కరు కూడలేరు.

మహారథుడు, అతిరథుడు అంటే :-

పదివేలమంది ధనుర్ధారులతో ఒక్కడు యుద్ధం చేయగలవాడై శస్త్రములలో నేర్పరి అయినవాడు మహారథుడనబడతాడు. అనేకులైన ధనుర్ధారులతో ఒక్కడు యుద్ధం చేయగలిగిన శస్త్రాస్త్రప్రవీణుడు అతిరథుడున బడతాడు. ఒక్క ధనుర్ధారితో యుద్ధం చెయ్యగలవాడు రథికుడు అని అంతకంటె తక్కువ సామర్థ్యం కలవాడు అర్ధరథుడని పిలువబడతాడు.

ఇది అంతా చెప్పి, తాను పాండవులకు భయపడుతున్నాని ద్రోణాచార్యుడను కుంటాడేమో అని తలచి తనలోని భయాన్ని కప్పిపుచ్చుటకేమో అన్నట్లుగా దుర్యోధనుడిలా అంటున్నాడు.

ఓ బ్రాహ్మణోత్తమా ! మన పక్షాన యుద్ధం చెయ్య వచ్చిన నాయకులను మీ స్మరణకు తెస్తున్నాను. మీకు తెలియని దేమీలేదు. అయినా నిశ్చితముగ ఒక మారు తెలుసుకోండి అంటాడు. ఆయన చెప్పకపోతే ఈయనకు తెలిదా ఎవరెవరు తమవైపు ఉన్నారో !

మొదట 'భవాన్' - మీరు, భీష్ముడు, కర్ణుడు, యుద్ధంలో జయం తేగల కృపాచార్యుడు, అశ్వత్థామ, వికర్ణుడు, సోమదత్తుని పుత్రుడు భూరిశ్రవుడు, వీరంతా మన పక్షాన గల నాయకులు. ఇలా శ్రేష్ఠులను ముందు లెక్కబెట్టి యింకా పలువురు శూరులు నాకోసం ప్రాణాలు త్యజించడానికి సిద్ధంగా ఉన్నారు. వారందరు నానా విధములైన శాస్త్రాస్త్రాలతో యుద్ధం చేయగలవారు, యుద్ధ విశారదులు అని దుర్యోధనుడు చెప్పాడు.

అయినప్పటికి భీషుని చేత రక్షింపబడే మన సైన్యం 'అపర్యాప్తమై' ఉంది, అటు పాండవసేన భీముని రక్షణలో 'పర్యాప్తమై' ఉంది అన్నాడు దుర్యోధనుడు. ఇచట వాడిన అపర్యాప్త పదానికి రెండు విధాలుగా కూడ అర్థం చెప్పుకోవచ్చు. అపర్యాప్తమంటే చుట్టు ముట్టి ఆక్రమింప వీలుకానిదని ఒక అర్థం. శత్రువుల నెదుర్కొన చాలినంతగా లేదని మరొక అర్థం భీముని చేత రక్షింవబడే పాండవసేన పర్యాప్తం - పర్యాప్తమంటే చుట్టు ముట్టి ఆక్రమింపదగినదని ఒక అర్థం. శత్రువుల నెదుర్కొన చాలినంతగానున్నదని మరొక అర్థం. ఇలా ద్వ్యర్థపదములను (రెండర్థాలు వచ్చే పదాలను) తన భయమును కప్పి పుచ్చుకొన దుర్యోధనుడు వాడినాడు. తన సేన పాండవసేన కంటే గఱప్పుడైనా, భయాన్ని బట్టి దుర్యోధనునికి తన సేన తక్కువదిగా కనబడవచ్చు. ఇచట 'అపర్యాప్తం' మనకిది తెలుపుతుంది (చేతి గడియారం చూస్తూ) సరే, ఇప్పుడు ఏడు ముప్పావు గంట అయింది. ఈ రోజుకు ప్రసంగం చాలిద్దాం. దుర్యోధనుడు యుద్ధ విశారదులలో మొట్టమొదటగా, ద్రోణుని కంటె గొప్పవాడైన భీష్ముణ్ణి లెక్కించకుండ ద్రోణుణ్ణి ఎందుకు లెక్కించాడో, ఆ వివరాలన్నీ రేపు చెప్తుతాను.

Foot Note :- వ్యూహంమంటో యుద్ధ క్షేత్రంలో సేనలను నిలువబెట్టే పద్ధతి. పద్మవ్యూహమని, సూచీ వ్యూహమని, గరుడ వ్యూహమని, ఇలా కొన్ని పద్ధతులున్నాయి. యుద్ధక్షేత్రంలో ఆ విధంగా సేనను నిలువ బెట్టడం వల్ల విజయం సులభంగా సిద్ధిస్తుందని అలా వ్యూహరచన చేస్తారు.

ఎందువల్ల మహాత్ముడు ?

- ఎం.వి.ఆర్. శాస్త్రి

అర్ధరాత్రి 2 గంటలు. గాఢనిద్రలో ఉండగా హఠాత్తుగా మెలకువ వచ్చింది. పక్కమీద ఏదో గీరుతున్న చప్పుడు. బయట ఏదో మూలుగు, కళ్లు తెరిచిచూస్తే కిటికీ బయట పెద్దపులి. పగిలిన కిటికీ అద్దంలోనుంచి పంజాలోపలికి పెట్టింది. దాన్ని వెనక్కి తీసుకోవడం చేతకాక గాండ్రు గాండ్రుమంటున్నది. పంజాతో మంచం తలవైపు బరబర గీరుతున్నది. మరికొద్ది అంగుళాలు ముందుకు జరిగి పంజాతో తల ఇరికించుకుని ఉంటే...!?

ఎంత గుండెధైర్యం కలవాడికైనా ఒళ్లు ఝల్లుమంటుంది. సాధారణంగా ఆ స్థితిలో ఎవరున్నా చెంగున బయటికి దూకి బతుకు జీవుడా అని పారిపోయేవారు-బాబోయ్ పులి అని కేకలు పెడుతూ.

మున్షీరాం ఏమి చేశాడు? నదురూబెదురూ లేకుండా తాపీగా కష్టపడి పంజా వెనక్కి తీసుకునేందుకు పులికి సాయంచేశాడు. అది మూలుగుతూ చీకట్లో ఎటో వెళ్లిపోయింది. మున్షీరాం ఆవలించి మళ్లీ ఆ పక్కమీదే నిద్రలోకి జారాడు. ఆరోజే కాదు. ముఖ్తార్‌గా ఉండగా హిమాచల్‌లోని సుకేత ప్రిన్సిపాలిటీకి ఏదో పనిమీద వెళ్లి ఊరు చివర విసిరేసినట్టుండే హవేలీలో బసచేసినన్ని రోజులూ ఆ గదిలోనే నిద్రపోయేవాడు.

ప్రమాదం పొంచివున్నదని తెలిస్తే ఎవరైనా వెనక్కి తగ్గుతారు. కొద్దిమంది మాత్రం ప్రమాదాలను లెక్కచేయక ముందుకు సాగుతారు. స్వామిశ్రద్ధానందది రెండో రకం. అది ప్రాణమంటే లెక్కలేని వెర్రి తెగువకాదు. తన మీద, తన ఆశయాలమీద, తనకు సర్వదారక్షగా ఉన్న దైవశక్తిమీద ఆయనకున్న అచంచల విశ్వాసం అలాంటిది.

1918 నాటి మాట. గఢ్వాల్ ప్రాంతంలో భయానకమైన కరువు వచ్చింది. స్వామీజీ 'భారతీయ సేవాసమితి' పేరిట కొంతమంది కార్యకర్తలను సమీకరించి గఢ్వాల్‌కి వెళ్లి సహాయక చర్యల్లో నిమగ్నమయ్యాడు. రోజూ కాలినడకన 18,20 మైళ్లు నడిచి గ్రామాల్లో పనిచేస్తూండేవాడు. అదే సమయాన ఆయనకు చెందిన 'సద్ధర్మ ప్రచారక' పత్రికలో గఢ్వాల్ ప్రాంతంలోని కొన్ని సామాజిక చెడుగులను అధిక్షేపిస్తూ ఒక వ్యాసం వచ్చింది. స్థానిక కులీనులకు అది ఒళ్లుమండించింది. అంతా కలిసి శ్రద్ధానందస్వామి భరతం పట్టాలని, తగిన శాస్తి చేసి ఊరినుంచి బహిష్కరించాలని ప్లానువేశారు. దానికోసం ఆ సాయంత్రం బహిరంగసభ పెట్టారు.

రోజంతా ఊళ్ల వెంబడి నడిచి, శ్రమపడి సాయంత్రానికి స్వామీజీ గఢ్వాల్ తిరిగి వస్తూండగా కొంతమంది శ్రేయోభిలాషులు ఎదురు వెళ్లి ఊరి పొలిమేరలోనే ఆయనను

ఆపేశారు. 'మిమ్మల్ని తక్షణం ఊరినుంచి బహిష్కరించాలంటూ ఇంకాసేపట్లో పెద్దసభ పెట్టబోతున్నారు. మీరు కంటపడితే కొడతారు. వెళ్లకండి' అని వారించారు.

స్వామీజీ ఎవరిమాటా వినకుండా ఏకాఏకి సభాస్థలానికి వెళ్లి వేదికమీద ఒక్కడే ప్రశాంతంగా కూచున్నాడు. అప్పటికింకా సభ మొదలుకాలేదు. ఎవరినోటా మాట రాలేదు. విరోధుల మొగాలు మాడిపోయాయి.

చెదరని ఆ ధైర్యమే 1919 రౌలట్‌బిల్లు సత్యాగ్రహంలో ఢిల్లీ చాందినీచౌక్ టౌన్‌హాలు ముందు తనపై తుపాకులు ఎక్కుపెట్టిన సాయుధ బ్రిటిష్ సోల్జర్లకు ఛాతిని చూపించి, 'కాల్చండిరానన్ను' అని స్వామిని గర్జింప జేసింది.

శ్రద్ధానందను తెల్లదొరతనం ఎంత ప్రమాదకరంగా పరిగణించేదనడానికి 1922 చివరలో అమృత్‌సర్‌లో ఆయనని అరెస్టు చేసిన తీరు చక్కని ఉదాహరణ.

ఆ సమయాన అక్కడ 'గురు కా బాగ్' ఆందోళన ఉధృతంగా సాగుతున్నది. స్థానిక గురుద్వారాకు చెందిన కొంత భూమికి సంబంధించి ప్రభుత్వానికీ, అకాలీ సిక్కులకూ నడుమ ఘర్షణ తలెత్తింది. తెల్లవారి దమనకాండకు నిరసనగా సిక్కుల శాంతియుత సత్యాగ్రహంలో వందలమంది అరెస్టు అయ్యారు. అకాలీల న్యాయబద్ధపోరాటానికి మద్దతుగా స్వామి శ్రద్ధానంద అమృత్‌సర్ చేరుకున్నాడు. ఆయన వస్తున్నాడని తెలియగానే పంజాబ్ గవర్నర్ ఓ'డయర్ సైనిక అధికారులకు ఇచ్చిన ఆజ్ఞ ఇది: స్వామి శ్రద్ధానంద వచ్చీ రాగానే అరెస్టు చేసి కాళ్లకు చేతులకు సంకెళ్లు వేసి బంధించాలి. నగరమంతటా రెండువేల మంది సాయుధ సిపాయిలను మెషిన్‌గన్లతో మొహరించాలి.

అమృత్‌సర్‌లో అడుగుపెట్టి ఆందోళన కారులకు సంఘీభావం ప్రకటించాడో లేదో స్వామిని చుట్టేసి పోలీసులు భారీకాపలాతో పట్టుకుపోయారు. తప్పుడు అభియోగాలు మోపి సంవత్సరం జైలుశిక్ష విధించి మియావలి జైలుకు తరలించారు. బందిఖానాలో పరిస్థితులు దుర్భరంగా ఉన్నా పళ్ల బిగువున ఓర్చుకుని రోజూ స్వాధ్యాయం, సంధ్య వ్యాయామం చేసుకుంటూ స్వామి నిర్వికారంగా గడిపాడు. ఏమైందో ఏమో బ్రిటిషు ప్రభుత్వమే ఆయనను గడువుకంటే ముందే విడిచిపెట్టింది.

సన్యసించడానికి ముందు ఆర్యసమాజ్ అగ్రనాయకుడిగా, కాంగ్ డీ గురుకుల్ వ్యవస్థాపకుడిగా విదేశీ పాలకుల చేతిలో మహాత్మా మున్షీరాం నానా అవస్థలు పడ్డాడు. ఆరోజు కోరకమైన కక్ష సాధింపును ఎదుర్కొన్నాడు. కేవలం తన ఇద్దరు కుమారులే విద్యార్థులుగా, తానొక్కడే ఆచార్యునిగా ఆయన మొదలెట్టిన గురుకులం అంతకంతకూ వృద్ధి చెంది మహాసంస్థగా ఎదగడాన్ని తెల్లదొరలు ఓర్వలేక పోయారు.

"స్వామీజీ! మీరు గురుకుల్ పెట్టి ఆంగ్లేయుల ఆగ్రహానికి గురి అయ్యారని మీకు తెలుసా?" అని అమృత్‌సర్‌లో ఓ పెద్ద మనిషి అడిగితే "తెలుసు" అన్నాడు స్వామి. కారణం ఏమిటంటారు ? అంటే ఆయన ఇచ్చి జవాబు ఇది:

'గురుకుల పద్ధతిలో విద్య కనుక వ్యాప్తి చెందితే వాళ్లకు నౌకరీ చెయ్యడానికి భారతీయులు దొరకరు. అదీవాళ్ల భయం. అందుకే అడుగడుగునా గూఢచారులను పెట్టి, తప్పుడు కేసులు మోపి వారిశక్తి కొద్దీ సతాయిస్తున్నారు.'

ఇక ఆయన నాయకత్వంలో ఆర్యసమాజ్ మీద దేశమంతటా నిష్కారణంగా మోపిన రాజద్రోహం, ప్రభుత్వ వ్యతిరేక కుట్ర కేసులకైతే లెక్కలేదు. ప్రభుత్వోద్యోగి ఎవరైనా ఆర్యసమాజ్ ధార్మిక కార్యక్రమాల్లో పాల్గొంటున్నాడని తెలియగానే ఉన్నపళంగా బర్తరఫ్ చేసేవారు. సభ్యత్వం రిజిస్టర్లను చీటికీమాటికీ తనిఖీ చేసి కొత్తగా ఆర్యసమాజంలో చేరినవారి మీద రౌడీషీట్లు తెరిచి రోజూ ఠాణాకు వచ్చి హాజరు వేసుకోవాలని ఆజ్ఞాపించేవారు.

స్వామి దయానంద సరస్వతి కాలంనుంచే ఆంగ్లేయుల వక్రదృష్టి ఆర్యసమాజం మీద ఉన్నా మున్షీరాం గురుకుల్ స్థాపన చేశాక నతాయింపులుమరీ ఎక్కువయ్యాయి. 1900-1912 సంవత్సరాల మధ్య ఆర్యసమాజ్ మీద, గురుకుల్ మీద అనేక రాష్ట్రాల్లో పడిన రాజద్రోహం కేసులు లెక్కలేనన్ని. ఆ సంస్థల ప్రతిష్ఠను దెబ్బతీసి, నీచ ప్రచారంతో ప్రజల మనసులు విరిచి ఇతర మతాలవారిని రెచ్చగొట్టి, తెరపిలేని దాడులతో తెల్లదొరతనం ఎంత భయోత్పాతం రేకెత్తించినా అవి తట్టుకుని నిలబడగలిగాయంటే మహాత్మా మున్షీరాం నిశ్చలంగా నిలబడి పర్యవసానాలను లెక్కచేయక పోరాడినందువల్లే.

దేశ ప్రజలకు విద్య ద్వారా జాగృతి, అభ్యున్నతి మహో మంత్రాన్ని ఇవ్వడమే రాజద్రోహమైతే నేను ఆ నేరాన్ని మళ్లీ మళ్లీ చేస్తూనే ఉంటా- అనేవాడు మున్షీరాం. ఆంగ్లేయులు ఎంతగా దెబ్బతియాలని చూస్తే ఆర్యసమాజం అంతగా బలిష్ఠమవుతుందనీ ఆయన చెప్పేవాడు.

బ్రిటిషు సర్కారు మీమీద, గురుకులం మీద ఎంత దుష్ప్రచారం చేస్తున్నా మీరు బదులు చెప్పరెందుకని ఎవరో అడిగితే స్వామి ఇచ్చిన జవాబు ఇది:

"ఒకసారో, రెండుసార్లో అలా చేసినవాడికి జవాబు చెప్పగలం. కాని భారతీయులకు హితకరమైన ప్రతిదానినీ దూషించడమే పనిగా పెట్టుకున్నవారితో వాదులాడి ప్రయోజనమేమిటి ? ఏనుగు దారిన పోతూంటే కుక్కలు మొరుగుతూనే ఉంటాయి. మొరగనీ"

ఓసారి ఓ బ్రిటిషు అధికారి స్వామీజీని అడిగాడు :

'ఇంత శ్రమపడి ఇంత నిష్ఠతో మీరు ఆర్యసమాజ్ పని చేస్తున్నారు కదా ఇందులో మూడోవంతు ఆంగ్లేయుల వక్షాన చేస్తే దేశంలోని మహోవ్యక్తుల పంక్తిలో మిమ్మల్ని ప్రభుత్వం కూచోబెడుతుంది కదా?'

'నేను ఆత్మను అమ్ముకుని గొప్ప తనాన్ని కొనుక్కోను' అన్నాడు శ్రద్ధానంద.

ఇంక సందర్భంలో ఇంకో తెల్లదొర "మీరు స్వరాజ్యని కావాలంటూ తెగ ఉద్యమాలు సాగిస్తున్నారు కాని మీలో ఏ ఒక్కరికీ పరిపాలన అనుభవం లేదు. మరి ఒకవేళ మేము వెళ్లిపోతే ఇంత విశాల దేశాన్ని మీరు ఎలా ఏలుకోగలరు?" అని ప్రశ్నించాడు.

"మీరు ఈ గురుకులాన్ని చూస్తున్నారు కదా? దీన్ని స్థాపించేముందు నాకూ పూర్వానుభవం లేదు. కాని మీకు ఇక్కడ ఏదైనా అవ్యవస్థ కనపడుతున్నదా?"

ఈ ఎదురుప్రశ్నకు అవతలివాడు నోరెత్తితే ఒట్టు.

సన్యసించి, గురుకుల్ బాధ్యతలనుంచి తప్పుకుని, గాంధీజీ ప్రభావంతో సహోయ నిరాకరణ ఉద్యమంలోకి అడుగిడే ముందు 1920 సెప్టెంబర్ 25న పంజాబ్ ఆర్య ప్రతినిధిసభ ప్రధాన్ లాలా రామకృష్ణకు రాసిన లేఖలో శ్రద్ధానంద స్వామి ఏమన్నాడో చూడండి :

ఈ సమయాన సహకార నిరాకరణను ఉద్ధృతంగా సాగించడంమీనే మాతృభూమి భవిష్యత్తు ఆధారపడి ఉందని నానమ్మకం. ఈ ఉద్యమం విఫలమై, మహాత్మాగాంధికి ప్రజల తోడ్పాటు లభించకపోతే స్వరాజ్యం ఇంకో యాభైఏళ్లు వెనక్కిపోతుంది. జాతి జీవనానికి ఇది జీవన్మరణ సమస్య. అందుకే నేను ఈ పనిలోకి వెంటనే దిగుతున్నాను. నేను రాజకీయ ఆందోళనలో పాలు పంచుకోవటం వల్ల ఆర్యసమాజ్‌కి చిక్కులు వస్తాయని మీరు భావిస్తే నా ప్రస్తుత బాధ్యతలకు ఇదే నా రాజీనామాగా భావించగలరు. మీరు ఎప్పుడు ఆదేశిస్తే అప్పుడు దీనికి సంబంధించి బహిరంగ ప్రకటన చేయగలవాడను'

(మహోన్ దేశభక్త స్వామిశ్రద్ధానంద్, జగత్‌రామ్ ఆర్య, పే.88)

స్వామీజీ హిందీలో 'అర్జున్', ఉర్దూలో 'తేజ్' పేరిట రెండు దినపత్రికలను స్థాపించాడు. 'సద్ధర్మప్రచారక్' పత్రిక అంతకుముందునుంచే ఉంది. 1921 మాప్లా కల్లోలం తరువాత బలవంతపు మతమార్పిడికి గురైన వారిని తిరిగి హిందూమతంలోకి తీసుకురావడానికి శ్రద్ధానందస్వామి తన సహచరులతో కలిసి కేరళ వెళ్లి పొన్నాని కేంద్రంగా తీవ్రకృషి చేశాడు. దక్షిణాత్యులకు హిందీ అర్థం కాదు. వారిక తన వాణిని వినిపించటానికి ఇంగ్లీషు పత్రిక అవసరమని ఆ సందర్భంలో గ్రహించి 'లిబరేటర్' పేర ఆంగ్లవారపత్రిక స్థాపించాడు. ఆంగ్లేయుల దుర్నీతిని, దేశానికి వారి వల్ల వాటిల్లుతున్న హానిని నిశితంగా గర్హించి, జాతీయ భావాలను నిర్భయంగా ప్రచారం చేయటం వల్ల ఆ పత్రికల నిర్వహణలో స్వామి అటు ప్రభుత్వం నుంచీ, ఇటు ఛాందసవాదుల నుంచి చాలా సమస్యలు ఇరుకున్నాడు. ఎన్నో కేసుల్లో ఇరుక్కున్నాడు. అయినా ఆయన నైతిక ధృతి సడలలేదు. భారమంతా భగవంతుడి మీదవేసి తన పని తాను జంకూగొంకూ లేకుండా చేసుకుపోయాడు.

ఆయన గుండెనిబ్బరానికి, అచంచల విశ్వాసానికి ఒక ఉదాహరణ :

1901 ఫిబ్రవరిలో 'సద్ధర్మప్రచారక్'లో ఒక వ్యాసం వచ్చింది. పైకి గొప్పగా పౌరాణిక ప్రవచనాలు చేస్తూ, నైతికంగా భ్రష్టుడైన పండిట్ గోపీనాథ్ అనే ఆసామి నిజస్వరూపాన్ని అందులో సందర్భవశాత్తు ప్రస్తావించారు.

దీనిమీద పండిట్జీ భగ్గుమని మున్షీరాం మీద పరువునష్టం దావావేశాడు. నిజానికి అది మున్షీరాం రాసిన వ్యాసంకాదు. అతడికింద పనిచేసే ఉద్యోగి అతడికి చెప్పకుండా చేసినపని అది. అయినా అచ్చయింది తన పత్రికలో కాబట్టి దాని భారమంతా మున్షీరాం తనపైన వేసుకున్నాడు. తన తరపున న్యాయవాదిగా భక్తరామ్ అనే బారిస్టరును పెట్టుకున్నాడు. వ్యాజ్యం కాగితాలన్నీ చూసి ప్లీడరు అడిగాడు:

"గోపీనాథ్‌కి మాంసభక్షణ, తాగుడు, వేశ్యలతో తిరుగుడులాంటి దురభ్యాసాలు ఉన్నాయని మీరు ఆ వ్యాసంలో ఆరోపించారు కదా ? దానికి సంబంధించి మీదగ్గర రుజువులు ఉన్నాయా?"

"లేవు" అన్నాడు మున్షీరాం.

"అయితే కష్టం. ఆధారాలు లేకపోతే వ్యాజ్యం గెలవలేము. అందునా ఆర్య సమాజ్ వారిమీద ఆంగ్లేయుల ఆగ్రహం తీవ్రంగా ఉన్న కాలమిది. మరిఎలా?"

మున్షీరాం కంగారుపడలేదు. "మీ పని మీరు మొదలెట్టండి. రుజువులు అవే దొరుకుతాయి" అన్నాడు నిశ్చింతగా.

'కాని ఎలా? ఇప్పటికిప్పుడు సాక్ష్యాధారాలు ఎక్కడినుంచి ఊడిపడతాయి?'' అన్నాడు ప్లీడరు.

న్యాయవాది తెల్లబోయాడు. డిఫెన్సు వాదం తయారుచేశాడు. కాని రుజువులు జాడలేవు. పెట్టిన కేసు బలంగా ఉంది. కేసు విచారణ తేదీ దగ్గరపడింది. బారిస్టరుకు బ్లడ్‌ప్రెషరు పెరిగింది. మున్షీరాంకు చీకూ చింతాలేదు.

కోర్టు విచారణకు సరిగ్గా 16 గంటల ముందు ఒక చిత్రం జరిగింది. ముక్కూమొగం ఎరగనివాడు ఒకడు వచ్చి మహాత్మా మున్షీరాం చేతిలో ఒక కాగితాల పాకెటు పెట్టి వెళ్లిపోయాడు. తెరిచిచూస్తే పండితుడి నైతికపతనం అభియోగాలను రుజువు చేయడానికి కావలసినన్ని ప్రత్యక్ష సాక్ష్యాలు ఉన్నాయి. కేసు ఎగిరిపోయింది.

(మహాన్ దేశభక్త్ స్వామీ శ్రద్ధానంద్, జగత్‌రామ్ ఆర్య, పే. 92-93)

పరాయి దైశానికి, అందునా భారతదేశాన్ని, భారతీయతను శతవిధాల అణగదొక్కుతున్న గ్రేట్ బ్రిటన్‌కు చెందిన ప్రతిపక్ష నాయకుడు, కాబోయే ప్రధానమంత్రి అయిన రామ్‌సే మెకడొనాల్డ్ అంతటి వాడివే-

కాంగ్‌డీ గురుకులంలో అడుగపెట్టి మహాత్మా ముణ్షీరాంను చూడగానే గలీలీ తీరాన నడయాడిన తన మతప్రవక్త ఏసుక్రీస్తు గుర్తుకొచ్చాడు.

శ్రాద్ధనందస్వామి మహత్తుకు ఇంతకంటే దృష్టాంతం ఏమికావాలి ?

श्रावणी वेद प्रचार कार्यक्रम

आर्य समाज चौदरगुडा	६,७,८	अगस्त	डॉ. वसुधा शास्त्री, पं. अरविंद शास्त्री
आर्य समाज बोधन	१२ से १८	अगस्त	डॉ. वसुधा शास्त्री, पं. अरविंद शास्त्री, सत्यनारायणजी-तेनाली
आर्य समाज जडचर्ला	२६,२७,२८	अगस्त	पं. ओरुगंटी लक्ष्मीदेवी, एम.भीमलिंगम्, पं. के.वी. रेड्डीजी
आर्य समाज महबुबाबाद	३,४,५	अगस्त	पं. के.वी. रेड्डीजी
आर्य समाज अमिस्तापुर	६,७	अगस्त	पं. घनश्यामदेवजी
आर्य समाज मकथल	१४,१५	अगस्त	पं. रामचरण जी
आर्य समाज ऊटकुर	१४,१५	अगस्त	पं. प्रियदत्त शास्त्रीजी
आर्य समाज (रहिमपुरा)	१६,१७,१८	अगस्त	पं. प्रियदत्त शास्त्रीजी
आर्य समाज नारायणपेट	१९,२०,२१	अगस्त	पं. प्रियदत्त शास्त्रीजी
आर्य समाज धूलपेट	२२,२३,२४,२५	अगस्त	पं. प्रियदत्त शास्त्रीजी
आर्य समाज मदनूर	२६,२७,२८	अगस्त	पं. प्रियदत्त शास्त्रीजी
आर्य समाज जहीराबाद	२९,३०,३१	अगस्त	पं. प्रियदत्तजी
आर्य समाज जहीराबाद	२७ से ३१	अगस्त	पं. आचार्य ज्योतिश्री एवं २९ से पं. प्रियदत्तजी
आर्य समाज बिचकुन्दा	१९ से २६	अगस्त	आचार्या ज्योतिश्री माता निर्मला योग भारती,
आर्य समाज वरंगल	१४ से १८	अगस्त	पं. चलवादी सोमय्याजी
आर्य समाज नलगोंडा	२७,२८	अगस्त	पं. चलवादी सोमय्याजी, पं. हरिकिशन वेदालंकारजी

श्रद्धांजलि

आर्य समाज श्रद्धाबाद (सैदाबाद) के पूर्व प्रधान तथा आर्य प्रतिनिधि सभा के अंतरंग सदस्य श्री एम. रंगय्याजी का दिनांक १३-०७-२०१६ बुधवार के दिन सायं ६.०० बजे आकस्मिक निधन हुआ । उनकी आयु ८९ वर्ष थी । श्री रंगय्याजी निर्भिक एवं कर्मठ कार्यकर्ता थे । यज्ञ हवन में उनकी बड़ी आस्था थी । वे अंतिम समय तक पौरोहित्य का कार्य करते रहे । विशेषतः बच्चों को प्यार से वैदिक संस्कार वह वेद मंत्रों की शिक्षा देने में रुचि रखते थे । आपने आर्य समाज द्वारा चलाये गये तेलंगाना आँदोलन में बड़े ही उत्साह से भाग लिया। उनके आर्य समाज के प्रति किए गए सेवाओंको सदैव याद किया जाएगा । वे बचपन से ही पंडित नरेन्द्रजी के सानिध्य में आर्य समाज के प्रति समर्पित भाव से कार्य करते रहे ।

आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र.-तेलंगाना परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे और शोकाकुल परिवार को कष्ट सहन करने की शक्ति दे ।

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन के लिए संकल्प बद्ध

आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र.-तेलंगाना द्वारा प्रकाशित द्विभाषा पाक्षिक पत्रिका

आर्य जीवन

के सदस्य बनिए

वार्षिक शुल्क रू. 250-00 पाँच वर्ष का शुल्क रू. 1100-00

दस वर्ष का शुल्क रू. 2000-00 आजीवन शुल्क रु. 5000-00

ऑन लैन या चेक से आर्य जीवन के नाम सदस्यता शुल्क भेज सकते है या मनि आर्डर आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र.-तेलंगाना, महर्षि दयानन्द मार्ग, सुल्तान बाजार, हैदराबाद-500095 के पते पर शुल्क भेजकर पत्रिका के सदस्य बने और बनाएं । आर्य जीवन महेश को-ऑपरेटिव बैंक, काचिगुड़ा ब्रांच, हैदराबाद ।

A/c. No. 01000110043341, IFSC Code : APMC0000010

सभा फोन : 040 - 24753827, 66758707, मोबाईल : 9849560691

ओ३म्

निमंत्रण

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. तेलंगाना राज्य के तत्वावधान में
आर्य समाज मादन्नापेट के सौजन्य से
नगर द्वय की आर्य समाजों का

सामूहिक श्रावणी उपाकर्म पर्व
एवं
हैदराबाद आर्य सत्याग्रह बलिदान दिवस

दिनांक १८ अगस्त २०१६ गुरुवार को प्रातः ८.३० बजे से

आर्यसमाज मादन्नापेट की ओर से सैदाबाद मेन रोड़ स्टेट बैंक ऑफ इन्डिया बिल्डिंग के पहले तल में (on First Floor of SBI Building, Main Road, Saidabad) आयोजित है

कार्यक्रम

नूतन यज्ञोपवीत धारण, श्रावणी उपाकर्म - पर्व - यज्ञ

ब्रह्मा	:	डॉ.विद्यानन्दजी शास्त्री
वेद मंत्रपाठ	:	आचार्या सविताजी के गुरुकुल के विद्यार्थी
भजन	:	आचार्या सविताजी
वेदोपदेश	:	माता निर्मला योग भारती जी
अध्यक्षता	:	श्री विट्ठलराव जी आर्य महा मंत्री सार्वदेशिक सभा दिल्ली, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.-तेलंगाना
मुख्यअतिथि	:	मान्य श्री बण्डारू दत्तात्रेय जी केन्द्रीय श्रम मंत्री भारत सरकार
विशिष्टअतिथि	:	मान्य श्री टी. वी. नारायणा जी उपप्रधान सभा तेलंगाना राज्य
संयोजक	:	श्री हरिकिशनजी वेदालंकार मंत्री सभा

आर्य सत्याग्रह के बलिदानियों के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित की जाएगी
सभी आर्य बन्धु - सपरिवार अधिकाधिक संख्या में भाग लेकर कार्यक्रम को सफ़ल बनाएं।

भवदीय

हरिकिशन वेदालंकार मंत्री	दडिगे गोपाल प्रधान	भोब्वी प्रताप रेड्डी मंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र. - तेलंगाणा — आर्य समाज मादन्नापेट, हैदराबाद

आर्य समाज यज्ञपुरा (याकुतपुरा), श्रद्धाबाद (सैदाबाद), कुर्मागुड़ा, वैदिक बजार (ईदीबजार), ओम् नगर (छावनी) तथा ऋषि सेना के सहयोग से

ఓం

ఆహ్వానము

ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర. తెలంగాణ హైదరాబాద్ ఆధ్వర్యంలో
ఆర్యసమాజం మాదన్నపేట్, హైదరాబాద్ వారి సౌజన్యంతో
జంటనగరాల ఆర్య సమాజముల

సామూహిక శ్రావణి ఉపాకర్మ పర్వము మరియు
ఆర్య సత్యాగ్రహ బలిదాన దినము

తేది : 18 ఆగష్టు 2016 గురువారము, ఉ॥ గం॥ 8-30 ల నుండి ఆర్యసమాజము మాదన్నపేట్ వారి సౌజన్యముతో సైదాబాద్ మేయిన్ రోడ్ మీదగల యస్.బి.ఐ. బిల్డింగ్, మొదటి అంతస్తుపైన నిర్వహించబడును. కావున ఆర్య బంధువులందరిని కుటుంబ సమేతముగా సాదరముగా ఆహ్వానిస్తున్నాము. అధిక సంఖ్యలో పాల్గొని కార్య క్రమమును జయప్రదము చేయగలరు.

కార్యక్రమము

యజ్ఞ బ్రహ్మ	:	డా॥ విద్యానంద్ శాస్త్రి గారు
వేద పఠనము	:	ఆచార్యా సవిత గారి గురుకుల విద్యార్థులు
భజనలు	:	ఆచార్యా సవిత గారు
వేదోపదేశము	:	మాత నిర్మల యోగ భారతి గారు
అధ్యక్షులు	:	శ్రీ విఠల్‌రావు ఆర్య (ప్రధాన కార్యదర్శి సార్వదేశిక ఆర్యప్రతినిధి సభ, అధ్యక్షులు ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర. తెలంగాణ)
ముఖ్య అతిథి	:	మాన్యులు శ్రీ బండారు దత్తాత్రేయ గారు కేంద్ర మంత్రి భారత ప్రభుత్వము
విశిష్ట అతిథి	:	డా॥ టి.వి. నారాయణ గారు ఉపప్రధాన్, ఆర్య ప్రతినిధి సభ, ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ
నిర్వాహకులు	:	శ్రీ హరికిషన్ వేదాలంకార్ (మంత్రి ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర. తెలంగాణ)

హైదారాబాదు ఆర్య సత్యాగ్రహంలో అమరులైన ఆర్యవీరులకు శ్రద్ధాంజలి ఘటింపబడును.
కావున అధిక సంఖ్యలో పాల్గొని కార్య క్రమమును జయప్రదము చేయగలరు.

భవదీయులు

హరికిషన్ వేదాలంకార్ మంత్రి	దడిగె గోపాల్ ప్రధాన్	బి. ప్రతాప్ రెడ్డి మంత్రి

ఆర్య ప్రతినిధి సభ, ఆంధ్రప్రదేశ్ - తెలంగాణ — ఆర్య సమాజము, మాదన్నపేట్, హైదరాబాద్

ఆర్య సమాజము యజ్ఞపుర (యాకుత్‌పుర), శ్రద్ధాబాద్ (సైదాబాద్), కుర్మాగూడ, వైదిక బజార (ఈదీబజార్), ఓం నగర్ (ఛావని) మరియు ఋషి సేన వారి సహకారముతో

మొక్కలను నాటి పెంచి పోషించే సంస్కారమును పిల్లలలో పెంచండి

గృహమే కదా స్వర్గసీమ అంటారు. మరి స్వర్గం అంటే ? ఒక నమ్మకం. అనంతంగా సాగే ఒక ఆనందమయ ప్రదేశానికది చిహ్నం. అందుకే.. ఇల్లు స్వర్గసీమ.. ఇంటి పేరు ప్రేమ.. అని ఓ సినీ కవి తన పాటలో విశిష్టంగా వివరించాడు. ఇంటిని చూసి ఇల్లాలిని చూడాలని కూడా ఊరికే అనలేదు పెద్దలు. ఇంటి అలంకరణ తోనే ఇల్లాలి అభిరుచులు, గుణగణాలు తెలుస్తాయి. కాబట్టి అలా అన్నారు. అనాది నుంచే అంతటి ప్రాధాన్యత సంతరించుకున్న గృహాలంకరణ ఇప్పుడు కొత్తపుంతలు తొక్కుతోంది. ఈ ఫ్యాషన్ ప్రపంచంలో ఇంటిని స్వర్గసీమగా మార్చుకునే సమయం ఎంతమందికి ఉంటుంది ? కాలం మారుతున్నది. దానికి అనుగుణంగా అభిరుచులూ మారుతున్నాయి. ఆ అభిరుచులను ఒడిసిపట్టుకుని.. ఫ్యాషన్‌ను కలగలిపి ఇంటిని ఓ హరితవనంలా తీర్చిదిద్దుకోవచ్చు అనే ఐడియా వచ్చింది వీరికి. శిల్పా, రీత్ మినియేచర్ హెవెన్‌తో మీ ఇంటికి సరికొత్త హరిత హంగులు అద్దతామంటున్నరు.

ప్రతి బాలిక - బాలుడు, విద్యార్థి - విద్యార్థినులు ఒక్కొక్క మొక్కను నాటే సంకల్పము తీసుకోవాలి. దానిని పెంచే బాధ్యతను కూడ తీసుకోవాలి. హరితవనం జీవితానికి మూలం.

ప్రతి ఇంట్లోనూ హరితవనం ఉండాలి

ఇంటిని ఆహ్లాదకర వాతావరణంలో నిర్మించడం అంత సులవైన పనేమీ కాదు. నిజం చెప్పాలంటే ఉరుకుల పరుగుల జీవితాన్ని గడపే ఆధునిక మానవుడు.. తలదాచుకునేందుకు ఏదో ఒక ఇళ్ల ఉంటే సరిపోతుంది కదా అనుకుంటున్నాడు. కానీ రోజంతా ఆఫీసుల్లో పని చేసి అలసిపబియి వచ్చిన వారికి ఇంటికి చేరగానే సేదతీరేందుకు ఆహ్లాదకర వాతావరణం ఉండడం ఇంటికి, ఒంటికి ఎంతో అవసరం. ఇదే విషయాన్ని కొందరు శ్రీమంతులు గుర్తించి ఇంటిని స్వర్గసీమ చేసుకుంటుంటారు. సామాన్య, మధ్య తరగతివారిలో కూడా కొందరు ఇంటి చుట్టూ అందమైన మొక్కలను, పచ్చిక బైళ్లను పెంచుకుంటున్నారు. నగరాలు, పట్టణాల్లో స్థలం లేని భవంతుల్లో నివసిస్తున్నవారు మట్ట కుండీల్లో పూల మొక్కలు పెంచుకుంటున్నారు. వీరి అభిరుచి మేరకు పుట్టినవే కిచెన్ గార్డెనింగ్, హోమ్ గార్డెనింగ్. అలాంటిదే ఈ మినియేచర్ హెవెన్. మరో పేరు మినియేచర్ గార్డెనింగ్ అని కూడా చెప్పొచ్చు.

హాబీ టు బిజినెస్ శిల్పా చౌహాన్, రీత్ వత్సాని తోడికోడళ్లు. శిల్పది సిమ్లా, రీత్ వత్సానిది నాగ్‌పూర్. శిల్ప భర్త ఉద్యోగ నిమిత్తం కుటుంబం మొత్తం కొన్నాళ్లు యూకేలో ఉండాల్సి వచ్చింది. అప్పుడు శిల్ప ఇంట్లో ఖాళీగా కూర్చుని ఏదైనా చేయాలని ఆలోచించేది. అక్కడ పక్కింటి ఆవిడ మినిగార్డెనింగ్ చేసేది. అప్పుడప్పుడు సరదాగా వెళ్లి చూసి ఎలా చేయాలో నేర్చుకున్నది. ఇంట్లో ఉన్న పాత వస్తువులకు కొత్త అందాలను జోడించడం మొదలుపెట్టింది. అదే ఆ తర్వాత ఆమె ప్రొఫెషన్ ఇప్పుడు కొందరికి ఉపాధి కల్పించేంత వరకు ఎదిగింది. ఇలాంటి ఐడియాతే పనిచేస్తున్న వాళ్లు హైదరాబాద్‌లో ఎవరూ లేరు. పెళ్లి పేరంటం, బర్త్‌డే, ఈవెంట్ ఏదైనా కావొచ్చు. వేడుక ఇంకేదైనా కావొచ్చు. మీ ఫంక్షన్‌లో కూడా వర్క్ షాప్ పెడతారు. ఒకరికి ఎనిమిది వందల రూపాయల చొప్పున చెల్లిస్తే రెండు గంటల పాటు మినియేచర్ గార్డెనింగ్ నేర్పిస్తారు. ఆ తర్వాత మీ మెదడుకు పదును పెట్టి మీ ఇంట్లో ఉన్న పాత వస్తువులతో కూడా సృజనాత్మకతను జోడించి వాటితో అద్భుతాలు చెయొచ్చని అంటున్నారు శిల్పా చౌహాన్, రీత్ వత్సాని.

వర్క్‌షాప్‌లు.. శిల్ప, రీత్ మినియేచర్ హెవెన్ పేరుతో స్టార్టప్ ప్రారంభించి మూడవా నెచిలలవుతున్నది. మొదటి వర్క్ షాప్ హైదరాబాద్‌లోని లామాకాన్‌లో ఏర్పాటు చేశారు. 40 మంది చిన్నారుల కోసం నిర్వహించిన ఈ వర్క్‌షాప్‌కు అనూహ్య స్పందన లభించింది. అప్పటి నుంచి పర్యావరణ ప్రేమికులు తమ పిల్లలకు నేర్పించడానికి చాలా మంది ముందుకొస్తున్నారు. ఆ తర్వాత బంజారాహిల్స్‌లోని సప్తపర్ణిలో కూడా వర్క్‌షాప్ పెట్టారు. ఆ నోటా ఈ నోటా వీళ్ల ఐడియాకు మంచి పేరు వచ్చింది. కార్పొరేట్ కంపెనీల్లో కూడా వర్క్‌షాప్‌లు పెట్టాలని ఆహ్వానాలు అందుతున్నాయి. ఒక సినిమాకు మినియేచర్ గార్డెనింగ్ సెట్ వేసే అవకాశాన్ని కూడా అందుకున్నిరు. ఆ సినిమాకు సంబంధించి చర్చలు జరుతున్నాయి. కొన్ని వెబ్‌సైట్లతో కలిసి వారంతాల్లో మిరిన్ని వర్క్‌షాప్‌లు నిర్వహిసత్తా ఎక్కువ మందికి రీచ్ అవ్వాలనుకుంటున్నారు. ఏవైనా స్వచ్ఛంద సంస్థలు ముందుకొస్తే వాళ్లతో కలిసి పనిచేయడానికి సిద్ధంగా ఉన్నారు. వీకెండ్స్‌లో మురికివాడల్లోకి వెళ్లి అక్కడ అంతా శుభ్రం చేసి గార్డెనింగ్‌కు సంబంధించిన అంశాలను వాళ్లకు వివరిస్తామంటున్నారు.

ఆన్‌లైన్ సేవలు.. మినియేచర్ హెవెన్ ఇప్పటి వరకు ఫేస్‌బుక్ పేజీ ద్వారా ఆర్డర్లు పొందుతున్నది. ఇప్పటికైతే మూడు పూల కుండీలు.. ఆరు పూల మొక్కల్లా బాగానే నడుస్తున్నది. దీన్ని మరింత విస్తరించే దిశగా ఆన్‌లైన్‌లో అమ్మకాలను ప్రారంభించాలనుకుంటున్నారు. వెబ్‌సైట్ ప్రారంభించి దాని ద్వాలిరా ఆర్డర్లు తీసుకోవడం, హోమ్ డెలీవరి వెలునుబాటు కూడా కల్పించాలనుకుంటున్నారు. ఎవరికైనా కావాల్సిన థీమ్ చెప్తే దాన్ని బట్టి యాక్సెసరీస్‌ను వాడి గార్డెనింగ్‌కు సంబంధించిన వస్తువులను తయారు చేస్తున్నారు. వెరైటీ మొక్కలతో, డిఫరెంట్ పూల కుండీలకు ప్రాణం పోస్తున్నారు. కిచెన్, గార్డెనింగ్, బాల్కనీ, హాల్, బెడ్ రూం, కిచెన్ రూంకు సంబంధించిన పూల కుండీలతో పాటు ఆఫీస్‌కు కావాల్సిన గార్డెనింగ్ కూడా చేస్తారు. చక్కని పూల మొక్కలతో మనసుకు ప్రశాంతత లభించడమే కాకుండా ఆఫీస్‌లో ఆహ్లాద వాతావరణం కూడా దొరకుతుందని చెప్తున్నారు. -అజహార్ షేక్

Date of Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month
आर्य जीवन 18-07-2016 Registered-Reg. No. HD/783/2015-17 RNI.No.52990/93

ఆర్య జీవన్

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక
Editor: **Vithal Rao Arya**, M.Sc. LL.B., Sahityaratna
Arya Prathinidhi Sabha AP-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-95.
Phone No. 040-24753827, 66758707, Fax: 040-24557946
Annual subscription Rs. 100/- సంపాదకులు - విఠల్‌రావు ఆర్య, ప్రధాన్ సభ

To,

కడుపు నింపే కూడు నేనే
నీడనిచ్చే గూడు నేనే
నువ్వు కట్టే బట్ట నేనే
ఆయువు నేనే
ప్రాణవాయువు నేనే
కాడె నేనే, పాడె నేనే
నిన్ను కాల్చే కట్టె నేనే
నేను తరువుని
నీ బ్రతుకుతెరువుని
కన్ను విప్పి కాంచరా
ఒక్క మొక్కైనా పెంచరా

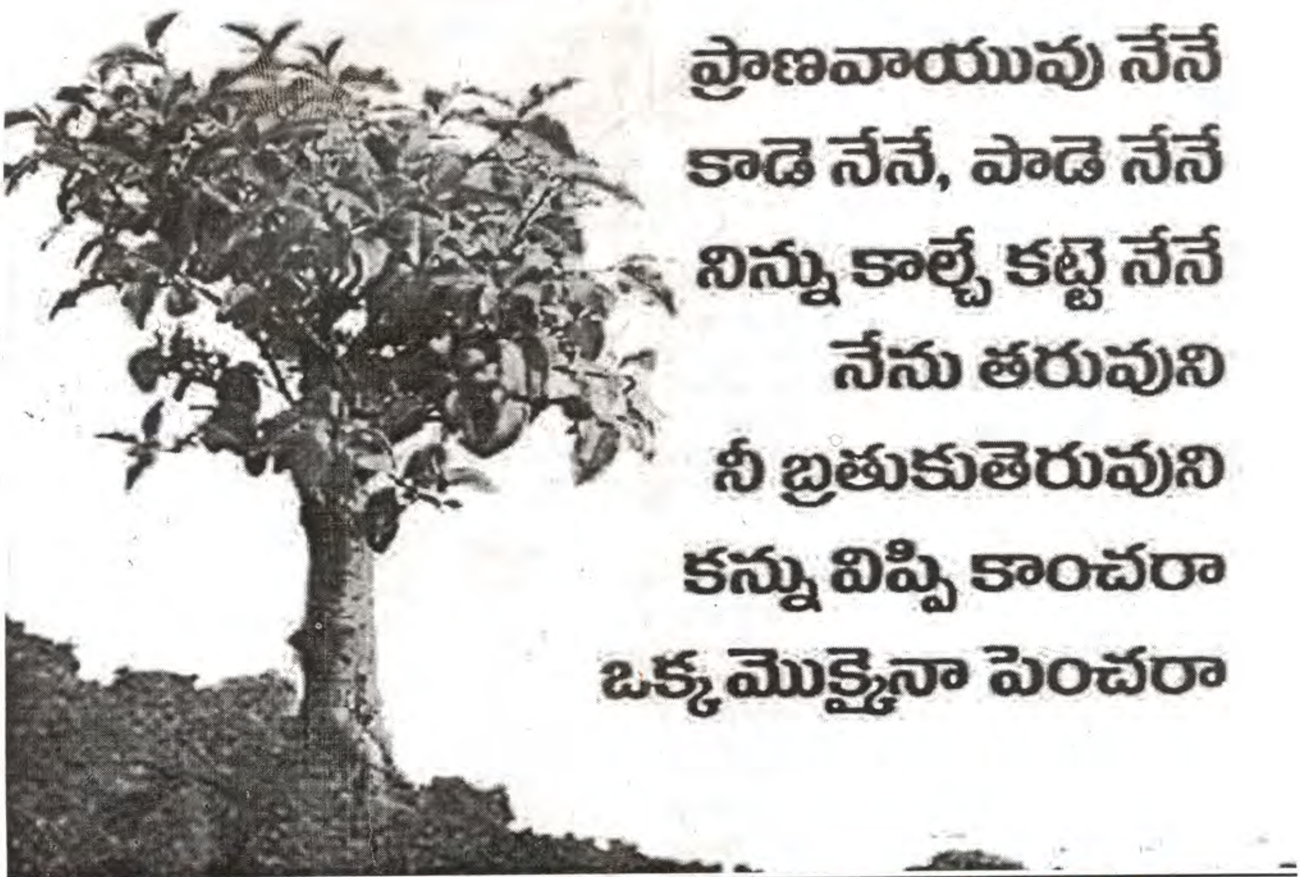

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR
Editor Vithal Rao Arya • acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691

సంపాదకులు : శ్రీ విఠల్‌రావు ఆర్య, ప్రధాన్, ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన్‌బజార్, హైదరాబాదు-95. Ph: 040-24753827, Email : acharyavithal@gmail.com
संपादक: श्री विट्ठलराव आर्य प्रधान सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रेस चिक्कडपल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया ।